Bible. O. T. Genesis. Hindi
उत्पत्ति
और
यात्रा की पुस्तक।
Utpatti aura yatra ki pustaka

उत्पत्ति की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा।
२ और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था॥

३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो
४ गया। और ईश्वर ने उंजियाले को देखा कि अच्छा है और ईश्वर
५ ने उंजियाले को अंधियारे से बिभाग किया। और ईश्वर ने उंजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ और बिहान पहिला दिन हुआ॥

६ और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे
७ और पानियों को पानियों से बिभाग करे। तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के
८ ऊपर के पानियों से बिभाग किया और ऐसा हो गया। और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और बिहान दूसरा दिन हुआ॥

९ और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही स्थान
१० में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे और ऐसा हो गया। और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे किये गये पानियों को
११ समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने

कहा कि भूमि घास को और साग पात को जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फलें जिन के बीज भूमि पर उन में होवें उगावे और ऐसा हो गया।
१२ और भूमि ने घास और साग पात को अपनी अपनी भांति के समान जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जिस का बीज उस में होवे उस की भांति के समान उगाया और ईश्वर ने
१३ देखा कि अच्छा है। और सांझ और बिहान तीसरा दिन हुआ॥
१४ और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में बिभाग करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिन्हों और ऋतुन और
१५ दिनों और बर्षों के कारण होवें। और वे पृथिवी को उंजियाला करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति के लिये होवें और ऐसा हो
१६ गया। और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाई एक बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता के लिये और उस्से छोटी ज्योति रात पर प्रभुता
१७ के लिये और तारों को भी। और ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश
१८ में रक्खा कि पृथिवी पर उंजियाला करें। और दिन पर और रात पर प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करें
१९ और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और सांझ और बिहान चौथा दिन हुआ॥
२० और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी रेंगवैयों की बहुताई से भर जाय और पक्षी पृथिवी के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उड़ें
२१ सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों और हर एक रेंगवैये जीवधारी को जिन से पानी भरा है उन की भांति भांति के समान और हर एक पक्षी को उस की भांति के समान बहुताई से उत्पन्न
२२ किया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने उन को आशीष देके कहा कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्रों के
२३ पानियों में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। और सांझ और बिहान पांचवां दिन हुआ॥

२४ और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर एक जीवधारी को उस की भांति भांति के समान अर्थात् ढोर और रेंगवैये जंतु को और बनैले पशु को उस की भांति के समान उपजावे और ऐसा हो २५ गया। और ईश्वर ने बनैले पशु को उस की भांति के समान और ढोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥

२६ तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के २७ हर एक रेंगवैये जंतु पर प्रधान होवें। तब ईश्वर ने आदम को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में २८ उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर और नारी बनाया। और ईश्वर ने उन्हें आशीष दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ और उसे बश में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो ॥

२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी साग पात को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल है जो बीज उपजावता है तुम्हें दिया यह तुम्हारे खाने के ३० लिये होगा। और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पक्षी को और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा हुआ। ३१ फिर परमेश्वर ने हर एक बस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी है और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई ।
२ और ईश्वर ने अपने कार्य्य को जो वुह करता था सातवें दिन
समाप्त किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य्य से
३ जो उस ने किया था बिश्राम किया । और ईश्वर ने सातवें दिन
को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी
में उस ने अपने सारे कार्य्य से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और
बनाया बिश्राम किया ॥

४ यह स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुए
५ जिस दिन परमेश्वर ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया । और
खेत का कोई साग पात अब लों पृथिवी पर न था और खेत
की कोई हरियाली अब लों न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर
पृथिवी पर मेंह न बर्साया था और आदम न था कि भूमि
६ की खेती करे । और पृथिवी से कुहासा उठता था और समस्त
भूमि को सींचता था ॥

७ तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से आदम को बनाया
और उस के नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और आदम जीवत
प्राण हुआ ॥

८ और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक बा
लगाई और उस आदम को जिसे उस ने बनाया था उस में रक्खा
९ और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और
खाने में अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का
१० और भले बुरे के ज्ञान का पेड़ भूमि से उगाया । और उस बा
को सींचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहां
११ बिभाग होके चार मोहाने हुए । पहिली का नाम फ़ैसून
१२ हवीलः की सारी भूमि को घेरती है जहां सोना होता है ।

उस भूमि का सोना चोखा है वहां मोती और बिल्लौर होता है।
१३ और दूसरी नदी का नाम जैहून है जो कूश की सारी भूमि को
१४ घेरती है। और तीसरी नदी का नाम दिजलः है जो असूर की पूरब ओर जाती है और चौथी नदी फुरात है॥

१५ और परमेश्वर ईश्वर ने उस आदम को लेके अदन की बारी में
१६ रक्खा जिसतें उसे सुधारे और उस की रखवाली करे। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को आज्ञा देके कहा कि तू इस बारी के हर एक
१७ पेड़ का फल खाया कर। परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उस्से खायगा तू निश्चय मरेगा॥

१८ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि आदम को अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये एक उपकारिणी उस के समान
१९ बनाऊंगा। और परमेश्वर ईश्वर भूमि से हर एक बनैले पशु और आकाश के सारे पक्षी बनाकर उन को आदम के पास लाया कि देखे कि उन के क्या क्या नाम रखता है और जो कुछ कि आदम
२० ने हर एक जीते जंतु को कहा वही उस का नाम हुआ। और आदम ने हर एक ढोर और आकाश के पक्षी और हर एक बनैले पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उस के समान कोई उपकारिणी न मिली॥

२१ और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को बड़ी नींद में डाला और वुह सो गया तब उस ने उस की पसुलियों में से एक निकाली
२२ और उस की संती मांस भर दिया। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम की उस पसुली से जो उस ने लिई थी एक नारी बनाई
२३ और उसे आदम पास लाया। तब आदम बोला यह तो मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है वुह नारी कहलावेगी
२४ क्योंकि वुह नर से निकाली गई। इस लिये मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक

२५ मांस होंगे। और आदम और उस की पत्नी दोनों के दोनों नग्न थे और लज्जित न थे॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया था धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या निश्चय ईश्वर ने कहा है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना।
२ और स्त्री ने सर्प्प से कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का
३ फल खाते हैं। परन्तु उस पेड़ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा है कि तुम उस्से न खाना और न छूना न
४ हो कि मर जाओ। तब सर्प्प ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न
५ मरोगे। क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उस्से खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे की पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे॥

६ और जब स्त्री ने देखा कि वुह पेड़ खाने में सुस्वाद और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के योग्य है तो उस के फल में से लिया और खाया और अपने पति को भी दिया और उस ने
७ खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान गये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिलाके सीआ और अपने लिये ओढ़ना बनाया॥

८ और दिन के ठंढे में उन्हों ने परमेश्वर ईश्वर का शब्द जो बारी में चलता था सुना तब आदम और उस की पत्नी ने अपने
९ को परमेश्वर ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में छिपाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने आदम को पुकारा और कहा कि तू कहां है।
१० और वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और डरा
११ क्योंकि मैं नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया। और उस ने कहा कि किस ने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू

१२ ने उस पेड़ से खाया जो मैं ने तुझे खाने से बरजा था। और आदम ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी मुझे
१३ उस पेड़ से दिया और मैं ने खाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री से कहा कि यह तू ने क्या किया है और स्त्री बोली कि सर्प्प ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया॥

१४ तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक स्रापित होगा तू अपने पेट के बल चलेगा और अपने जीवन
१५ भर धूल खाया करेगा। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश और उस के बंश में बैर डालूंगा वुह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उस की एड़ी को काटेगा॥

१६ और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भधारण को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता करेगा॥

१७ और उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन
१८ भर तू उस्से पीड़ा के साथ खायगा। और वुह कांटे और ऊंटकटारे
१९ तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का साग पात खायगा। अपने मुंह के पसीने से तू रोटी खायगा जब लों तू भूमि में फिर न मिल जाय क्योंकि तू उस्से निकाला गया इस लिये कि तू धूल है और धूल में फिर जायगा॥

२० और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस कारण कि
२१ वुह समस्त जीवतों की माता थी। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और उस की पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये॥

२२ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो आदम भले बुरे के

जान्ने में हम में से एक की नाईं हुआ और अब ऐसा न होवे कि वुह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़ में से भी लेकर २३ खावे और अमर हो जाय। इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस को अदन की बारी से बाहर किया जिसतें वुह भूमि की किसनई २४ करे जिस्से वुह लिया गया था। सो उस ने आदम को निकाल दिया और अदन की बारी की पूरब ओर करोबीम ठहराये और चमकते हुए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसतें जीवन के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और उस्से क़ाइन उत्पन्न हुआ और बोली कि मैं २ ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया। और फिर वुह उस के भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा हुआ परन्तु क़ाइन किसनई करता था॥

३ और कितने दिनों के पीछे यों हुआ कि क़ाइन भूमि के फलों ४ में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया। और हाबील भी अपनी झुंड में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील ५ का और उस की भेंट का आदर किया। परन्तु क़ाइन का और उस की भेंट का आदर न किया इस लिये क़ाइन अति कोपित ६ हुआ और अपना मुंह फुलाया। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कह ७ तू क्यों क्रुद्ध है और तेरा मुंह क्यों फूल गया। यदि तू भला कर तो क्या तू ग्राह्य न होगा और यदि तू भला न करे तो पा द्वार पर दबकता है और उस की इच्छा तेरी ओर है पर तू उ पर प्रभुता कर॥

८ तब क़ाइन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और ये हुआ कि जब वे खेत में थे तब क़ाइन अपने भाई हाबील प

९ झपटा और उसे घात किया। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा
तेरा भाई हाबील कहां है और वुह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं
१० अपने भाई का रखवाल हूं। तब उस ने कहा तू ने क्या किया
११ तेरे भाई के लोहू का शब्द भूमि से मुझे पुकारता है। और
अब तू पृथिवी से स्रापित है जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे
१२ हाथ से लेने को अपना मुंह खोला है। जब तू किसनई करेगा
तो वुह तेरे बश में न होगी तू पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू
१३ रहेगा। तब क़ाइन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे
१४ सहाव से अधिक है। देख तू ने आज देश में से मुझे खदेड़
दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होऊंगा और मैं पृथिवी पर
भगोड़ा और बहेतू होऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे
१५ पावेगा मार डालेगा। तब परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो
कोई क़ाइन को मार डालेगा तो उस्से सात गुन पलटा लिया
जायगा और परमेश्वर ने क़ाइन पर एक चिन्ह रक्खा न हो
१६ कि कोई उसे पाके मार डाले। तब क़ाइन परमेश्वर के आगे
से निकल गया और अ़दन की पूरब ओर नूद की भूमि में जा
रहा॥

१७ और क़ाइन ने अपनी पत्नी को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी
हुई और उस्से हनूक उत्पन्न हुआ तब उस ने एक नगर बनाया
१८ और अपने बेटे हनूक का नाम उस पर रक्खा। और हनूक
से ईराद उत्पन्न हुआ और ईराद से महूयाएल और महूयाएल
से मतूसाएल और मतूसाएल से लमक उत्पन्न हुआ॥

१९ और लमक ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम अ़दः और
२० दूसरी का नाम ज़िल्लः था। और अ़दः से याबल उत्पन्न हुआ
जो तंबुओं के निवासियों और ढोर के चरवाहों का पिता था।
२१ और उस के भाई का नाम यूबल था वुह बीन और बांसली
२२ के सारे बजनियों का पिता था। और ज़िल्लः से भी तूबलक़ाइन

उत्पन्न हुआ जो ठठेरों और लोहारों का शिक्षक था और तूबलक़ाइन
२३ की बहिन नआमः थी। और लमक ने अपनी पत्नियों अदः और
ज़िल्लः से कहा कि हे लमक की पत्नियो मेरा शब्द सुनो और मेरे
बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को अपने घाव के
२४ लिये और एक तरुण को अपने दुःख के लिये मार डाला। यदि
क़ाइन सात गुन प्रतिफल लेवे तो लमक सतहत्तर गुन॥

२५ और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्रहण किया और वुह
बेटा जनी और उस का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबील की
संती जिस को क़ाइन ने मार डाला मेरे लिये दूसरा बंश
२६ ठहराया। और सेत को भी एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस
ने उस का नाम अनूस रक्खा उस समय से लोग परमेश्वर का
नाम लेने लगे॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ आदम की बंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने
आदम को उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में बनाया।
२ उस ने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे
गये उस ने उन्हें आशीष दिया और उन का नाम आदम
रक्खा॥

३ और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप
और रूप में एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस का नाम सेत
४ रक्खा। और सेत की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ सौ
५ बरस की हुई और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और आदम
की सारी बय नव सौ तीस बरस की हुई और वुह मर गया॥

६ और सेत जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस्से अनूस
७ उत्पन्न हुआ। और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ
८ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और

सेत की सारी बय नव सौ बारह बरस की हुई और वुह मर गया ॥

९ और अनूस जब नब्बे बरस का हुआ तब उस्से क़ीनान
१० उत्पन्न हुआ। और क़ीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ
११ पंदरह बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस की हुई और वुह मर गया ॥

१२ और क़ीनान सत्तर बरस का हुआ और उस्से महललिएल
१३ उत्पन्न हुआ। और महललिएल की उत्पत्ति के पीछे क़ीनान आठ सौ चालीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१४ और क़ीनान की सारी बय नव सौ दस बरस की हुई और वुह मर गया ॥

१५ और महललिएल जब पैंसठ बरस का हुआ तब उस्से यिरद
१६ उत्पन्न हुआ। और महललिएल यिरद की उत्पत्ति के पीछे आठ
१७ सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और महललिएल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की हुई और वुह मर गया ॥

१८ जब यिरद एक सौ बासठ बरस का हुआ तब उस्से हनूक़
१९ उत्पन्न हुआ। और हनूक़ की उत्पत्ति के पीछे यिरद आठ सौ
२० बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और यिरद की सारी बय नव सौ बासठ बरस की हुई और वुह मर गया ॥

२१ जब हनूक़ पैंसठ बरस का हुआ तो उस्से मतूसिलह उत्पन्न
२२ हुआ। और हनूक़ मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस लों ईश्वर के साथ साथ चलता था और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२३ । २४ और हनूक़ की सारी बय तीन सौ पैंसठ बरस की हुई। और हनूक़ ईश्वर के साथ साथ चलता था और वुह न मिला क्योंकि ईश्वर ने उसे ले लिया ॥

२५ और जब मतूसिलह एक सौ सतासी बरस का हुआ तब उस्से
२६ लमक उत्पन्न हुआ। और लमक की उत्पत्ति के पीछे मतूसिलह
सात सौ बयासी बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२७ और मतूसिलह की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई
और वुह मर गया॥

२८ और लमक जब एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस
२९ का एक बेटा उत्पन्न हुआ। और उस ने उस का नाम नूह
रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य्य
के बिषय में जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर परमेश्वर ने
३० स्राप दिया है हमें शान्ति देगा। और नूह की उत्पत्ति के पीछे
लमक पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
३१ उत्पन्न हुईं। और लमक की सारी बय सात सौ सतहत्तर बरस
की हुई और वुह मर गया॥

३२ और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से सिम और
हाम और याफ़त उत्पन्न हुए॥

छठवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब आदमी पृथिवी पर बढ़ने लगे और
२ उन से बेटियां उत्पन्न हुईं। तो ईश्वर के पुत्रों ने आदम की
पुत्रियों को देखा कि वे सुंदरी हैं और उन में से जिन्हें उन्हों ने
चाहा उन्हें ब्याहा॥

३ और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा आदमी में उन के
अपराध के कारण सदा लों न्याय न करेगा वुह मांस है और
उस के दिन एक सौ बीस बरस के होंगे॥

४ और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उस के पीछे भी
जब ईश्वर के पुत्र आदम की पुत्रियों से मिले तो उन से बालक
उत्पन्न हुए जो बलवान हुए जो आगे से नामी थे॥

५　और ईश्वर ने देखा कि आदम की दुष्टता पृथिवी पर बहुत हुई और उन के मन की चिंता और भावना प्रति दिन केवल
६ बुरी होती हैं। तब आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से
७ परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ। तब परमेश्वर ने कहा कि आदमी को जिसे मैं ने उत्पन्न किया आदमी से लेके पशुओं और रेंगवैयों को और आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर से नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनाने से मैं पछताता हूं॥
८।९　पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया। नूह की बंशावली यह है कि नूह अपने समय में धर्म्मी और सिद्ध पुरुष
१० था नूह ईश्वर के साथ साथ चलता था। और नूह से
११ तीन बेटे सिम हाम और याफ़त उत्पन्न हुए। और पृथिवी ईश्वर के आगे बिगड़ गई थी और पृथिवी अंधेर से भरपूर
१२ हुई। और ईश्वर ने पृथिवी पर दृष्टि किई और देखा वुह बिगड़ गई थी क्योंकि सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़ दिया था॥
१३　और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे आ पहुंचा है क्योंकि उन के कारण पृथिवी अंधेर से भर गई है और
१४ देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करूंगा। तू गोफ़र लकड़ी की अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में कोठरियां बना और
१५ उस के बाहर भीतर राल लगा। और उसे इस डौल की बना उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ
१६ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। उस नाव में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी और
१७ तीसरी अटारी बना। और देख कि सारे शरीर को जिन में जीवन का श्वास है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर लाता हूं और पृथिवी पर हर

१८ एक वस्तु नष्ट हो जायगी। परन्तु मैं तुझसे अपनी बाचा स्थि
करूंगा तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी औ
१९ तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ। और सारे शरीरों में से जीवत
जंतु दो दो अपने साथ नाव में लेना जिसतें वे तेरे साथ जी
२० रहें वे नर और नारी होवें। पंछी में से उस के भांति भांि
के और ढोर में से उस के भांति भांति के और पृथिवी के ह
एक रेंगवैये में से भांति भांति के हर एक में से दो दो तु
२१ पास आवें जिसतें जीते रहें। और तू अपने लिये खाने को स
सामग्री अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उन के लि
भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह
किया॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समे
नाव में प्रवेश कर क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तु
२ धर्म्मी देखा है। हर एक पवित्र पशु में से सात सात नर औ
उस की जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो नर औ
३ उस की जोड़ी अपने साथ लेना। आकाश के पक्षियों
भी सात सात नर और उस की जोड़ी जिसतें सारी पृथिवी प
४ बंश जीता रहे। क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी प
चालीस रात दिन मेंह बरसाऊंगा और हर एक जीवते जंतु क
५ जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा देऊंगा। और नू
ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया॥

६ और जब पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ तब नूह छः स
७ बरस का था। तब नूह और उस के बेटे और उस की प
और उस के बेटों की पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण से उ
८ के संग नाव पर चढ़ीं। पवित्र पशुन से और उन में से जो पवि

नहीं हैं और पंछियों से और पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में से । दो दो नर और उस की जोड़ी जैसा ईश्वर ने नूह को आज्ञा किई थी नाव में गये । और जब सात दिन बीत गये तो यों हुआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर हुए ॥

और नूह की बय के छः सौ बरस के दूसरे मास की सत्तरहवीं तिथि में उसी दिन महा गहिराव के सारे सोते फूट निकले और स्वर्ग के द्वार खुल गये । और पृथिवी पर चालीस रात दिन मेंह बरसा । उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफ़त और नूह की पत्नी और उस के बेटों की तीनों पत्नियां उस के साथ नाव में गईं । वे और हर एक पशु अपनी अपनी भांति के समान और सारे ढोर और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु अपनी अपनी भांति के समान और हर एक पंछी अपनी अपनी भांति के समान हर एक भांति की हर एक चिड़ियां । और वे नूह के पास सारे शरीरों में से दो दो जिन में जीवन का श्वास था नाव में गये । और जिन्हों ने प्रवेश किया सो सारे शरीरों में से जोड़ा जोड़ा थे जैसा कि ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी और परमेश्वर ने उस के पीछे बंद किया ॥

और बाढ़ का पानी चालीस दिन ताईं पृथिवी पर हुआ और पानी बढ़ गया और नाव को उभार लिया और वुह भूमि पर से ऊपर उठ गई । और जब पानी बढ़े और पृथिवी पर बहुताई से बढ़ गये तब नौका पानी के ऊपर उतराने लगी । और जब कि पानी पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ गये तो सारे ऊंचे पहाड़ जो सारे आकाश के नीचे थे ढंप गये । ढंपे हुए पहाड़ों पर पानी पंदरह हाथ बढ़ गये ॥

और सारे शरीर जो पृथिवी पर चलते थे पंछी और ढोर और पशु और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक मनुष्य मर गये । सब जिन के नथुनों में जीवन का श्वास था और

२३ सब जो सूखी पर थे मर गये। और हर एक जीवता जंतु जो पृथिवी पर था आदमी से लेके ढोर और कीड़े मकोड़े और आकाश के पंछियों लों नष्ट हुए केवल नूह और जो उस
२४ के साथ नौका में थे बच रहे। और पानी डेढ़ सौ दिन लों पृथिवी पर बढ़ते गये॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने नूह को और हर एक जीवते जंतु को और सारे ढोर को जो उस के संग नाव में थे स्मरण किया और ईश्वर ने पृथिवी पर एक पवन बहाया और जल ठहर गये।
२ और गहिराव के सोते भी और आकाश के झरोखे बंद हो गये
३ और आकाश से मेंह थम गया। और जल पृथिवी पर से घटे चले जाते थे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल घट गये।
४ और सातवें मास की सत्तरह तिथि में नौका अरारात के
५ पहाड़ों पर टिक गई। और जल दसवें मास लों घटते गये और दसवें मास के पहिले दिन पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं॥

६ और चालीस दिन के पीछे यों हुआ कि नूह ने अपने बनाये
७ हुए नाव के झरोखे को खोला। और उस ने एक काग को उड़ा दिया और जब लों पृथिवी पर के जल सूख न गये वुह
८ आया जाया करता था। फेर उस ने अपने पास से एक पंडुकी को छोड़ दिया जिसतें देख ले कि पानी भूमि पर से घट गये
९ अथवा नहीं। परन्तु उस पंडुकी ने अपना चंगुल टिकने को ठिकाना न पाया और वुह उस के पास नौका पर फिर आई क्योंकि जल सारी पृथिवी पर था तब उस ने अपना हाथ
१० बढ़ाके उसे ले लिया और अपने पास नाव में ले लिया। फिर वुह और सात दिन ठहर गया और फिर उस ने उस पंडुकी

११ को नाव से उड़ा दिया। और वुह पंडुकी सांझ को उस पास फिर आई और क्या देखता है कि जलपाई की एक पत्ती उस के मुंह में है तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी
१२ पर से घट गया। और वुह और भी सात दिन ठहरा और उस पंडुकी को छोड़ दिया और वुह उस के पास फिर न आई॥

१३ और छः सौ एक बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में यों हुआ कि जल पृथिवी पर से सूख गया और नूह ने नाव की छत उठा दिई और क्या देखता है कि पृथिवी ऊपर से
१४ सूखी है। और दूसरे मास की सत्ताईसवीं तिथि में पृथिवी सूखी थी॥

१५।१६ तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला। कि नौका से निकल आ तू और तेरी पत्नी और तेरे बेटे और तेरे
१७ बेटों की पत्नियां तेरे संग। हर एक जीवते जंतु सारे शरीर में से क्या पंछी क्या ढोर और क्या कीड़े मकोड़े जो भूमि पर रेंगते चलते हैं सब को अपने संग ले निकल जिसतें उन के बंश पृथिवी पर बहुत बढ़ें और फलवंत हों और
१८ पृथिवी पर फैलें। तब नूह निकला और उस के बेटे और उस की पत्नी और उस के बेटों की पत्नियां उस के संग।
१९ हर एक पशु हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक पंछी जो कुछ कि पृथिवी पर रेंगते हैं सब अपने अपने भांति के समान नाव से निकल गये॥

२० और नूह ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और सारे पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम
२१ की भेंट उस बेदी पर चढ़ाई। और परमेश्वर ने सुगंध सूंघा और परमेश्वर ने अपने मन में कहा कि आदमी के लिये मैं पृथिवी को फिर कभी स्राप न देऊंगा इस कारण कि आदमी के

मन की भावना उस की लड़काई से बुरी है और जिस रीति से
२२ मैं ने सारे जीवधारियों को मारा फिर कभी न मारूंगा। जब
लों पृथिवी है बोना और काटना और ठंड और तपन और ग्रीष्म
और शीत और दिन और रात थम न जायेंगे॥

नवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीष दिया
और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो।
२ और तुम्हारा डर और तुम्हारा भय पृथिवी के हर एक पशु पर और
आकाश के हर एक पंछियों पर उन सभों पर जो पृथिवी पर
चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे
३ हाथ में सौंपे गये। हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन
के लिये होगा मैं ने हरी तरकारी के समान सारी बस्तु तुम्हें
४ दिईं। केवल मांस उस के जीव अर्थात् उस के लोहू समेत
५ मत खाना। और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के
लिये मैं पलटा लेऊंगा हर एक पशु से और आदमी के हाथ से मैं
पलटा लेऊंगा मनुष्य के भाई के हाथ से आदमी के प्राण का
६ मैं पलटा लेऊंगा। जो कोई आदमी का लोहू बहावेगा आदमी
से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में आदम
७ बनाया गया है। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर
बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो॥

८ और ईश्वर ने नूह को और उस के साथ उस के बेटों को कहा।
९ कि देखो मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से और तुम्हारे
१० बंश से तुम्हारे पीछे। और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे
संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से
और सभों से जो नाव से बाहर जाते हैं पृथिवी के हर एक
११ पशु लों। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करूंगा और

सारे शरीर बाढ़ के पानियों से फिर नष्ट न किये जायेंगे और फिर
१२ पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा। और ईश्वर
ने कहा कि यह उस नियम का चिन्ह है जो मैं अपने और
तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग
१३ है परंपरा की पीढ़ी लों बांधता हूं। मैं अपने धनुष को मेघ
पर रखता हूं और वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का
१४ चिन्ह होगा। और जब मैं मेघ को पृथिवी के ऊपर फैलाऊंगा
१५ तो धनुष मेघ में दिखाई देगा। और मैं अपने नियम को जो
मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी के
मध्य में है स्मरण करूंगा और फिर सारे शरीर को नष्ट करने
१६ को जलमय न होगा। और धनुष मेघ में होगा और मैं उसे
देखूंगा जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और
पृथिवी के सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है
१७ स्मरण करूं। और ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने
अपने और पृथिवी पर के सारे शरीरों से स्थिर किया है उस
का यह चिन्ह है॥

१८ और नूह के बेटे जो नौका से उतरे सिम और हाम और
१९ याफ़त थे और हाम कनआ़न का पिता था। नूह के यही
तीन बेटे थे और उन्हीं से सारी पृथिवी बस गई॥

२० और नूह खेती बारी करने लगा और उस ने एक दाख की
२१ बाटिका लगाई। और उस ने उस का रस पीया और उसे
२२ अमल हुआ और अपने तंबू में नग्न रहा। और कनआ़न के
पिता हाम ने अपने पिता की नंगापन देखी और बाहर अपने
२३ भाइयों को जनाया। तब सिम और याफ़त ने एक ओढ़ना
लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके
अपने पिता की नंगापन ढांपी और उन के मुंह पीछे थे सो
२४ उन्हों ने अपने पिता की नंगापन न देखी। जब नूह अपने

अमल से जागा तो जो उस के छोटे बेटे ने उस्से किया था
२५ उसे जान पड़ा। और उस ने कहा कि कनआ़न स्रापित होगा
२६ वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा। और उस ने कहा
कि सिम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे और कनआ़न उस का
२७ दास होगा। ईश्वर याफ़त को फैलाये और वुह सिम के
२८ तंबुओं में बास करे और कनआ़न उस का दास हो। और
२९ जलमय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीआ। और नूह
की सारी बय नव सौ पचास बरस की हुई और वुह मर गया॥

दसवां पर्ब्ब।

१ अब नूह के बेटों की बंशावली यही है सिम हाम
और याफ़त और जलमय के पीछे उन से बेटे उत्पन्न हुए।
२ याफ़त के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान और तूबल
३ और मसक और तीरास। और जुम्र के बेटे अशकनाज़ और
४ रिफ़त और तजरमः। और यूनान के बेटे इलीसः और तरशीश
५ कित्ती और दूदानी। इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू हर
एक अपनी अपनी भाषा के और अपने अपने परिवार के समान
अपनी अपनी जाति में बंट गये॥

६ और हाम के बेटे कूश और मिस्र और फूत और कनआ़न।
७ और कूश के बेटे सबा और हवीलः और सबतः और रग़मः
और सबतिका और रग़मः के बेटे सिबा और ददान॥

८ और कूश से निमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी पर एक
९ महाबीर होने लगा। वुह ईश्वर के आगे बलवान ब्याधा हुआ
इसी लिये कहा जाता है जैसा कि परमेश्वर के आगे निमरूद
१० बलवंत ब्याधा। और उस के राज्य का आरंभ बाबुल और
अरक और अक्कद और कलनः सिनआ़र देश में हुआ।
११ उसी देश में से असूर निकला और नीनवः और रिहाबात नगर

१२ और कलः बनाये। और नीनवः और कलः के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा नगर है॥
१३ और मिस्र से लोदी और अनामी और लिहाबी और
१४ नफ़तूही उत्पन्न हुए। और फतरूसी और कसलूही जिन से फिलिस्ती और कफ़तूरी निकले॥
१५ और कनआन से उस का पहिलौंठा सैदा और हित्त उत्पन्न हुए।
१६। १७ और यबूसी और अमूरी और जिरजाशी। और हवी और
१८ अरक़ी और सीनी। और अरवादी और ज़मारी और हमाती और
१९ उस के पीछे कनआन के घराने फैल गये। और कनआन के सिवाने सैदा से जिरार के मार्ग में उ़ज़्ज़ः लों सदूम और अमूरः
२० और अदमा और ज़िबियान और लसअ लों हुए। हाम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने देशों और अपनी जातिगणों में ये हैं॥
२१ और सिम से भी बालक उत्पन्न हुए वुह सारे इ़ब्र के बंश
२२ का पिता था और याफ़त उस का बड़ा भाई था। और सिम के बंश अ़ैलाम और असूर और अरफ़कसद और लूद और अराम
२३ थे। और अराम के बंश ऊ़ज़ और हूल और जतर और मश
२४ थे। और अरफ़कसद से सिलह उत्पन्न हुआ और सिलह से
२५ इ़ब्र। और इ़ब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम फ़लज था क्योंकि उस के दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के
२६ भाई का नाम युक़तान था। और युक़तान से अलमूदाद और
२७ सलफ़ और हसरिमौत और इरख़। और हदूराम और ऊज़ाल
२८ और दिक़लः। और ऊबल और अबीमायल और सिबा।
२९ और ओफ़ीर और हवीलः और यूबाब उत्पन्न हुए ये सब
३० युक़तान के बेटे थे। और उन के निवास मेसा के मार्ग से जो पूरब के
३१ पहाड़ सिफ़ार लों था। सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने अपने देशों और अपने अपने जातिगणों

३२ में थे थे। नूह के बेटों के घराने उन की पीढ़ी और उन के जातिगणों के समान ये हैं और जलमय के पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और सारी पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा थी।
२ और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा हुआ कि उन्हों ने सिनआर देश में एक चैागान पाया और वहां ठहरे॥
३ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि चलो हम ईंटें बनावें और आग में पकावें सो उन के लिये ईंट पत्थर की संती और
४ गारा की संती शिलाजतु था। फिर उन्हों ने कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिस की चोटी स्वर्ग लों पहुंचे अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी
५ पृथिवी पर छिन्न भिन्न हो जायें। तब परमेश्वर उस नगर और उस गुम्मट को जिसे आदम के संतान बनाते थे देखने को उतरा।
६ तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एकही हैं और उन सब की एकही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करने लगे सो वे
७ जिस पर मन लगावेंगे उस्से अलग न किये जायेंगे। आओ हम उतरें और वहां उन की भाषा को गड़बड़ावें जिसतें एक
८ दूसरे की बोली न समझे। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से
९ अलग रहे। इस लिये उस का नाम बाबुल कहावता है क्योंकि परमेश्वर ने वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर ने वहां से उन को सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया॥
१० सिम की बंशावली यह है कि सिम सा बरस का होके
११ जलमय के दो बरस पीछे उस्से अरफ़कसद उत्पन्न हुआ। और

अरफ़क्सद की उत्पत्ति के पीछे सिम पांच सौ बरस जीआ और
१२ उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और जब अरफ़क्सद पैंतीस
१३ बरस का हुआ तब उस्से सिलह उत्पन्न हुआ। और सिलह की
उत्पत्ति के पीछे अरफ़क्सद चार सौ तीस बरस जीआ और
१४ उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और सिलह जब तीस बरस का
१५ हुआ तब उस्से इब्र उत्पन्न हुआ। और सिलह इब्र की उत्पत्ति के
पीछे चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न
१६ हुईं। और इब्र से चौंतीस बरस की बय में फ़लज उत्पन्न
१७ हुआ। और फ़लज की उत्पत्ति के पीछे इब्र चार सौ तीस
१८ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और तीस बरस की
१९ बय में फ़लज से रऊ उत्पन्न हुआ। और रऊ की उत्पत्ति के
पीछे फ़लज दो सौ नव बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
२० उत्पन्न हुईं। और बत्तीस बरस की बय में रऊ से सरूज उत्पन्न
२१ हुआ। और सरूज की उत्पत्ति के पीछे रऊ दो सौ सात बरस
२२ जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और सरूज जब तीस
२३ बरस का हुआ तब उस्से नहूर उत्पन्न हुआ। और नहूर की उत्पत्ति
के पीछे सरूज दो सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
२४ उत्पन्न हुईं। और नहूर जब उंतीस बरस का हुआ तब उस्से तारह
२५ उत्पन्न हुआ। और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहूर एक सौ
२६ उंतीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और तारह
जब सत्तर बरस का हुआ तब उस्से अबिराम और नहूर और हारन
उत्पन्न हुए॥

२७ और तारह की बंशावली यह है कि तारह से अबिराम और
नहूर और हारन उत्पन्न हुए और हारन से लूत उत्पन्न हुआ।
२८ और हारन अपने पिता तारह के आगे अपनी जन्मभूमि
२९ अर्थात् कलदानियों के ऊर में मर गया। और अबिराम और
नहूर ने पत्नियां किईं अबिराम की पत्नी का नाम सरी था और

नहूर की पत्नी का नाम मिलकः जो हारन की बेटी थी वह
३० मिलकः और इसकाह का पिता था। परन्तु सरी बांझ थी
३१ उस का कोई संतान न था। और तारह ने अपने बेटे अबिराम
को और अपने पोते हारन के बेटे लूत को और अपनी बहू
अबिराम की पत्नी सरी को लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों
के ऊर से कनआन देश में ले चला और वे हारन में आके
३२ और वहां रहे। और तारह दो सौ पांच बरस का होके हारन
में मर गया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश
और अपने कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश को
२ जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ्से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा
३ और तू एक आशीर्बाद होगा। और जो तुझे आशीष देंगे मैं
उन्हें आशीष देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारूंगा
और पृथिवी के सारे घराने तुझ्से आशीष पावेंगे॥

४ सो परमेश्वर के कहने के समान अबिराम चला गया और
लूत भी उस के संग गया और जब अबिराम हारन से निकला
५ तब वुह पचहत्तर बरस का था। फिर अबिराम ने अपनी पत्नी
सरी को और अपने भतीजे लूत को और उन की सारी संपत्ति
को जो उन्हों ने प्राप्त किई थी और उन के सारे प्राणियों को
जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनआन देश को जाने
के लिये चल निकले सो वे कनआन देश में आये॥

६ और अबिराम उस देश में होके सिकम के स्थान लों चला
गया मोरिः के बलूत लों तब कनआनी उस देश में थे
७ फिर परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं

तेरे बंश को देऊंगा तब उस ने परमेश्वर के लिये जिस ने उसे दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई ॥

८ फिर वुह वहां से बैतएल की पूरब एक पहाड़ की ओर गया और अपना तंबू बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई पूरब ओर था और वहां उस ने परमेश्वर के लिये एक बेदी ९ बनाई और परमेश्वर का नाम लिया। और अबिराम ने जाते जाते दक्खिन की ओर यात्रा किई ॥

१० और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम बास करने के लिये मिस्र को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा अकाल था। ११ और यों हुआ कि जब वुह मिस्र के निकट पहुंचा तब उस ने अपनी पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू देखने में १२ सुन्दर स्त्री है। इस लिये यों होगा कि जब मिस्री तुझे देखें तो वे कहेंगे कि यह उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु १३ तुझे जीती रक्खेंगे। तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूं जिसतें तेरे कारण मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे॥

१४ और जब अबिराम मिस्र में जा पहुंचा तब मिस्रियों ने उस १५ स्त्री को देखा कि अत्यन्त सुन्दरी है। और फिरऊन के अध्यक्षों ने उसे देखा और फिरऊन के आगे उस का सराहना १६ किया सो उस स्त्री को फिरऊन के घर में ले गये। और उस ने उस के कारण अबिराम का उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गदहे और दास और दासी और गदहियां और १७ ऊंट उस को मिले। तब परमेश्वर ने फिरऊन पर और उस के घराने पर अबिराम की पत्नी सरी के कारण बड़ी बड़ी मरियां १८ डालीं। तब फिरऊन ने अबिराम को बुलाके कहा कि तू ने मुस्से यह क्या किया तू ने मुझे क्यों न जताया कि वुह मेरी १९ पत्नी है। क्यों कहा कि वुह मेरी बहिन है यहां लों कि मैं ने उसे अपनी पत्नी कर लिया होता सो अब देख यह तेरी पत्नी है

२० तू उसे ले और चला जा। तब फ़िरऊन ने अपने लोगों को उस के विषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे और उस की पत्नी को उस सब समेत जो उस का था जाने दिया॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ और अबिराम मिस्र से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत
२ और लूत को अपने संग लिये हुए दक्खिन को चला। और
३ अबिराम ढोर और सोना चांदी में बड़ा धनी था। और वुह यात्रा करते दक्खिन से बैतएल लों उसी स्थान को आया जहां
४ आरंभ में उस का तंबू था बैतएल और अई के मध्य में। उस बेदी के स्थान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां अबिराम ने परमेश्वर का नाम लिया॥

५ और अबिराम के संगी लूत के भी झुंड और गाय बैल और
६ तंबू थे। और साथ रहने के लिये उस देश में उन की समाई न हुई क्योंकि उन की सामग्री बहुत थी और वे एकट्ठे निवास
७ न कर सके। और अबिराम के ढोर के चरवाहों में और लूत के ढोर के चरवाहों में झगड़ा हुआ और कनआनी और फ़रिज़ी
८ भूमि में रहते थे। तब अबिराम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों में झगड़ा
९ न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं। क्या सारा देश तेरे आगे नहीं मुझ से अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर जाय तो मैं बाईं ओर जाऊंगा॥

१० तब लूत ने अपनी आंख उठाके यर्दन के सारे चौगान को देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरः को नष्ट करने से पहिले वुह सर्बत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था परमेश्वर की बारी के
११ समान सुग़र के मार्ग में मिस्र की नाईं था। तब लूत ने

यर्दन का सारा चैागान अपने लिये चुना और लूत पूरब की ओर
१२ चला और वे एक दूसरे से अलग हुए। अबिराम कनआन देश
में रहा और लूत ने चैागान के नगरों में बास किया और सदूम
१३ लों तंबू खड़ा किया। पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यन्त
दुष्ट और पापी थे ॥

१४ तब लूत के उस्से अलग होने के पीछे परमेश्वर ने अबिराम
से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू
है उत्तर और दक्खिन और पूरब और पच्छिम की ओर देख।
१५ क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे बंश
१६ को सदा के लिये देऊंगा। और मैं तेरे बंश को पृथिवी की
धूल के तुल्य करूंगा यहां लों कि यदि कोई पृथिवी की धूल
१७ को गिन सके तो तेरा बंश भी गिना जायगा। उठके देश की
लंबाई और चैाड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा।
१८ तब अबिराम ने तंबू उठाया और ममरे के बलूतों में जो हबरून
में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई ॥

चैादहवां पर्ब्ब ।

१ और सिनआर के राजा अमराफिल के इल्लासर के राजा
अरयूक के ऐलाम के राजा किदरलाउमर के और जातिगणों
२ के राजा तिदआल के दिनों में यों हुआ। कि उन्हों ने सदूम
के राजा बरअ से और अमूरः के राजा बिरशअ से अदमः
के राजा सिन्निअब से और जिबोआन के राजा शिमिबर से और
३ बालिग़ के राजा से जो सुग़र है संग्राम किया। ये सब सिद्दीम
४ की तराई में जो खारी समुद्र है एकट्ठे हुए। उन्हों ने बारह
बरस लों किदरलाउमर की सेवा किई और तेरहवें बरस उस्से
५ फिर गये। और चैादहवें बरस में किदरलाउमर और उस के
साथी राजा आये और इसतारात क़रनैन में रिफाइम को और

६ हाम में ज़ज़ीयों को और सवी क़रयातैन में ऐमियों को। और
उन के सईर पर्बत में हूरियों को फ़ारान के चैगान लों जो
७ बन के पास है मारा। और फिरे और ऐनमिशपात को जो
कादिस है फिरे और अमालीक़ के सारे देश को और अमूरि
८ को भी जो हस्सुनतमर में रहते थे मार लिया। और सदूम
का राजा और अमूर: का राजा और अदम: का राजा और
ज़िबिआन का राजा और बालिग़ का राजा जो सुग़ है निकले
९ और सिद्दीम की तराई में उन के संग युद्ध किया। ऐलाम
के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदआल
के संग और शिनआर के राजा अमराफ़िल और इल्लासर के
१० राजा अरयूक अर्थात् चार राजा पांच के संग। और सिद्दीम
की तराई में चहले के गढ़हे थे और सदूम और अमूर: के
राजा भागे और वहां गिरे और बचे हुए लोग भागके पहाड़
११ पर गये। और उन्हों ने सदूम और अमूर: की सारी संपत्ति
और उन के सारे भोजन लूट लिये और अपने मार्ग पकड़े।
१२ और अबिराम के भतीजे लूत को जो सदूम में रहता था और
उस की संपत्ति को लेके चले गये॥

१३ तब किसी ने बचके इबरानी अबिराम को संदेश दिया और
वुह इसकाल और अनेर के भाई अमूरी ममरे के बलूतों के
१४ नीचे रहता था और वे अबिराम के सहायक थे। और अबिराम
ने अपने भाई के ले जाने की बात सुनके अपने घर के तीन
सौ अठारह दासों को लिया और दान लों उन का पीछा किया।
१५ और उस ने और उस के सेवकों ने आप को रात को बिभाग
किया और उन्हें मारा और ख़ूब: लों जो दमिशक़ की बाईं
१६ ओर है उन्हें रगेदे चले गये। और वुह सारी संपत्ति को और
अपने भाई लूत को भी और उस की संपत्ति को और स्त्रियों
को भी और लोगों को फेर लाया॥

१७ और किदरलाउमर के और उस के संगी राजाओं के मारके फिर आने के पीछे सदूम का राजा उस्से भेंट करने के सवी की तराई लों जो राजा की तराई है निकला। और सालिम का राजा
१८ मलिकिसिदक़ रोटी और दाखरस लाया और वुह अति महान
१९ ईश्वर का याजक था। और उस ने उसे आशीष दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के प्रभु अति महान सर्बशक्तिमान
२० से अबिराम धन्य होवे। और अति महान सर्बशक्तिमान को धन्य जिस ने तेरे बैरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस ने सब का दसवां भाग उसे दिया॥
२१ और सदूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों को
२२ मुझे दीजिये और संपत्ति आप रखिये। तब अबिराम ने सदूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान सर्बशक्तिमान परमेश्वर के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है उठाया है।
२३ कि मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेऊंगा सो मत कहियो कि मैं ने अबिराम को धनमान किया।
२४ परन्तु केवल वुह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात् अ़नेर और इसकाल और ममरे के वे अपने भाग लेवें॥

पंदरहवां पर्ब्ब ।

१ इन बातों के पीछे परमेश्वर का बचन यह कहते हुए दर्शन में अबिराम पर पहुंचा कि हे अबिराम मत डर मैं तेरी ढाल
२ और तेरा बड़ा प्रतिफल हूं। तब अबिराम ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाता हूं और मेरे
३ घर का भंडारी दमिशक़ी इलिअ़ज़र है। और अबिराम ने कहा कि देख तू ने मुझे कोई बंश न दिया और देख जो मेरे घर
४ में उत्पन्न हुआ वही मेरा अधिकारी है। और देखो परमेश्वर

का बचन उस्से यों कहते हुए पहुंचा कि यह तेरा अधिकारी
न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा अधिकारी
५ होगा। फिर उस ने उसे बाहर ले जाके कहा अब स्वर्ग की
ओर देख और जो तारों को तू गिन सके तो उन्हें गिन फिर
६ उस ने उसे कहा कि तेरा बंश ऐसा ही होगा। तब वुह
परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना
गया॥

७ फिर उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि
अधिकार में देने को कलदानियों के ऊर से निकाल लाया
८ तब उस ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं क्योंकर जानूं कि मैं
९ उस का अधिकारी होऊंगा। तब उस ने उसे कहा कि तू तीन
बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन
बरस का एक मेढ़ा और एक पंडुक और कपोत का एक बच्चा
१० मेरे लिये ले। सो उस ने यह सब अपने लिये लिया और
उन्हें मध्य से दो दो भाग किये और हर एक भाग को उस
के दूसरे भाग के साम्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न किया।
११ और जब हिंसक पंछी उन लोथों पर उतरे तब अबिराम ने
१२ उन्हें हांक दिया। और सूर्य्य अस्त होते हुए अबिराम पर
भारी नींद पड़ी और क्या देखता है कि बड़ा भयंकर अंधकार
१३ उस पर पड़ा। तब उस ने अबिराम को कहा निश्चय जान
कि तेरे बंश औरों के देश में परदेशी होंगे और उन की सेवा
१४ करेंगे और वे उन्हें चार सौ बरस लों सतावेंगे। परन्तु जिन
की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और
१५ वे पीछे बड़ी संपत्ति लेके निकलेंगे। और तू अपने पितरों में कुशल
१६ से जायगा और बहुत पुरनिया होके गाड़ा जायगा। परन्तु चौथी
पीढ़ी में वे इधर फिर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का अधर्म अब
१७ लों भरपूर नहीं हुआ। और जब सूर्य्य अस्त हुआ तो ये

हुआ कि अंधियारा हुआ कि देखो एक धूआं उठता भट्ठा और एक आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके
१८ चला गया। उसी दिन परमेश्वर ने अबिराम से नियम करके कहा कि मैं ने मिस्र की नदी से फुरात की बड़ी नदी लों यह
१९ देश तेरे बंश को दिया है। अर्थात् क़ैनी और क़नज़ी और
२० क़दमूनी। और हित्ती और फ़रिज़्ज़ी और रिफ़ाइमी।
२१ और अमूरी और कनआनी और जिर्जाशी और यबूसी का देश॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ अब अबिराम की पत्नी सरी कोई लड़का उस के लिये न जनी और उस की एक मिस्री लौंड़ी थी और उस का नाम हाजिरः
२ था। तब सरी ने अबिराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्ने से रोका है मैं तेरी बिनती करती हूं कि मेरी लौंड़ी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जाय और अबिराम
३ ने सरी की बात मानी। सो अबिराम के कनआन देश में दस बरस निवास करने के पीछे उस की पत्नी सरी ने अपनी लौंड़ी मिस्री हाजिरः को लिया और अपने पति अबिराम को उस
४ की पत्नी होने को दिया। और उस ने हाजिरः को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी
५ देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निन्दित हुई। तब सरी ने अबिराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी लौंड़ी आप की गोद में दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उस की दृष्टि में निन्दित हुई मेरे और आप के बीच
६ परमेश्वर न्याय करे। तब अबिराम ने सरी से कहा कि देख तेरी लौंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे सो उस्से कर और जब सरी ने उस्से कठिनता किई तब वुह उस के आगे से भाग गई॥

७ और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के सोते के पास बन में
८ उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया। और कह
कि हे सरी की लौंड़ी हाजिरः तू कहां से आई है और किध
जायेगो और वुह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे
९ भागती हूं। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपन
१० स्वामिनी के पास फिर जा और उस के बश में रह। फि
परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा बंश अत्यन्त बढ़ाऊंग
११ ऐसा कि वुह बहुताई के मारे गिना न जायगा। और परमेश्व
के दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेट
जनेगी और उस का नाम इसमअ़एल रखना क्योंकि परमेश्व
१२ ने तेरा दुःख सुना। और वुह एक बन मनुष्य होगा उस क
हाथ हर एक मनुष्य के बिरुद्ध और हर एक का हाथ उस के
बिरुद्ध होगा और वुह अपने सारे भाइयों के साम्ने निवा
१३ करेगा। तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उस्से बा
किईं यों लिया कि हे सर्बशक्तिमान तू मुझे देखता है क्योंि
उस ने कहा कि क्या मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी देख
१४ है। इस लिये उस कूएं का नाम मेरेजीवतेदर्शी का कुआ रक्ख
१५ देखो वुह कादिस और बिरद के मध्य में है। सो हाजिर
अबिराम के लिये एक बेटा जनी और अबिराम ने अपने बे
१६ का नाम जिसे हाजिरः जनी इसमअ़एल रक्खा। और ज
हाजिरः से अबिराम के लिये इसमअ़एल उत्पन्न हुआ त
अबिराम छियासी बरस का था॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ और जब अबिराम निन्नानवे बरस का हुआ तब परमेश्वर
अबिराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्बसामर्थी सर्बशक्तिमा
२ हूं तू मेरे आगे चल और सिद्ध हो। और मैं अपने और तेरे मध

३ में अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यन्त बढ़ाऊंगा। तब अबिराम औंधा गिरा और ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा।
४ कि मैं जो हूं देख मेरा नियम तेरे संग होगा और तू बहुत सी
५ जातिगणों का पिता होगा। और तेरा नाम फिर अबिराम न होगा परन्तु तेरा नाम अबिरहाम होगा क्योंकि मैं ने तुझे बहुत
६ सी जातिगणों का पिता बनाया है। और मैं तुझे अत्यन्त फलमान करूंगा और तुस्से जातिगण बनाऊंगा और राजा तुस्से
७ निकलेंगे। और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और तेरे पीछे तेरे बंश के उन की पीढ़ियों में सदा के लिये एक नियम जो उन के साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा
८ और तेरे पीछे तेरे बंश का ईश्वर हूंगा। और मैं तुझे और तेरे पीछे सर्ब्बदा अधिकार के लिये तेरे बंश को तेरे टिकाव का देश देऊंगा अर्थात् कनआन का सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥
९ और ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा
१० बंश उन की पीढ़ियों में मेरे नियम को मानें। तुम मेरा नियम जो मुस्से और तुम से और तेरे पीछे तेरे बंश से है जिसे तुम मानोगे सो यह है कि तुम में से हर एक पुरुष का ख़तनः
११ किया जाय। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वुह
१२ मेरे और तुम्हारे मध्य में नियम का चिन्ह होगा। और तुम्हारी पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के पुरुष का ख़तनः किया जाय जो घर में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे
१३ बंश का न हो रूपे से मोल लिया जाय। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे रूपे से मोल लिया गया हो अवश्य उस का ख़तनः किया जाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस में सर्ब्बदा
१४ नियम के लिये होगा। और जो अख़तनः बालक जिस की खलड़ी का ख़तनः न हुआ हो सो प्राणी अपने लोग से कट जाय कि उस ने मेरा नियम तोड़ा है॥

१५ फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू
१६ उसे सरी न कह परन्तु उस का नाम सरः रख। और मैं उसे
आशीष देऊंगा और तुझे एक बेटा उस्से भी देऊंगा निश्चय मैं
उसे आशीष देऊंगा और वुह जातिगण होगी और लोगों के राजा
१७ उस्से होंगे। तब अबिरहाम औंधे मुंह गिरा और हंसा और
अपने मन में कहा क्या सौ बरस के बृद्ध से लड़का उत्पन्न
१८ होगा और क्या सरः जो नब्बे बरस की है जनेगी। फिर
अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इसमअएल तेरे आगे
१९ जीता रहे। तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सरः तेरे लिये
निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम इज़हाक़ रखना
और मैं सर्व्वदा नियम के लिये अपना नियम उस्से और उस के
२० पीछे उस के बंश से स्थिर करूंगा। और इसमअएल जो है मैं
ने उस के बिषय में तेरी सुनी है देख मैं ने उसे आशीष दिया
और उसे फलमान करूंगा और उसे अत्यन्त बढ़ाऊंगा उस्से बारह
२१ अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी मंडली बनाऊंगा। परन्तु
इज़हाक़ के साथ जिसे सरः तेरे लिये दूसरे बरस इसी ठहराये
हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम स्थिर करूंगा॥

२२ तब उस्से बात करने से रह गया और अबिरहाम के पास
२३ से ईश्वर ऊपर जाता रहा। तब अबिरहाम ने अपने बेटे
इसमअएल को और सब जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे और
सब जो उस के रूपे से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम के
घराने के हर एक पुरुष को लेके उसी दिन उन की खलड़ी का
२४ ख़तनः किया जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा था। और जब उस
की खलड़ी का ख़तनः हुआ तब अबिरहाम निन्नानबे बरस का
२५ था। और जब उस के बेटे इसमअएल की खलड़ी का ख़तनः
२६ हुआ तब वुह तेरह बरस का था। उसी दिन अबिरहाम और
२७ उस के बेटे इसमअएल का ख़तनः किया गया। और उस के

घराने के सारे पुरुषों का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों से मोल लिये गये उस के साथ ख़तनः किये गये ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर उसे ममरे के बलूतों में दिखाई दिया और वुह दिन को घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा २ था । और उस ने अपनी आंखें उठाईं और देखा और देखो कि तीन मनुष्य उस के पास खड़े हैं और उन्हें देखके वुह तंबू के द्वार पर से ३ उन की भेंट को दौड़ा और भूमि लों दंडवत किई । और कहा हे मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं आप की बिनती करता हूं कि अपने दास के पास से चले ४ न जाइये । इच्छा होय तो थोड़ा जल लाया जाय और अपने ५ चरण धोइये और पेड़ तले विश्राम कीजिये । और मैं एक कौर रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उस के पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे ६ बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर । और अबिरहाम तंबू में सरः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उस के फुल्के पका । ७ और अबिरहाम झुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उस ने भी उसे सिद्ध करने ८ में चटक किया । और उस ने मक्खन और दूध और वुह बछड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप उन के पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया ॥

९ और उन्हों ने उस्से पूछा कि तेरी पत्नी सरः कहां है और वुह १० बोला कि देखिये तंबू में है । और उस ने कहा कि जीवन के समय के समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा और देख तेरी पत्नी सरः एक बेटा जनेगी और सरः उस के पीछे तंबू के

११ द्वार पर सुनती थी। और अबिरहाम और सरः बूढ़े औ
१२ पुरनिये थे और सरः से स्त्री का ब्यवहार जाता रहा। औ
सरः हंसके अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे मे
१३ और मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनन्द होगा। औ
परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सरः क्यों यह कहके मुसकुरा
१४ कि मैं जो बुढ़िया हूं सच मुच बालक जनूंगी। क्या परमेश्व
के लिये कोई बात असाध्य है जीवन के समय के समान मै
ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर आऊंगा और सरः के
१५ बेटा होगा। और सरः यह कहके मुकर गई कि मैं तो नहीं
हंसी क्योंकि वुह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं परन्तु तू
हंसी है॥

१६ और वे मनुष्य वहां से उठके सदूम की ओर देखने लगे
और अबिरहाम उन्हें बिदा करने को उन के साथ साथ चला
१७ और परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता हूं सो क्या अबिरहाम
१८ से छिपाऊं। अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और बलवान
जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशी
१९ पावेंगे। क्योंकि मैं उसे जानता हूं कि वुह अपने पीछे अपने
बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे न्याय औ
बिचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे जिसतें जो कुछ
परमेश्वर ने अबिरहाम के बिषय में कहा है सो उस प
२० पहुंचावे। और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि सदूम औ
अमूरः का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण कि उन के पा
२१ अत्यन्त गरू हुए। मैं उतरूंगा और देखूंगा कि उस के चिल्लाने
के समान जो मुझ लों पहुंचा है उन्हों ने पूरा किया है औ
२२ यदि नहीं तो मैं जानूंगा। और उन मनुष्यों ने वहां से अपने
मुंह फेरे और सदूम की ओर गये परन्तु अबिरहाम तद भी
परमेश्वर के आगे खड़ा रहा॥

२३ और अबिरहाम पास गया और कहा कि क्या तू दुष्ट के
२४ संग धर्मी को भी नष्ट करेगा। यदि नगर में पचास धर्मी होयें
क्या तब भी नष्ट करेगा और उस के पचास धर्मियों के लिये
२५ जो उस में हैं उस स्थान को न छोड़ेगा। दुष्ट के संग धर्मी
को मारना ऐसी बात तुस्से परे होय और कि धर्मी दुष्ट के
समान हो जाय तुस्से दूर होय क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय
२६ न करेगा। और परमेश्वर ने कहा यदि मैं सदूम नगर में पचास
धर्मी पाऊं तो मैं उन के लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा।
२७ फिर अबिरहाम ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के
आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हूं।
२८ यदि पचास धर्मियों से पांच घाट होवें तो क्या पांच के लिये
सारे नगर को नाश करेगा तब उस ने कहा यदि मैं वहां
२९ पैंतालीस पाऊं तो नाश न करूंगा। और उस ने उस्से फिर बातें
किई और कहा यदि चालीस वहां पाये जावें तब उस ने कहा मैं
३० चालीस के कारण ऐसा न करूंगा। और उस ने कहा हाय कि प्रभु
क्रुद्ध न होवे तो मैं कहूं यदि वहां तीस पाये जायें तब उस ने
३१ कहा यदि मैं वहां तीस पाऊं तो ऐसा न करूंगा। और उस
ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे बोलने में ढिठाई किई
यदि बीस ही वहां पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के
३२ कारण नाश न करूंगा। फिर उस ने कहा हाय कि प्रभु
क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहूं यदि वहां दस ही
पाये जावें तब उस ने कहा मैं दस के कारण नाश न
३३ करूंगा। तब परमेश्वर अबिरहाम से बात चीत समाप्त करके
चला गया और अबिरहाम अपने स्थान को फिरा॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ और सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के

फाटक पर बैठा था और लूत उन्हें देखकर उन से भेंट कर
२ को उठा और भूमि लों दंडवत किई। और कहा हे मेरे स्वामि
अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये औ
अपने चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये त
उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे
३ पर जब उस ने उन्हें बहुत दबाया तब वे उस की ओर फि
और उस के घर में आये तब उस ने उन के लिये जेवना
किया और अख़मीरी रोटी उन के लिये पकाई और उन्हों ने खाई
४ उन के लेटने से आगे नगर के मनुष्यों अर्थात् सदूम
मनुष्यों ने तरुण से बूढ़े लों सब लोगों ने चारों ओर से आ
५ उस घर को घेरा। और लूत को पुकारके कहा कि जो पुरु
तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्
६ बाहर ला और हम उन से संगम करें। और लूत द्वार से उ
७ पास बाहर गया और अपने पीछे किवाड़ बंद किया। और कह
८ कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न करना। देखो मेरी दो बेटिय
हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाह
लाऊं और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से क
केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मे
९ छत की छाया तले आये हैं। और उन्हों ने कहा कि हट जा औ
कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्या
होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक बुराई करें
तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर हुल्लड़ करके आये औ
१० किवाड़ तोड़ने को झपटे। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हा
बढ़ाके लूत को घर में अपने पास खींच लिया और किवा
११ बंद किया। और छोटे से बड़े लों उन मनुष्यों को जो घर
द्वार पर थे अंधापन से मारा यहां लों कि वे द्वार ढूंढते ढूंढ
थक गये॥

१२ तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहां है जवाई अथवा तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियां जो कोई इस
१३ नगर में तेरा है उन्हें लेकर इस स्थान से निकल जा। क्योंकि हम इस स्थान को नाश करते हैं क्योंकि इन का चिल्लाना परमेश्वर के आगे बड़ा है और परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने
१४ को भेजा है। तब लूत निकला और अपने जवाइयों से जिन्हों से उस की बेटियां ब्याही थीं बोला और कहा कि उठो इस स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करता है परन्तु वुह अपने जवाइयों की दृष्टि में जैसा कोई ठठेलू दिखाई दिया॥

१५ और जब बिहान हुआ तब दूतों ने लूत को शीघ्र करवाके कहा कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां जो यहां हैं ले जा
१६ न हो कि तू इस नगर के दण्ड में भस्म हो जाय। और जब वुह बिलंब करता था तब उन पुरुषों ने उस का और उस की पत्नी का और उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि परमेश्वर की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के
१७ बाहर डाल दिया। और जब उन्हें बाहर निकाला तो कहा कि अपने प्राण के लिये भाग और पीछे मत देखना और सारे चैागान में न ठहरना पहाड़ पर भाग जा न होवे कि तू भस्म
१८ होवे। तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं।
१९ देखिये आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में मेरे साथ किई है मैं तो पहाड़ पर नहीं भाग सक्ता न होवे कि
२० कोई बिपत्ति मुझ पर पड़े और मैं मर जाऊं। देखिये कि यह नगर वहां भागने को समीप है और वुह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वुह क्या छोटा नहीं सो मेरा प्राण बच
२१ जायगा। और उस ने उसे कहा कि देख इस बात के बिषय

में भी मैं ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जि
२२ की तू ने कही उलट न देऊंगा। शीघ्र कर और उधर भा
क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इ
२३ लिये उस नगर का नाम सुग़ रक्खा। सूर्य्य पृथिवी पर उद
हुआ था जब लूत सुग़ में पहुंचा॥
२४ तब परमेश्वर ने सदूम और अमूरः पर गंधक और आ
२५ परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से बरसाया। और उन नगरों के
और सारे चौगान को और नगरों के सारे निवासियों को औ
२६ जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया। परन्तु उस की पत्
ने उस के पीछे से फिरके देखा और वुह लोन का खंभा ब
२७ गई। और अबिरहाम उठके बिहान को तड़के उस स्थान
२८ जहां वुह परमेश्वर के आगे खड़ा था आ पहुंचा। और उस
सदूम और अमूरः और चौगान की सारी भूमि पर दृष्टि कि
और देखा कि उस भूमि से भट्ठी का सा धुआं उठ रहा है॥
२९ और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के नगरों को न
किया तब ईश्वर ने अबिरहाम को स्मरण किया और उन नग
को जहां लूत रहता था नष्ट करते हुए लूत को उस बिपत्ति
३० छुड़ाया। और लूत अपनी बेटियों समेत सुग़ से पहाड़ पर ज
रहा क्योंकि वुह सुग़ में रहने को डरा तब वुह और उस की
३१ बेटियां एक कंदला में जा रहे। और पहिलौंठी ने छुटकी
कहा कि हमारा पिता बृद्ध है और पृथिवी पर कोई पुरुष न
३२ रहा जो जगत की रीति के समान हमें ग्रहण करे। आ
हम अपने पिता को दाखरस पिलावें और हम उस के सा
३३ शयन करें कि हम अपने पिता से बंश जुगावें। तब उन्हों
उस रात अपने पिता को दाखरस पिलाया और पहिलौंठी ग
और अपने पिता के साथ शयन किया और उस ने उस के शय
३४ करते और उठते सुरत न किई। और जब दूसरा दिन हु

तब पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि देख मैं ने कल रात अपने पिता के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाखरस पिलावें और तू जाके उस के साथ शयन कर जिसतें हम अपने
३५ पिता का बंश जुगावें। तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात भी दाखरस पिलाया और छुटकी ने उठके उस के साथ शयन किया और उस ने उस के न शयन करते न उठते हुए सुरत किई।
३६ । ३७ से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुईं। और पहिलौंठी एक बेटा जनी और उस का नाम मोआब रक्खा वही
३८ आज लों मोआबियों का पिता है। और छुटकी वुह भी एक बेटा जनी और उस का नाम बिनअम्मी रक्खा वही आज लों अम्मूनी के बंश का पिता है॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ फिर अबिरहाम ने वहां से दक्खिन के देश को यात्रा किई और क़ादिस और सूर के बीच ठहरा और जिरार में टिका।
२ और अबिरहाम अपनी पत्नी सरः के बिषय में बोला कि वुह मेरी बहिन है सो जिरार के राजा अबिमलिक ने भेजके सरः को ले लिया॥

३ परन्तु रात को ईश्वर ने अबिमलिक पास स्वप्न में आके उसे कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है मरेगा
४ क्योंकि वुह ब्याही स्त्री है। परन्तु अबिमलिक उस पास न आया था तब उस ने कहा कि हे प्रभु क्या तू धर्मी जाति
५ को भी मार डालेगा। क्या उस ने मुझे नहीं कहा कि वुह मेरी बहिन है और वुह आपही बोली कि वुह मेरा भाई है मैं ने अपने मन की सच्चाई और हाथों की निर्दोषता से यह किया है।
६ तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूं कि तू ने अपने मन की सच्चाई से यह किया है और मैं ने भी तुझे

मेरे बिरुद्ध पाप करने से रोका इस लिये मैं ने तुझे उसे छूने न
७ दिया। सो अब उस पुरुष को उस की पत्नी फेर दे क्योंकि वुह
भविष्यद्वक्ता है और वुह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीत
रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू
और तेरे सारे जन निश्चय मरेंगे॥

८ तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सा
सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे जन
९ बहुत डर गये। तब अबिमलिक ने अबिरहाम को बुलाय
और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने तेरा क्या
अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया
१० है तू ने मुझसे ऐसे काम किये जिन का करना उचित नहीं। औ
अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा जो तू ने यह
११ काम किया है। और अबिरहाम बोला कि मैं ने कहा कि निश्चय
ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे
१२ मुझे मार डालेंगे। और वुह तो निश्चय मेरी बहिन भी है वुह
मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी
१३ पत्नी हो गई। और यों हुआ कि जब ईश्वर ने मेरे पिता के घ
से मुझे भ्रमाया तो मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह
करियो कि सब स्थान में जहां कहीं हम जायें मेरे बिषय में
१४ कहियो कि वुह मेरा भाई है। तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी
और गाय बैल और दास और दासियां लेकर अबिरहाम को दिय
१५ और उस की पत्नी सरः को भी उसे फेर दिया। फिर अबिमलिक ने
कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरी दृष्टि में भा
१६ तहां रह। और सरः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को
सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लि
और सभों के लिये वुह तेरी आंखों की ओट होगी सो वुह यों
१७ डपटी गई। तब अबिरहाम ने ईश्वर की प्रार्थना किई औ

ईश्वर ने अबिमलिक और उस की पत्नी और उस की दासियों
१८ को चंगा किया और वे जन्ने लगीं। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम
की पत्नी सरः के कारण अबिमलिक की सारी कोखों को बंद कर
दिया था ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सरः से भेंट किया
और अपने बचन के समान परमेश्वर ने सरः के विषय में किया।
२ और सरः गर्भिणी हुई और अबिरहाम के लिये उस के बुढ़ापे
में उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी ।
३ और अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जो उस के लिये उत्पन्न
४ हुआ जिसे सरः उस के लिये जनी थी इज़हाक रक्खा । और
ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम ने आठवें दिन अपने बेटे
५ इज़हाक का ख़तनः किया । जब उस का बेटा इज़हाक उस
के लिये उत्पन्न हुआ तब अबिरहाम सौ बरस का बृद्ध था ।
६ तब सरः बोली कि ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये
७ हंसेंगे । और वुह बोली कि कौन अबिरहाम से कहता कि सरः
बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बुढ़ापे में मैं बेटा
जनी ॥

८ और वुह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और
इज़हाक के दूध छुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ा जेवनार
९ किया । और सरः ने मिस्री हाजिरः के बेटे को जिसे वुह
१० अबिरहाम के लिये जनी थी चिढ़ाते देखा । तब उस ने
अबिरहाम से कहा कि आप इस लौंड़ी को और उस के बेटे को
निकाल दीजिये क्योंकि यह लौंड़ी का बेटा मेरे बेटे इज़हाक
११ के साथ अधिकारी न होगा । और अपने बेटे के लिये यह
१२ बात अबिरहाम को बड़ी कड़वी लगी । तब ईश्वर ने अबिरहाम

से कहा कि लड़के के और तेरी लौंड़ी के बिषय में तुझे कड़वी न लगे सब जो सर: ने तुझे कहा मान ले क्योंकि तेरा बंश
१३ इज़हाक़ से गिना जायगा। और मैं उस लौंड़ी के बेटे से भी
१४ एक जाति बनाऊंगा क्योंकि वुह तेरा बंश है। तब अबिरहाम ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक पखाल में जल लिया और हाजिर: के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप के उसे बिदा किया॥

और वुह चल निकली और बीअरसबअ़ के बन में भ्रमती फिरी।
१५ और जब पखाल का जल चुक गया तब उस ने उस लड़के को
१६ एक झाड़ी के तले डाल दिया। और आप उस के सन्मुख एक तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वुह बोली कि मैं इस बालक की मृत्यु को न देखूं और वुह उस के सन्मुख बैठके
१७ चिल्ला चिल्ला रोई। तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुन और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग में से हाजिर: को पुकारा और उसे कहा कि हे हाजिर: तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां वुह
१८ बालक है तहां ईश्वर ने उस के शब्द को सुना है। उठ और उस लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से धर ले कि मैं उस्से
१९ एक बड़ी जाति बनाऊंगा। और ईश्वर ने उस की आंखें खोल दिईं तब उस ने पानी का एक कुआ देखा और उस ने जाके
२० उस पखाल को जल से भरा और उस लड़के को पिलाया। और ईश्वर उस लड़के के साथ था और वुह बढ़ा और बन में रह
२१ किया और धनुषधारी हुआ। और उस ने फ़ारान के बन में निवास किया और उस की माता ने मिस्र देश से उस के लिये एक पत्नी लिई॥

२२ और उस समय में यों हुआ कि अबिमलिक और उस की सेना के प्रधान फीकुल्ल ने अबिरहाम को कहा कि सब कार्य्यों
२३ में जो तू करता है ईश्वर तेरे संग है। और अब यहां मुस्से ईश्वर

की किरिया खा कि मैं तुस्से और तेरे बंश और संतान से छल न करूंगा उस अनुग्रह के समान जो मैं ने तुझ पर किया है मुस्से और
२४ उस भूमि से जिस में तू टिका है करे। तब अबिरहाम बोला कि
२५ मैं किरिया खाऊंगा। और अबिरहाम ने पानी के एक कुए के लिये जिसे अबिमलिक के सेवकों ने बरबस्ती से ले लिया था अबिमलिक
२६ को डपटा। तब अबिमलिक ने कहा कि मैं नहीं जानता किस ने यह काम किया है और आप ने भी तो मुस्से न कहा और
२७ मैं ने भी तो आज ही सुना। और अबिरहाम ने भेड़ और गाय बैल लेके अबिमलिक को दिये और उन दोनों ने नियम बांधा।
२८ । २९ तब अबिरहाम ने झुंड में से सात मेम्ने अलग रक्खे। और अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि आप ने भेड़ के सात मेम्ने
३० क्यों अलग रक्खे हैं। और उस ने कहा इस कारण कि तू उन भेड़ के सात मेम्नों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरी साक्षी होवें
३१ कि मैं ने यह कुआ खोदा है। इस कारण उस ने उस स्थान का नाम बीअरसबअ रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस में
३२ किरिया खाई। सो उन्हों ने बीअरसबअ में नियम बांधा तब अबिमलिक और उस का प्रधान सेनापति फीकुल्ल उठे और फिलिस्तियों के देश में फिर गये॥

३३ तब उस ने बीअरसबअ में कुंज लगाया और वहां सनातन
३४ के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया। और अबिरहाम फिलिस्ती के देश में बहुत दिन लों टिका॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा किई और उसे कहा हे अबिरहाम और वुह बोला कि
२ देख यहां हूं। और उस ने कहा कि तू अपने बेटे को अपने एकलौते इज़हाक को जिसे तू प्यार करता है ले और मोरियाह

के देश में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं
३ तुझे बताऊंगा उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा। तब अबिरहाम
ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने तरुणों
में से दो को और अपने बेटे इज़हाक़ को अपने साथ लिया और
होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके उस स्थान को
४ जो ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी चला गया। तीसरे दिन अबिरहाम
ने अपनी आंखें ऊपर किईं और उस स्थान को दूर से देखा।
५ तब अबिरहाम ने अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं
ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाता हूं और सेवा
६ करके फिर तुम्हारे पास आऊंगा। तब अबिरहाम ने होम की
भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे इज़हाक़ पर लादीं और आग
७ और छुरी अपने हाथ में लिई और दोनों साथ साथ गये। और
इज़हाक़ अपने पिता अबिरहाम से बोला कि हे मेरे पिता और
वुह बोला हे मेरे बेटे मैं यहीं हूं तब उस ने कहा कि देखिये
आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है।
८ और अबिरहाम बोला कि हे मेरे बेटे ईश्वर होम की भेंट के
लिये भेड़ आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चले गये॥
९ और उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब
अबिरहाम ने वहां एक बेदी बनाई और उन लकड़ियों को
वहां चुना और अपने बेटे इज़हाक़ को बांधके उस बेदी में
१० लकड़ियों पर धरा। और अबिरहाम ने छुरी लेके अपने बेटे को
११ घात करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। तब परमेश्वर के
दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम और
१२ वुह बोला यहीं हूं। तब उस ने कहा कि अपना हाथ लड़के
पर मत बढ़ा और उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानता
हूं कि तू ईश्वर से डरता है और तू ने अपने बेटे अपने एकलौते
१३ को मुझसे न रख छोड़ा। तब अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर

करके देखा और क्या देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी में सींगों से अटका हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस मेंढ़े को लिया और होम की भेंट के लिये अपने बेटे की संती
१४ चढ़ाया। और अबिरहाम ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज लों कहा जाता है कि पहाड़
१५ पर परमेश्वर देखा जायगा। फिर परमेश्वर के दूत ने दोहराके
१६ स्वर्ग में से अबिरहाम को पुकारा। और कहा कि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य्य किया और अपने बेटे अपने एकलौते को न
१७ रख छोड़ा। कि मैं तुझे आशीष पर आशीष देऊंगा और आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे बंश को बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने बैरी के फाटक के अधिकारी
१८ होंगे। और तेरे बंश में पृथिवी के सारे जातिगण आशीष
१९ पावेंगे इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है। और अबिरहाम अपने तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीअरसबअ़ को गये और अबिरहाम बीअरसबअ़ में रहा॥

२० और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिरहाम को संदेश पहुंचा कि मिलकः भी तेरे भाई नहूर के लिये बालक जनी।
२१ अर्थात् ऊ़ज़ उस का पहिलौंठा और उस का भाई बूज़ और
२२ क़मूएल अराम का पिता। और कसद और हज़ू और फ़िल्दास
२३ और इद्लाफ और बतूएल। और बतूएल से रिबकः उत्पन्न हुई मिलकः अबिरहाम के भाई नहूर के लिये ये आठ जनी।
२४ और उस की सुरैतिन जिस का नाम रूमह था वुह भी तिबख़ और जहम और ताहाश और मअ़कः जनी॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ और सरः की बय एक सौ सत्ताईस बरस की हुई सरः के

२ जीवन के बरस इतने थे। और सरः करयतअरबअ में जो कनआन देश में हबरून है मर गई तब अबिरहाम सरः के लिये बिलाप करने और रोने को आया॥

३ और अबिरहाम अपने मृतक से उठ खड़ा हुआ और हित्त
४ के बेटों से यह कहिके बोला। कि मैं तुम में परदेशी और टिकवैया हूं तुम अपने यहां मुझे एक समाधि का स्थान अधिकार में दो जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से गाड़ूं॥

५ और हित्त के संतान ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा
६ कि हे हमारे स्वामी हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर के अध्यक्ष हैं सो आप हमारी समाधिन में से चुनके एक में अपने मृतक को गाड़िये हम्में कोई अपनी समाधि आप से न रख छोड़ेगा जिसतें आप अपने मृतक को गाड़ें॥

७ तब अबिरहाम खड़ा हुआ और उस देश के लोगों अर्थात्
८ हित्त के संतान को प्रणाम किया। और उन से बात चीत करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये सुहर के बेटे
९ इफ़रून से बिनती करो। जिसतें वुह मकफील: की कंदला मुझे देवे जो उस खेत के सिवाने पर है उस का पूरा मोल लेके मेरे बश में कर दे जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का अधिकार रक्खूं॥

१० और इफ़रून हित्त के संतान के मध्य में बास करता था और इफ़रून हित्ती ने हित्त के संतान के और सब के सुन्ने में जो नगर के फाटक में जाते थे अबिरहाम को उत्तर में कहा
११ नहीं मेरे स्वामी मेरी सुनिये मैं ने यह खेत आप को दिया है और वुह कंदला जो उस में है आप को दिया है मैं ने अपने लोगों के बेटों के आगे आप को दिया है अपना मृतक गाड़िये।

१२　तब अबिरहाम ने उस देश के लोगों को प्रणाम किया ।
१३ और उस देश के लोगों के सुन्ने में वुह इफरून से यों कहिके बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं ने तुझे उस खेत के लिये रोकड़ दिया है मुस्से ले और मैं अपने मृतक को वहां गाड़ुंगा ॥
१४　तब इफरून ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा ।
१५ मेरे स्वामी मेरी सुनिये उस भूमि का मोल चार सौ शैकल चांदी है यह मेरे और आप के आगे क्या बस्तु है सो आप अपने मृतक को गाड़िये ॥
१६　और अबिरहाम ने इफरून की मान लिई और अबिरहाम ने उस चांदी को इफरून के लिये तौल दिया जो उस ने हित्त के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात् चार सौ शैकल चांदी जिन
१७ की चलन बेपारियों में थी । सो इफरून का खेत जो मकफील: में ममरी के आगे है वुह खेत और कंदला जो उस में है और उस खेत में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस के सिवाने में हैं ।
१८ हित्त के संतान के आगे और सभों के आगे जो नगर के फाटक में से भीतर जाते थे अबिरहाम के अधिकार के लिये दृढ़ किये गये ॥
१९　और इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सर: को मकफील: के खेत की कंदला में जो ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून
२० कनआन देश में है । और वुह खेत और उस में की कंदला हित्त के संतान से अबिरहाम के हाथ में समाधि स्थान के लिये दृढ़ किये गये ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१　और अबिरहाम बृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब
२ बातों में अबिरहाम को बर दिया था । और अबिरहाम ने

अपने घर के पुराने सेवक को जो उस की सारी संपत्ति का प्रधान
३ था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख। और मैं तुझ
से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया
लेऊंगा कि तू कनआनियों की लड़कियों में से जिन के मध्य
४ में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी न लेना। परन्तु तू मेरे
देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे इज़हाक के लिये
पत्नी लीजियो॥

५ और उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वुह स्त्री इस
देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के
बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर ले जाऊं॥

६ तब अबिरहाम ने उसे कहा चैाकस रह तू मेरे बेटे को
७ उधर फिर मत ले जाना। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे
पिता के घर से और मेरे जन्म भूमि से मुझे निकाल लाया और
जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया खाके बोला कि मैं तेरे
बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा
८ और वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना। और यदि वुह
स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट
९ जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा। तब उस
सेवक ने अपना हाथ अपने स्वामी अबिरहाम की जांघ तले
रक्खा और उस बात के बिषय में उस के आगे किरिया खाई॥

१० और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट
लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी संपत्ति
उस के हाथ में थी सो वुह उठा और अरामनहरइम में नहूर
११ के नगर को गया। और उस ने अपने ऊंटों को नगर के बाहर
पानी के कुए के पास सांझ के समय में जब कि स्त्रियां पानी
भरने को बाहर जाती थीं बैठाया॥

१२ और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर

में आप की बिनती करता हूं आज मेरा कार्य्य सिद्ध कीजिये
१३ और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये। देख मैं पानी
के कुए पर खड़ा हूं और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने
१४ आती हैं। तो ऐसा होवे कि वुह कन्या जिसे मैं कहूं कि
अपना घड़ा उतार जिसतें मैं पीऊं और वुह कहे कि पी और
मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास
इज़हाक़ के लिये ठहराया है और इसी से मैं जानूंगा कि तू ने
मेरे स्वामी पर दया किई है॥

१५ और इतनी बात समाप्त न करते ही ऐसा हुआ कि देखो रिबक़:
जो अबिरहाम के भाई नहूर की पत्नी मिलक: के बेटे बतूएल से
उत्पन्न हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली।
१६ और वुह कन्या बहुत रूपवती और कुमारी थी और उस्से पुरुष
अज्ञान था और वुह उस कुए पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर
१७ आई। तब वुह सेवक उस की भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी
१८ बिनती करता हूं अपने घड़े से थोड़ा पानी पिला। और वुह बोली
कि पीजिये मेरे प्रभु और उस ने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतारके
१९ उसे पिलाया। जब उसे पिला चुकी तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये
२० भी जब लों वे जल से तृप्त हों खींचती जाऊंगी। और उस ने
फुरती करके अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कुए पर भरने
२१ को दौड़ी और उस के सब ऊंटों के लिये खींचा। और वुह पुरुष
आश्चर्य्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सुफल किई
है कि नहीं॥

२२ और यों हुआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे
शेकल भर सोने की एक नथ और दस भर सोने के दो खड़वे
२३ उस के हाथों के लिये निकाले। और कहा कि तू किस की बेटी
है मुझे बता मैं तेरी बिनती करता हूं क्या तेरे पिता के घर
२४ में हमारे लिये रात भर टिकने का स्थान है। और उस ने

उसे कहा कि मैं मिलक: के बेटे बतूएल की कन्या हूं जिसे
२५ वुह नहूर के लिये जनी। और उस ने उसे कहा कि हमारे
यहां भूसा चारा भी बहुत है रात भर टिकने का स्थान भी
२६ तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत
२७ किई। और कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर
धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी सच्चाई
बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के
घर की ओर मेरी अगुआई किई॥

२८ तब वुह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में इन
२९ बातों के समान संदेश कहा। और लाबन नाम रिवक: का
एक भाई था और लाबन बाहर कुए पर उस मनुष्य कने
३० दौड़ा। और यों हुआ कि जब उस ने वुह नथ और खड़वे
अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब उस ने अपनी बहिन
रिवक: से ये बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा
तब वुह उस पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वुह
३१ ऊंटों के पास कुए पर खड़ा है। और कहा कि हे परमेश्वर के
आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं
३२ ने घर सिद्ध किया है और ऊंटों के लिये स्थान है। और वुह
पुरुष घर में आया और उस ने अपने ऊंटों के पलान खोले
और ऊंटों के लिये भूसा चारा और उस के और लोगों के जो
३३ उस के साथ थे चरण धोने को जल दिया। और भोजन उस
के आगे रक्खा गया पर वुह बोला कि जब लों मैं अपना संदेश
न पहुंचाऊं मैं न खाऊंगा तब वुह बोला कहिये॥

३४ तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूं
३५ और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बहुत सा बर दिया है और
वुह महान हुआ है और उस ने उसे झुंड और ढोर और
सोना चांदी और दास और दासियां और ऊंट और गदहे दिये

३६ हैं। और मेरे स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये
३७ बेटा जनी और उस ने अपना सब कुछ उसे दिया है। और
मेरे स्वामी ने यह कहके मुझ से किरिया लिई कि तू कनआनियों
की बेटियों में से जिन के देश में मैं रहता हूं मेरे बेटे के
३८ लिये पत्नी मत लीजियो। परन्तु मेरे पिता के घराने और मेरे
३९ कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी लाइयो। और
मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जाने वुह स्त्री मेरे साथ न
४० आवे। तब उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे मैं
चलता हूं अपना दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी याचा सुफल
करेगा और तू मेरे कुटुम्ब और मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे के
४१ लिये पत्नी लीजियो। और जब तू मेरे कुटुम्ब में आवे तब तू
मेरी किरिया से बाहर होगा और यदि वे तुझे न देवें तो तू
४२ मेरी किरिया से बाहर हो जायगा। सो मैं आज के दिन कुए
पर आया और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के
४३ ईश्वर यदि तू अब मेरी याचा सुफल करे। देख मैं जल के कुए
पर खड़ा हूं और यों होगा कि जो कुमारी जल भरने निकले
और मैं उसे कहूं कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने घड़े से
४४ मुझे थोड़ा पानी पिला। और वुह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं
तेरे ऊंटों के लिये भी भरूंगी तो वही वुह स्त्री होवे जिसे परमेश्वर ने
४५ मेरे स्वामी के बेटे के लिये ठहराया है। इतनी बात मेरे मन
में समाप्त न होते ही देखो रिबकः अपने कांधे पर घड़ा लेके
बाहर निकली और वुह कुए पर उतरी और खींचा और मैं ने
४६ उसे कहा कि मुझे पिला। तब उस ने फुरती करके अपना
घड़ा उतारा और बोली कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी
पिलाऊंगी सो मैं ने पिया और उस ने ऊंटों को भी पिलाया।
४७ फिर मैं ने उस्से पूछा और कहा कि तू किस की बेटी है और
वुह बोली कि नहूर के बेटे बतूएल की लड़की जिसे मिलकः

उस के लिये जनी और मैं ने नथ उस की नाक में और खड़वे
४८ उस के हाथों में डाले। और मैं ने अपना सिर झुकाया और
परमेश्वर की स्तुति किई और अपने स्वामी अबिरहाम के ईश्वर
परमेश्वर का धन्य माना जिस ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी
अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई की बेटी उस के बेटे
४९ के लिये लेऊं। सो अब यदि तुम कृपा और सच्चाई से मेरे
स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझ से कहो और
यदि नहीं तो मुझ से कहो कि मैं दहिने अथवा बायें हाथ
फिरूं॥

५० तब लाबन और बतूएल ने उत्तर दिया और कहा कि यह
बात परमेश्वर की ओर से है हम तुझे बुरा अथवा भला नहीं
५१ कहि सक्ते। देख रिबक: तेरे आगे है इसे ले और जा और
जैसा परमेश्वर ने कहा है वुह तेरे स्वामी के बेटे की पत्नी हो।
५२ और ऐसा हुआ कि जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें सुनीं
५३ तब भूमि लों परमेश्वर के आगे दंडवत किई। और सेवक ने
चांदी और सोने के गहने और पहिरावा निकाला और रिबक:
को दिया और उस ने उस के भाई और उस की माता को भी
५४ बहुमूल्य बस्तु दिईं। और उस ने और उस के साथी मनुष्यों
ने खाया और पीया और रात भर ठहरे और वे बिहान को
५५ उठे और उस ने कहा कि मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये। और
उस के भाई और उस की माता ने कहा कि कन्या को हमारे
संग एक दस दिन रहने दीजिये उस के पीछे वुह जायगी।
५६ और उस ने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी
यात्रा सुफल किई है मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी पास
५७ जाऊं। और वे बोले हम उस कन्या को बुलायें और उसी से पूछें।
५८ तब उन्हों ने रिबक: को बुलाया और उसे कहा कि तू इस
५९ पुरुष के साथ जायगी और वुह बोली कि जाऊंगी। सो उन्हों

ने अपनी बहिन रिबक: और उसी की दाई और अबिरहाम के
६० सेवक और उस के लोगों को बिदा किया। और उन्हों ने
रिबक: को आशीष दिया और उसे कहा कि तू हमारी बहिन
है कड़ोरों की माता हो और तेरा बंश उन के द्वारों का जो
उस्से बैर रखते हैं अधिकारी होवे ॥

६१ और रिबक: और उस की सहेलियां उठीं और ऊंटों पर
चढ़के उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रिबक: को
६२ लिया और अपना मार्ग पकड़ा। और इज़हाक़ सजीवन देखनेवाले
के कुए पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वुह दक्खिन देश
६३ में रहता था। और इज़हाक़ संध्याकाल को ध्यान करने के
लिये खेत को निकला और उस ने अपनी आंखें ऊपर किईं और
६४ क्या देखता है कि ऊंट चले आते हैं। और रिबक: ने अपनी
आंखें उठाईं और जब उस ने इज़हाक़ को देखा तो ऊंट पर
६५ से उतर पड़ी। और उस ने सेवक से पूछा कि यह जन जो
खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन है और सेवक ने
कहा कि वुह मेरा स्वामी है और उस ने घूंघट लेके अपने तईं
६६ ढांपा। तब सेवक ने सब कुछ जो उस ने किया था इज़हाक़
६७ से कहा। और इज़हाक़ उसे अपनी माता सर: के तंबू में
लाया और रिबक: को लिया और वुह उस की पत्नी हो गई
और उस ने उसे प्यार किया और इज़हाक़ ने अपनी माता के मरने
के पीछे शान्ति पाई ॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१ तब अबिरहाम ने एक पत्नी लिई और उस का नाम क़तूर:
२ था। और वुह उस के लिये ज़िमरान और युक़सान और मिदान और
३ मिदयान और इसबाक़ और सूख़ को जनी। और युक़सान से
सिबा और ददान उत्पन्न हुए और ददान के बेटे असूर और

४ लतूसी और लौमी थे। और मिदयान के बेटे ऐफः और एफ़र और हनूक और अबिदा और इल्दाआ थे ये सब क़तूरः के
५ बेटे थे। और अबिरहाम ने अपना सब कुछ इज़हाक़ को
६ दिया। परन्तु उन सुरैतिनों के बेटों को जो अबिरहाम की थीं अबिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हें अपने बेटे इज़हाक़ पास से पूरब देश में भेज दिया॥

७ और अबिरहाम के जीवन के दिन जिन में वुह जीता
८ रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे। तब अबिरहाम ने अच्छे बृद्ध बय में परिपूर्ण और बृद्ध मनुष्य होके प्राण त्यागा और अपने
९ लोगों में बटोरा गया। और उस के बेटे इज़हाक़ और इसमअऐल ने मकफील: की कंदला में हित्ती सुहर के बेटे
१० इफ़रून के खेत में जो ममरी के आगे है उसे गाड़ा। यही खेत अबिरहाम ने हित्त के बेटों से मोल लिया था अबिरहाम
११ और उस की पत्नी सर: वहीं गाड़े गये। और अबिरहाम के मरने के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने उस के बेटे इज़हाक़ को आशीष दिया और इज़हाक़ सजीवन देखवैया के कुए के पास रहता था॥

१२ और अबिरहाम के बेटे इसमअऐल की बंशावली जिसे सर: की लौंड़ी मिस्री हाजिर: अबिरहाम के लिये जनी थी ये हैं।
१३ और उन की बंशावली की रीति के समान इसमअऐल के बेटों के नाम ये हैं इसमअऐल का पहिलौंठा नबीत और क़ीदार
१४ और अदबिएल और मिबसाम। और मिसमाअ और दूमः और
१५ मस्सा। हदर और तैमा इतूर नफीस और क़िदिमः
१६ ये इसमअऐल के बेटे हैं और उन के नाम उन की बसतियों और उन की गढ़ियों में ये हैं ये अपनी जातिगणों के बारह
१७ अध्यक्ष थे। और इसमअऐल के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे कि उस ने अपना प्राण त्यागा और मर गया और अपने

१८ लोगों में बटुर गया। और वे हवील: से सूर लों जो असूर के मार्ग में मिस्र के आगे है बसते थे उस ने अपने सारे भाइयों के आगे बास किया॥

१९ और अबिरहाम के बेटे इज़्हाक की बंशावली यह है कि २० अबिरहाम से इज़्हाक उत्पन्न हुआ। और इज़्हाक ने चालीस बरस की बय में रिबक: से बिवाह किया वुह फद्दानअराम के सुरियानी बतूएल की बेटी और सुरियानी लाबन की बहिन २१ थी। और इज़्हाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती किई क्योंकि वुह बांझ थी और परमेश्वर ने उस की बिनती मानी २२ और उस की पत्नी रिबक: गर्भिणी हुई। और उस के पेट में बालक आपुस में छेड़ा छेड़ी करने लगे तब उस ने कहा यदि २३ यों तो ऐसी क्यों हों और वुह परमेश्वर से बूझने को गई। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरी कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे २४ लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ की सेवा करेगा। और जब उस के जन्ने के दिन पूरे हुए तो देखो कि उस के गर्भ में २५ जमल थे। सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और उन्हों ने उस २६ का नाम एसौ रक्खा। और उस के पीछे उस का भाई निकला और उस का हाथ एसौ की एड़ी से लगा हुआ था और उस का नाम यअकूब रक्खा गया जब वुह उन्हें जनी तो इज़्हाक की बय साठ बरस की थी॥

२७ और लड़के बढ़े और एसौ चतुर अहेरी और खेत का रहवैया २८ था और यअकूब सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता था। और इज़्हाक एसौ को प्यार करता था क्योंकि वुह उस के अहेर से २९ खाता था परन्तु रिबक: यअकूब को प्यार करती थी। और यअकूब ने लपसी पकाई और एसौ खेत से आया और वुह थक

के उन कुओं को जो उन्हों ने उस के पिता अबिरहाम के दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तियों ने अबिरहाम के मरने के पीछे उन्हें ढांप दिया था और उस ने उन के वही
१९ नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे। और इज़हाक के सेवकों ने तराई में खोदा और वहां एक कुआ जिस में जल
२० का सोता था पाया। और जिरार के चरवाहों ने इज़हाक के चरवाहों से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उन के झगड़ा करने के कारण उस ने उस कुए का नाम
२१ झगड़ रक्खा। और उन्हों ने दूसरा कुआ खोदा और उस के लिये भी झगड़ा हुआ और उस ने उस का नाम बिरोध रक्खा॥
२२ और वुह वहां से आगे चला और दूसरा कुआ खोदा और उन्हों ने उस के लिये झगड़ा न किया और उस ने उस का नाम फैलाव रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने हम को फैलाया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे॥
२३। २४ और वुह वहां से बीअरसबअ को गया। और परमेश्वर ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अबिरहाम का ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीष देऊंगा और अपने दास अबिरहाम के लिये तेरा बंश बढ़ाऊंगा।
२५ और उस ने वहां एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इज़हाक के सेवकों ने वहां एक कुआ खोदा॥
२६ तब जिरार से अबिमलिक और एक उस के मित्रों में से
२७ अख़ूजत और उस के सेनापति फीकुल्ल उस पास गये। और इज़हाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास
२८ से निकाल दिया है। और वे बोले कि देखते हुए हम ने देखा कि परमेश्वर तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और

२९ तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ बाचा बांधें। जैसा हम ने तुझे नहीं छुआ और तुझ से भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझे कुशल से भेजा तू भी हमें न सता तू अब
३० परमेश्वर का आशीषित है। और उस ने उन के लिये जेवनार
३१ बनाया और उन्हों ने खाया पीया। और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इज़हाक़ ने उन्हें बिदा
३२ किया और वे उस पास से कुशल से गये। और उसी दिन यों हुआ कि इज़हाक़ के सेवक आये और अपने खोदे हुए कुए के
३३ बिषय में कहा और बोले कि हम ने जल पाया। सो उस ने उस का नाम सबअ़ रक्खा इस लिये उस नगर का नाम आज लों बीअरसबअ़ है॥

३४ और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने हत्ती बीअरी की बेटी यहूदियत को और हत्ती एलून की बेटी
३५ बशामत को पत्नी किया। और वुह इज़हाक़ और रिबक़: के लिये मन के कड़वाहट का कारण हुईं॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब इज़हाक़ बूढ़ा हुआ और उस की आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वुह देख न सक्ता था तो उस ने अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और उस्से कहा कि हे मेरे
२ बेटे और वुह उस्से बोला देखो यहीं हूं। तब उस ने कहा कि देखिये मैं बूढ़ा हूं और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता।
३ सो अब तू अपना हथियार अर्थात् अपनी निखंग और अपना धनुष लीजिये और बन को जाइये और मेरे लिये अहेर कर।
४ और मेरी रुचि के समान स्वादित भोजन पकाके मेरे पास ला और मैं खाऊंगा जिसतें अपने मरने के आगे मेरा प्राण तुझे
५ आशीष देवे। और जब इज़हाक़ अपने बेटे एसौ से बातें

करता था तब रिबक: ने सुना और जब एसौ बन में गय
कि अहेर करे और लाये ॥

६ तब रिबक: ने अपने बेटे यअ़कूब से कहा कि देख मैं ने
७ तेरे भाई एसौ से तेरे पिता को यह कहते सुना। कि मे
लिये अहेर का मांस ला और मेरे लिये स्वादित भोज
पका और मैं खाऊंगा और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के
८ आगे तुझे आशीष देऊंगा। सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा
९ के समान मेरी बात को मान। अब झुंड में जाइये और वह
से बकरी के दो अच्छे मेम्ने मेरे लिये लीजिये और मैं ते
१० पिता की रुचि के समान उन से स्वादित भोजन बनाऊंगी। और तू
अपने पिता के पास ले जाइयो जिसतें वुह खाय और अप
मरने से आगे तुझे आशीष देवे ॥

११ तब यअ़कूब ने अपनी माता रिबक: से कहा देख मेर
भाई एसौ रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना मनुष्य हूं
१२ कदाचित्त मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस की दृष्टि मे निन्द
की नाईं ठहरूं और आशीष नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं
१३ तब उस की माता ने उसे कहा कि तेरा स्राप मुझ पर होवे
मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और जाके मेरे लिये ले
१४ सो वुह गया और लिया और अपनी माता पास लाया और उ
की माता ने उस के पिता की रुचि के समान स्वादित भोजन बनाया

१५ और रिबक: ने घर में से अपने जेठे बेटे एसौ का अच्छ
पहिरावा लिया और अपने छोटे बेटे यअ़कूब को पहिनाया
१६ और बकरी के मेम्नों का चमड़ा उस के हाथों और उस
१७ गले की चिकनाई पर लपेटा। और अपना बनाया हुआ स्वादि
भोजन और रोटी अपने बेटे यअ़कूब के हाथ दिई ॥

१८ और वुह अपने पिता के पास जाके बोला हे मेरे पिता औ
१९ वुह बोला मैं यहां हूं तू कौन है हे मेरे बेटे। तब यअ़कू

अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलौंठा एसौ हूं आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरे अहेर के मांस में से खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे। २० तब इज़हाक ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है कि तू ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे और वुह बोला इस लिये कि २१ परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे आगे लाया। तब इज़हाक ने यअ़्क़ूब से कहा कि हे मेरे बेटे मेरे पास आइये जिसतें मैं २२ तुझे टटोलूं कि निश्चय तू मेरा बेटा एसौ है कि नहीं। तब यअ़्क़ूब अपने पिता इज़हाक पास गया और उस ने उसे टटोलके कहा कि शब्द तो यअ़्क़ूब का शब्द है पर हाथ २३ एसौ के हाथ हैं। और उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस के हाथ उस के भाई एसौ के हाथों की नाईं रोंआर थे सो उस २४ ने उसे आशीष दिया। और कहा कि तू मेरा वही बेटा एसौ २५ ही है और वुह बोला कि मैं वही हूं। और उस ने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे के अहेर के मांस से खाऊं जिसतें मेरा प्राण तुझे आशीष दे सो वुह उस पास लाया और उस ने खाया और वुह उस के लिये दाखरस लाया और उस २६ ने पीया। तब उस के पिता इज़हाक ने उसे कहा कि हे मेरे २७ बेटे अब पास आ और मुझे चूम। और वुह पास आया और उसे चूमा और उस ने उस के पहिरावा की बास पाई और उसे आशीष दिया और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत २८ के गंध की नाईं है जिस पर परमेश्वर ने आशीष दिया है। और ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और २९ बहुत से अन्न और दाखरस देवे। लोग तेरी सेवा करें और जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयों का प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे स्रापे सो स्रापित और जो तुझे आशीर्बाद देवे सो आशीषित होवे॥

३० और यों हुआ कि ज्योंहीं इज़हाक़ यअ़कूब को आशीष दे चुका और यअ़कूब के अपने पिता इज़हाक़ के आगे से बाहर
३१ जाते ही उस का भाई एसौ अपनी अहेर से फिरा। और उस ने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास लाया और अपने पिता से कहा मेरा पिता उठे और अपने बेटे के अहेर के
३२ मांस में से खाये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे। तब उस के पिता इज़हाक़ ने उसे कहा कि तू कौन है और वुह
३३ बोला कि मैं आप का बेटा आप का पहिलौंठा एसौ हूं। तब इज़हाक़ बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वुह तो कौन था और कहां है जो अहेर करके मुझ पास अहेर का मांस लाया और मैं ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे
३४ आशीष दिया है हां वुह अशीषित होगा। एसौ अपने पिता की ये बातें सुनके बहुत चिल्लाया और फूट फूटके रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीष दीजिये।
३५ और वुह बोला कि तेरा भाई छल से आया और तेरा आशीष
३६ ले गया। तब उस ने कहा क्या उस का नाम ठीक यअ़कूब नहीं कहावता क्योंकि उस ने दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस ने मेरा जन्म पद ले लिया और देखो अब उस ने मेरा आशीष लिया है और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीष
३७ नहीं रख छोड़ा। तब इज़हाक़ ने एसौ को उत्तर देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उस के सारे भाइयों को उस की सेवकाई में दिया और अन्न और दाखरस से उस को
३८ सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं क्या करूं। तब एसौ ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या आप पास एक ही आशीष है हे मेरे पिता मुझे मुझे भी आशीष दीजिये और एसौ
३९ चिल्ला चिल्ला रोया। तब उस के पिता इज़हाक़ ने उत्तर दिया और उसे कहा कि देख भूमि की चिकनाई और ऊपर से आकाश

४० की ओस में तेरा तंबू होगा। और तू अपने खड्ग से जीयेगा और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू घूमता फिरता रहेगा तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा॥

४१ सो उस आशीष के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया था एसौ ने यअक़ूब का बैर रक्खा और एसौ ने अपने मन में कहा कि मेरे पिता के शोक के दिन आते हैं और मैं अपने भाई
४२ यअक़ूब को मार डालूंगा। और रिबक़: को उस के जेठे बेटे एसौ की ये बातें कही गईं तब उस ने अपने छुटके बेटे यअक़ूब को बुला भेजा और उसे कहा कि देख तेरा भाई एसौ तुझे
४३ घात करने को तेरे बिषय में अपने को शान्ति देता है। सो अब हे मेरे बेटे तू मेरा कहा मान और उठ मेरे भाई लाबन
४४ पास हरान को भाग जा। और थोड़े दिन उस के साथ रह
४५ जब लों तेरे भाई का कोप जाता रहे। जब लों तेरे भाई का क्रोध तुझ से न फिरे और जो तू ने उस्से किया है सो भूल जाय तब मैं तुझे वहां से बुला भेजूंगी किस लिये एकही दिन में तुम दोनों को खोऊं॥

४६ तब रिबक़: ने इज़हाक से कहा कि मैं हित्त की बेटियों के कारण अपने जीवन से सकेत हूं सो यदि यअक़ूब हित्त की बेटियों में से जैसी इस देश की लड़कियां हैं लेवे तो मेरे जीवन से क्या फल है॥

अठाईसवां पर्ब्ब ।

१ और इज़हाक ने यअक़ूब को बुलाया और उसे आशीष दिया और उसे आज्ञा दिई और उसे कहा कि तू कनआनी लड़कियों
२ में से पत्नी न लेना। उठ फ़द्दानअराम में अपने नाना बतूएल के घर जा और वहां से अपने मामू लाबन की लड़कियों में से
३ पत्नी ले। और सर्बसामर्थी सर्बशक्तिमान तुझे आशीष देवे और

तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तू लोगों की मंडली
४ होवे। और अबिरहाम का आशीष तुझे और तेरे संग तेरे बंश
को देवे जिसतें तू अपनी टिकाव की भूमि को जो ईश्वर ने
५ अबिरहाम को दिई अधिकार में पावे। तब इज़हाक ने यअक़ूब
को बिदा किया और वुह फ़द्दानअराम में सुरियानी बतूएल के
बेटे लाबन पास गया जो यअक़ूब और एसौ की माता रिबक:
का भाई था॥

६ और एसौ ने जब देखा कि इज़हाक ने यअक़ूब को आशीष
दिया और उसे फ़द्दानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और
उस ने उसे आशीष देके और आज्ञा देके कहा कि तू कनआन
७ की लड़कियों में से पत्नी न लेना। और यअक़ूब ने अपने
८ पिता माता की बात मानी और फ़द्दानअराम को गया। और
एसौ ने यह भी देखा कि कनआनी लड़कियां मेरे पिता की दृष्टि
९ में बुरी हैं। तब एसौ इसमअएल कने गया और अबिरहाम के
बेटे इसमअएल की बेटी महलत को जो नबीत की बहिन थी
अपनी पत्नियों में लिया॥

१० और यअक़ूब बीअरसबअ से निकलके हरान की ओर गया।
११ और एक स्थान में टिका और रात भर रहा क्योंकि सूर्य्य अस्त
हुआ था और उस ने उस स्थान के पत्थरों में से लिया और
१२ अपना उसीसा किया और वहां सोने को लेट गया। और उस
ने स्वप्न देखा और देखो कि एक सीढ़ी पृथिवी पर धरी है और
उस की टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि ईश्वर
१३ के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। और देखो कि परमेश्वर
उस के ऊपर खड़ा है और बोला कि मैं परमेश्वर तेरे पिता
अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का ईश्वर हूं मैं यह भूमि
१४ जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरे बंश को देऊंगा। और तेरे
बंश पृथिवी की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम और पूरब

और उत्तर और दक्षिण को फूट निकलेगा और तुझ में और तेरे
१५ बंश में पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे। और देख मैं तेरे
साथ हूं और सर्बच जहां कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करूंगा
और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा क्योंकि जब लों मैं तुझ से
अपना कहा हुआ पूरा न कर लेऊं तुझे न छोड़ूंगा॥

१६ तब यअ़क़ूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय
१७ परमेश्वर इस स्थान में है और मैं न जानता था। तब वुह
डर गया और बोला कि यह क्या ही भयानक स्थान है ईश्वर के
घर को छोड़ यह और कुछ नहीं है और यह स्वर्ग का फाटक
१८ है। और यअ़क़ूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को
जिसे उस ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और
१९ उस पर तेल ढाला। और उस स्थान का नाम बैतएल रक्खा
२० पर उस्से पहिले उस नगर का नाम लौज़ था। और यअ़क़ूब
ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और
मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो और मुझे खाने को रोटी
२१ और पहिन्ने को कपड़ा देवे। ऐसा कि मैं अपने पिता के घर
२२ कुशल से फिर आऊं तब परमेश्वर मेरा ईश्वर होगा। और यह
पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का घर होगा और
सब में से जो तू मुझे देगा उस्से दसवां भाग अवश्य तुझे
देऊंगा॥

उन्तीसवां पर्ब्ब।

१ तब यअ़क़ूब ने अपने पांव उठाये और पूरबी पुत्रों के देश
२ में आया। और उस ने दृष्टि किई और देखो खेत में एक कुआ
है और देखो वहां उस के लग भेड़ बकरी के तीन झुंड बैठे
हुए हैं क्योंकि वे उसी कुए से झुंडों को पानी पिलाते थे और
३ उस कुए के मुंह पर बड़ा पत्थर धरा था। और वहां सारी झुंड

एकट्ठी होती थीं ओर वे उस पत्थर को कुए के मुंह पर से ढुलका देते थे ओर भेड़ बकरियों को पानी पिलाके पत्थर को ४ कुए के मुंह पर उस के स्थान में फिर रखते थे। तब यअ़क़ूब ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम कहां के हो ओर वे बोले ५ कि हम हरान के हैं। ओर उस ने उन से कहा क्या तुम नहूर ६ के बेटे लाबन को जानते हो ओर वे बोले जानते हैं। ओर उस ने उन से कहा क्या वुह कुशल से है ओर वे बोले कि कुशल से है ओर देख उस की बेटी राख़िल भुंडों के साथ आती ७ है। तब वुह बोला देखो दिन अभी बहुत है ढोरों के एकट्ठे करने का समय नहीं तुम भुंडों को पानी पिलाके चराई पर ले ८ जाओ। ओर वे बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे भुंड एकट्ठे न होवें ओर पत्थर को कुए के मुंह पर से न ढुलकावें तब हम भुंडों को पानी पिलाते हैं॥

९ वुह उन से यह कह रहा था कि राख़िल अपने पिता की १० भुंडों को लेके आई। क्योंकि वुह उन की रखवालनी थी ओर यों हुआ कि यअ़क़ूब अपने मामू लाबन की बेटी राख़िल को ओर अपने मामू लाबन की भुंडों को देखके पास गया ओर पत्थर को कुए के मुंह पर से ढुलकाया ओर अपने मामू लाबन की ११ भुंडों को पानी पिलाया। ओर यअ़क़ूब ने राख़िल को चूमा १२ ओर चिल्लाके रोया। ओर यअ़क़ूब ने राख़िल से कहा कि मैं तेरे पिता का कुटुम्ब ओर रिबक: का बेटा हूं ओर उस ने १३ दौड़के अपने पिता से कहा। ओर यों हुआ कि जब लाबन ने अपने भांजे यअ़क़ूब का समाचार सुना तो उस्से मिलने को दौड़ा ओर उसे गले लगाया ओर उसे चूमा ओर उसे अपने घर १४ लाया ओर उस ने ये सारी बातें लाबन से कहीं। तब लाबन ने उसे कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी ओर मेरा मांस है ओर वुह एक मास भर उस के यहां रहा॥

१५ तब लाबन ने यअ़क़ूब से कहा कि मेरा भाई होने के कारण क्या तू सेंत से मेरी सेवा करेगा मुझ से कह मैं तुझे
१६ क्या देऊं। और लाबन की दो बेटियां थीं जेठी का नाम
१७ लियाह और लहुरी का नाम राख़िल था। और लियाह की आंखें चुन्धली थीं परन्तु राख़िल सुन्दरी और रूपवती थी।
१८ और यअ़क़ूब राख़िल को प्यार करता था और उस ने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राख़िल के लिये मैं सात बरस तेरी सेवा करूंगा।
१९ तब लाबन बोला कि उसे दूसरे के देने से तुझी को देना भला
२० है मेरे साथ रह। और यअ़क़ूब ने सात बरस लों राख़िल के लिये सेवा किई और उस प्रीति के मारे जो वुह उस्से रखता था थोड़े दिन की नाईं समझ पड़े॥

२१ और यअ़क़ूब ने लाबन से कहा कि मेरी पत्नी मुझे दीजिये
२२ क्योंकि मेरे दिन पूरे हुए और मैं उसे ग्रहण करूंगा। तब लाबन ने वहां के सारे मनुष्यों को एकट्ठा करके जेवनार किया।
२३ और सांझ को यों हुआ कि वुह अपनी बेटी लियाह को उस
२४ पास लाया और उस ने उसे ग्रहण किया। और दासी के लिये लाबन ने अपनी दासी ज़िलफ़ः को अपनी बेटी लियाह को
२५ दिया। और ऐसा हुआ कि बिहान को क्या देखता है कि लियाह है तब उस ने लाबन को कहा कि आप ने यह मुझ से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राख़िल के लिये नहीं
२६ किई सो आप ने किस लिये मुझे छला। तब लाबन ने कहा कि हमारे देश का यह व्यवहार नहीं कि लहुरी को जेठी से
२७ पहिले ब्याह देवें। इस का अठवारा पूरा कर और तेरी और भी सात बरस की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे॥

२८ और यअ़क़ूब ने ऐसा ही किया और इस का अठवारा पूरा किया तब उस ने अपनी बेटी राख़िल को उसे पत्नी में दिया।
२९ और लाबन ने अपनी दासी बिलहः को अपनी बेटी राख़िल

३० की दासी होने के लिये दिया। तब यअ़क़ूब ने राख़िल के भी ग्रहण किया और वुह राख़िल को लियाह से अधि प्यार करता था और सात बरस अधिक उस ने उस की से किई॥

३१ और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह घिनित हुई त

३२ उस ने उस की कोख खोली और राख़िल बांझ रही। औ लियाह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का ना रूबिन रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मे

३३ दुःख पर दृष्टि किई है कि अब मेरा पति मुझे प्यार करेगा। औ वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली इस लि कि परमेश्वर ने मेरा घिनित होना सुनके मुझे इसे भी दि

३४ सो उस ने उस का नाम समऊ़न रक्खा। और फिर वुह गर्भि हुई और बेटा जनी और बोली कि इस बार मेरा पति मुझ मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तीन बेटे जनी इस लि

३५ उस का नाम लेवी रक्खा गया। और वुह फिर गर्भिणी हु और बेटा जनी और बोली कि अब मैं परमेश्वर की स्तु करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदाह रक्खा औ जन्ने से रह गई॥

तीसवां पर्ब्ब।

१ और जब राख़िल ने देखा कि यअ़क़ूब का बंश मुझ नहीं होता तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया औ यअ़क़ूब को कहा कि मुझे बालक दे नहीं तो मैं मर जाऊंग

२ तब राख़िल पर यअ़क़ूब का क्रोध भड़का और उस ने क क्या मैं ईश्वर की संती हूं जिस ने तुझे कोख के फल से अल

३ रक्खा। और वुह बोली देख मेरी दासी बिलहः है उसे ग्रह कर और वुह मेरे घुठनों पर जनेगी और मैं भी उस्से ब

४ जाऊंगी। और उस ने उसे अपनी दासी बिलहः को पत्नी के लिये दिया और यअक़ूब ने उसे ग्रहण किया॥
५ और बिलहः गर्भिणी हुई और यअक़ूब के लिये बेटा जनी।
६ तब राख़िल बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार किया है और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस लिये उस ने उस
७ का नाम दान रक्खा। और राख़िल की दासी बिलहः फिर
८ गर्भिणी हुई और यअक़ूब के लिये दूसरा बेटा जनी। और राख़िल बोली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मलयुद्ध किया और जीता और उस ने उस का नाम नफ़ताली रक्खा॥
९ और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्ने से रह गई तो उस ने अपनी दासी ज़िलफ़ः को लेके यअक़ूब को पत्नी के लिये
१० दिया। सो लियाह की दासी ज़िलफ़ः भी यअक़ूब के लिये
११ एक बेटा जनी। तब लियाह बोली कि जथा आती है और
१२ उस ने उस का नाम जद रक्खा। फिर लियाह की दासी
१३ ज़िलफ़ः यअक़ूब के लिये एक दूसरा बेटा जनी। और लियाह बोली कि मैं धन्य हूं क्योंकि पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और उस ने उस का नाम यशर रक्खा॥
१४ और गेहूं के लवने के समय में रूबिन गया और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया तब राख़िल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे का दूदाफल
१५ मुझे दे। तब उस ने उस्से कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी लिया चाहती है और राख़िल बोली इस लिये वुह आज रात
१६ तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ रहेगा। और जब यअक़ूब सांझ को खेत से आया तब लियाह उसे आगे से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल

देके आप को भाड़े में लिया है से वुह उस रात उस के साथ
रहा ॥
१७ और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वुह गर्भिणी हुई और
१८ यअ़कूब के लिये पांचवां बेटा जनी। और लियाह बोली कि
ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति के
अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम इशकार रक्खा।
१९ और लियाह फिर गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये छठवां
२० बेटा जनी। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया
है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छः
२१ बेटे जनी और उस ने उस का नाम ज़बूलून रक्खा। और अंत
में वुह बेटी जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा ॥
२२ और ईश्वर ने राख़िल को स्मरण किया और ईश्वर ने उस
२३ की सुनी और उस की कोख को खोला। और वुह गर्भिणी हुई
और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई
२४ और उस ने उस का नाम यूसुफ़ रक्खा और बोली कि परमेश्वर
मुझे दूसरा बेटा भी देवेगा ॥
२५ और जब राख़िल से यूसुफ़ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि
यअ़कूब ने लाबन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये और मैं
२६ अपने स्थान और अपने देश को जाऊंगा। मेरी स्त्रियां और
मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा किई है मुझे
दीजिये और मैं जाऊंगा क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप
की कैसी सेवा किई है ॥
२७ तब लाबन ने उसे कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पाया है तो रह जा मैं ने देख लिया है कि परमेश्वर ने तेरे
२८ कारण से मुझे आशीष दिया है। और उस ने कहा कि अब
२९ तू अपनी बनी मुझ से ठहरा ले और मैं तुझे देऊंगा। तब
उस ने उसे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की

३० सेवा किई है और आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे। क्योंकि मेरे आने से आगे तेरा थोड़ा सा था पर झुंड के झुंड हो गये हैं और मेरे आने से परमेश्वर ने आप को आशीष दिया है और अब मैं भी अपने घर के लिये कब ठिकाना करूंगा॥

३१ और वुह बोला कि मैं तुझे क्या देऊं और यअक़ूब ने कहा कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो ३२ मैं आप के झुंड को फिर चराऊंगा और रखवाली करूंगा। मैं आज आप के सारे झुंड में से चल निकलूंगा और भेड़ों में से सारी फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को और बकरियों में से फुटफुटियों और चितकबरियों को अलग करूंगा। ३३ और मेरी बनी वैसी होगी। और कल को मेरा धर्म्म मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी बनी आप के आगे आवे तो वुह जो बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न हो तो वुह मेरे पास चोरी की गिनी जाय॥

३४ तब लाबन बोला देख मैं चाहता हूं कि जैसा तू ने कहा तैसा ही होवे॥

३५ और उस ने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरे और सब चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात् हर एक जिस में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई और ३६ उन्हें अपने बेटों के हाथ सौंप दिया। और उस ने अपने और यअक़ूब के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और यअक़ूब लाबन के उबरे हुए झुंडों को चराया किया॥

३७ और यअक़ूब ने हरे लुबने और बादाम और अरमन की हरी छड़ियां ले ले उन्हें गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की ३८ उजलाई प्रगट हुई। और जब झुंड पानी पीने को आती थीं तब वुह उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे कठरों और नालियों में धरता था कि जब वे सब पीने आवें

३९ तो गर्भिणी होवें। और छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी हुईं और
४० झुंड पट्टेवाले और फुटफुटियां और चितकबरे बच्चे जनीं। और
यअकूब ने मेम्नों को अलग किया और झुंड के मुंह को चितकबरे
के और भूरों के जो लाबन की झुंड में थे किया और उस ने
अपने झुंड को अलग किया और लाबन के झुंड में न मिलाया।
४१ और यों हुआ कि जब पुष्ट ढोर गर्भिणी होती थी तो यअकूब
छड़ियों को नालियों में उन के आगे रखता था कि वे उन
४२ छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें। पर जब दुर्बल ढोर आते
वुह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल दुर्बल लाबन की और
मोटी मोटी यअकूब की हुईं और उस पुरुष की अत्यंत बढ़ती
हुई और वुह बहुत पशु और दास और दासियों और ऊंटों और
गदहों का स्वामी हुआ॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने लाबन के बेटों को ये बातें कहते सुना कि
यअकूब ने हमारे पिता का सब कुछ ले लिया और हमारे पित
२ की संपत्ति से यह सब बिभव प्राप्त किया। और यअकूब
लाबन का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों
नाईं वुह मेरी ओर नहीं है॥

३ और परमेश्वर ने यअकूब से कहा कि तू अपने पितरों और
अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग होऊंगा।
४ तब यअकूब ने राख़िल और लियाह को अपनी झुंड पास खे
५ में बुला भेजा। और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि तुम्ह
पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु मेरे पित
६ का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ। और तुम जानती हो कि
७ ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की सेवा किई है। और
तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दस बार मेरी बनी बद

८ दिई पर ईश्वर ने मुझे दुःख देने को उसे न छोड़ा। यदि वुह यों बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुटियां जने और यदि उस ने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में
९ होंगी तो ढोर पट्टेवाले जने। यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर
१० लिये और मुझे दिये। और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी होते थे तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा और क्या देखता हूं कि मेढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये
११ और चितकबरे थे। और ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा
१२ कि हे यअकूब और मैं बोला कि यहीं हूं। तब उस ने कहा कि अपनी आंखें उठाइये और देख कि सारे मेढ़े जो भेड़ों पर चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो
१३ कुछ लाबन ने तुझ से किया मैं ने सब देखा है। बैतएल का सर्बशक्तिमान जहां तू ने खंभे पर तेल डाला जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा और अपने कुटुम्ब के देश को फिर जा॥

१४ तब राख़िल और लियाह ने उत्तर देके उसे कहा क्या अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा अधिकार
१५ है। क्या हम उस के लेखे पराये नहीं गिने जाते हैं क्योंकि उस ने तो हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़ भी खा बैठा
१६ है। परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमें दिया वही हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है सो करिये॥

१७ तब यअकूब ने उठके अपने बेटों और अपनी पत्नियों को
१८ ऊंटों पर बैठाया। और अपने सब चौपाए और अपनी सब सामग्री जो उस ने पाई थी अपनी कमाई के चौपाए जो उस ने फ़द्दानअराम में पाये थे ले निकला जिसतें कनआन देश में
१९ अपने पिता इज़हाक़ पास जावे। और लाबन अपनी भेड़ों को

रोम कतरने को गया और राख़िल ने अपने पिता की मूर्त्तें चुरा
२० लिईं। और यअ़क़ूब अरामी लाबन से अचानक चुराके भागा
२१ यहां लों कि वुह उस्से न कहिके भागा। सो वुह अपना सब
कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उतर गया और अपना
मुंह जिलिअ़द पहाड़ की ओर किया॥
२२ और यअ़क़ूब के भागने का संदेश लाबन को तीसरे दिन
२३ पहुंचा। सो वुह अपने भाइयों को अपने संग लेके सात दिन
के मार्ग लों उस के पीछे गया और जिलिअ़द पहाड़ पर उसे
२४ जा लिया। परन्तु ईश्वर अरामी लाबन कने स्वप्न में रात को
आया और उसे कहा कि चौकस रह तू यअ़क़ूब को भला बुरा
२५ मत कहना। तब लाबन ने यअ़क़ूब को जा लिया और
यअ़क़ूब ने अपना डेरा पहाड़ पर किया था और लाबन ने
अपने भाइयों के साथ जिलिअ़द पहाड़ पर डेरा खड़ा किया॥
२६ तब लाबन ने यअ़क़ूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू
एका एक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की
२७ बंधुआई की नाईं ले चला। तू किस लिये चुपके से भागा और
चोरी से मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं
तुझे आनन्द मंगल ढोल और रागों और बीणा के साथ बिदा
२८ करता। और तू ने मुझे अपने बेटों और अपनी बेटियों को
२९ चूमने न दिया अब तू ने मूर्खता से यह किया है। तुम्हें दुःख
देने को मेरे बश में है परन्तु तुम्हारे पिता के ईश्वर ने कल
रात मुझे यों कहा कि चौकस रह तू यअ़क़ूब को भला बुरा
३० मत कहना। और अब तो तुझे निश्चय जाना है क्योंकि तू
अपने पिता के घर का निपट अभिलाषी है तू ने किस लिये
मेरे देवों को चुराया है॥
३१ और यअ़क़ूब ने उत्तर दिया और लाबन से कहा क्योंकि मैं
डरता था क्योंकि मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी पुत्रियां

२ बरबस मुझ से छीन लेंगे। जिस किसी के पास आप अपने देवों को पावें उसे जीता मत छोड़िये हमारे भाइयों के आगे देख लीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि यअ़क़ूब न जानता था कि राख़िल ने उन्हें चुराया था॥

३ और लाबन यअ़क़ूब के तंबू में गया और लियाह के तंबू में और दोनों दासियों के तंबू में परन्तु न पाया तब वुह ४ लियाह के तंबू से बाहर जाके राख़िल के तंबू में गया। और राख़िल मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की पलान में रखके उन पर बैठी थी और लाबन ने सारे तंबू को देख लिया और न पाया। ५ तब उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस्से अप्रसन्न न होवें कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीति है सो उस ने ढूंढ़ा पर मूर्त्तिन को न पाया॥

६ और यअ़क़ूब क्रुद्ध हुआ और लाबन से बिवाद करके उत्तर दिया और लाबन को कहा कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध ७ है कि आप इस रीति से मेरे पीछे झपटे। आप ने जो मेरी सारी सामग्री ढूंढ़ी आप ने अपने घर की सामग्री मे क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आगे रखिये जिसतें वे हम ८ दोनों के मध्य में बिचार करें। यह बीस बरस जो मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का गर्भ न गिरा और ९ मैं ने आप की झुंड के मेंढ़े नहीं खाये। वुह जो फाड़ा गया मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उठाई तू ने मेरे हाथ से उसे मांगा जो दिन को अथवा रात को चोरी गया। १० मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात ११ को पाला से और मेरी आंखों से मेरी नींद जाती रही। यों मुझे आप के घर में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप की दोनों बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये

आप की सेवा किई और आप ने दस बार मेरी बनी बद
४२ डाली। यदि मेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर औ
इज़हाक़ का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अ
छूंछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे हाथों
परिश्रम को देखा है और कल रात आप को डांटा॥

४३ तब लाबन ने उत्तर दिया और यअ़क़ूब से कहा कि
बेटियां मेरी बेटियां और ये बालक मेरे बालक और ये चौपा
मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है मेरे हैं और आज
दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के लड़कों से जो वे ज
४४ हैं क्या कर सक्ता हूं। सो अब आ मैं और तू आपुस में ए
बाचा बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे॥

४५ तब यअ़क़ूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया
४६ और यअ़क़ूब ने अपने भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा क
तब उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्
४७ ने उसी ढेर पर खाया। और लाबन ने उस का ना
यग्रसहदुता रक्खा परन्तु यअ़क़ूब ने उस का नाम जिलिअ़
रक्खा॥

४८ और लाबन बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ
और तुझ में साक्षी है इस लिये उस का नाम जिलिअ़
४९ रक्खा। और मिसपा क्योंकि उस ने कहा कि जब हम आप
से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे
५० जो तू मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा जो तू मेरी बेटि
से अधिक स्त्रियां करे तो हमारे साथ कोई दूसरा नहीं दे
५१ ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है। और लाबन ने यअ़क़ू
से कहा देख यह ढेर और देख यह खंभा जो मैं ने अ
५२ और आप के मध्य में रक्खा है। यही ढेर साक्षी और य
खंभा साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस

५३ और इस खंभे से पार मुझे दुःख देने को न आवेगा। अबिरहाम का ईश्वर और नहूर का ईश्वर उन के पिता का ईश्वर हमारे मध्य में बिचार करे और यअ़क़ूब ने अपने पिता इज़हाक़ के भय की किरिया खाई॥

५४ तब यअ़क़ूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया और अपने भाइयों को रोटी खाने को बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी
५५ रात पहाड़ पर रहे। और भोर को तड़के लाबन उठा और अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया और लाबन बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और यअ़क़ूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे
२ आ मिले। और यअ़क़ूब ने उन्हें देखके कहा कि यह ईश्वर की सेना है और उस ने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा॥

३ और यअ़क़ूब ने अपने आगे अदूम के देश और शअ़ीर की
४ भूमि में अपने भाई एसौ पास दूतों को भेजा। और उस ने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ को यों कहियो कि आप का दास यअ़क़ूब यों कहता है कि मैं लाबन कने
५ टिका और अब लों वहीं रहा। और मेरे बैल और गदहे झुंड और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥

६ और दूतों ने यअ़क़ूब पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई एसौ पास गये और वुह और उस के साथ चार सौ मनुष्य आप की भेंट को भी आते हैं॥

७ तब यअ़क़ूब निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने
८ साथ के लोगों और झुंडों और ढोरों और ऊंटों के दो जथा किये। और कहा कि यदि एसौ एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा

९ जो बच रहा है भागेगा। फिर यअ़क़ूब ने कहा कि हे मेरे पित
अबिरहाम के ईश्वर और मेरे पिता इज़हाक के ईश्वर वुह
परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने देश और अपने कुनबे म
१० फिर जा और मैं तेरा भला करूंगा। मैं तो उन सब दया औ
उस सब सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किई तुच्छ हू
क्योंकि मैं अपने डंडे से इस यरदन पार गया और अब मैं दे
११ जथा बना हूं। मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मेरे भाई के
हाथ अर्थात् एसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरत
हूं न होवे कि वुह आके मुझे और लड़कों को माता समेत
१२ मार लेवे। और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ से भलाई
करूंगा और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाऊंगा जो
बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा॥

१३ और वुह उस रात वहीं टिका और जो उस के हाथ लग
१४ अपने भाई एसौ के भेंट के लिये लिया। दो सौ बकरियां औ
१५ बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेंढ़े। तीस दूधवाले
ऊंटनियां उन के बच्चे समेत चालीस गाय और दस बैल बी
१६ गदहियां और दस बच्चे। और उस ने उन्हें अपने सेवकों के
हाथ हर जथा को अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों के
कहा कि मेरे आगे पार उतरो और जथा को जथा से अल
१७ रक्खो। और पहिले को उस ने आज्ञा दिई कि जब मेरा भा
एसौ तुझे मिले और पूछे कि तू किस का है और किधर जात
१८ और ये जो तेरे आगे हैं किस के हैं। तो कहियो कि आप के
सेवक यअ़क़ूब के हैं यह मेरे प्रभु एसौ के लिये भेंट है औ
१९ देखिये वुह आप भी हमारे पीछे है। और वैसा उस ने दूस
और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते
यह कहिके आज्ञा किई कि जब तुम एसौ को पाओ तो इ
२० रीति से कहियो। और अधिक यह कहियो कि देखिये आ

का सेवक यअक़ूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उस ने कहा है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उस्से मिलाप कर लेऊंगा तब उस का मुंह देखूंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण करे ॥

२१ सो वुह भेंट उस के आगे आगे पार गई और वुह आप उस
२२ रात जथा में टिका। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों और अपनी दो सहेलियों और अपने ग्यारह बेटों को लेके थाह
२३ यबूक से पार उतरा। और उस ने उन्हें लेके नाली पार करवाया और अपना सब कुछ पार भेजा ॥

२४ और यअक़ूब अकेला रह गया और वहां पौ फटे लों एक जन
२५ उस्से मल्लयुद्ध करता रहा। और जब उस ने देखा कि वुह उस पर प्रबल न हुआ तो उस की जांघ को भीतर से छूआ तब यअक़ूब के जांघ की नस उस के संग मल्लयुद्ध करने में
२६ चढ़ गई। तब वुह बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है और वुह बोला कि मैं तुझे जाने न देऊंगा जब लों तू
२७ मुझे आशीष न देवे। तब उस ने उसे कहा कि तेरा नाम
२८ क्या और वुह बोला कि यअक़ूब। तब उस ने कहा कि तेरा नाम आगे को यअक़ूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने ईश्वर के और मनुष्यों के आगे राजा की नाईं मल्लयुद्ध किया
२९ और जीता। तब यअक़ूब ने यह कहिके उस्से पूछा कि अपना नाम बताइये और वुह बोला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है
३० और उस ने उसे वहां आशीष दिया। और यअक़ूब ने उस स्थान का नाम फ़नुएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचा है ॥

३१ और जब वुह फ़नुएल से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति
३२ उस पर पड़ी और वुह अपनी जांघ से लंगड़ाता था। इस लिये इसराएल के बंश उस जांघ की नस को जो चढ़ गई थी

आज लों नहीं खाते क्योंकि उस ने यअक़ूब के जांघ की नस को जो चढ़ गई थी छूआ था ॥

तैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और यअक़ूब ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि एसौ और उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने लियाह को और राख़िल को और दो सहेलियों को लड़के बाले २ बांट दिये । और उस ने सहेलियों और उन के लड़कों को सब से आगे रक्खा और लियाह और उस के लड़कों को पीछे ३ और राख़िल और यूसुफ़ को सब के पीछे । और वुह आप उन के आगे पार उतरा और अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते सात ४ बार भूमि लों दंडवत किई । और एसौ उसे मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उस के गले से लिपटा और उसे ५ चूमा और वे रोये। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और स्त्रियों को और लड़कों को देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं और वुह बोला वुह लड़के जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप के ६ सेवक को दिये । तब सहेलियां और उन के लड़के पास आये ७ और दंडवत किई । और लियाह ने भी अपने लड़के समेत पास आके दंडवत किई और अंत को यूसुफ़ और राख़िल पास ८ आये और दंडवत किई । और उस ने कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिली तुझे क्या और वुह बोला कि अपने प्रभु की ९ दृष्टि में अनुग्रह पाने के लिये । तब एसौ बोला कि हे मेरे १० भाई मुझ पास बहुत हैं तेरे तेरे ही लिये होवें । तब यअक़ूब बोला कि मैं आप की बिनती करता हूं यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानो मैं ने ११ ईश्वर का मुंह देखा और आप मुझ से प्रसन्न हुए । मेरे आशी

को जो आप के आगे लाया गया है ग्रहण कीजिये क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और इस लिये कि मुझ पास सब कुछ है सो वुह यहां लों गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया।
१२ और कहा कि आओ कूच करें और चलें और मैं तेरे आगे आगे
१३ चलूंगा। तब उस ने उसे कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं और झुंड और ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे साथ हैं और जो वे दिन भर हांके जायें तो सारे झुंड मर
१४ जायेंगे। मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार जाइये और मैं धीरे धीरे जैसा कि ढोर आगे चलेंगे और बालक सह सकेंगे चलूंगा यहां लों कि शईर को अपने प्रभु पास आ पहुंचूं।
१५ तब एसौ बोला अपने संग के लोगों में से कई एक आप के साथ छोड़ जाऊं और वुह बोला कि यह किस लिये मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥

१६ तब एसौ उसी दिन अपने मार्ग पर शईर को लौटा।
१७ और यअकूब चलते चलते सुक्कात को आया और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये पतछप्पर बनाये इसी लिये उस स्थान का नाम सुक्कात हुआ॥

१८ और यअकूब फ़द्दानअराम से बाहर होके कनआन देश के सालिम के नगर सिकम में आया और नगर के बाहर अपना
१९ तंबू खड़ा किया। और जिस पर उस का तंबू खड़ा था उस ने उस खेत को हमूर के पिता सिकम के संतान से सौ टुकड़े
२० रोकड़ पर मोल लिया। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और उस का नाम सर्बशक्तिमान इसराएल का ईश्वर रक्खा॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ और लियाह की बेटी दीनः जिसे वुह यअकूब के लिये जनी थी उस देश की लड़कियों के देखने को बाहर गई।

२ और जब उस देश के अध्यक्ष हवी हमूर के बेटे सिकम ने उसे देखा तो उसे ले गया और उस्से मिल बैठा और उसे
३ अशुद्ध किया। और उस का मन यअ़कूब की बेटी दीन: से अटका और उस ने उस लड़की को प्यार किया और उस लड़की
४ के मन को मनाया। और सिकम ने अपने पिता हमूर से कहा
५ कि इस लड़की को मुझे पत्नी में दिलाइये। और यअ़कूब ने सुना कि उस ने मेरी बेटी दीन: को अशुद्ध किया और उस के बेटे उस के ढोर के साथ खेत में थे और उन के आने लों यअ़कूब चुप रहा॥

६ और सिकम का पिता हमूर बातचीत करने को यअ़कूब पास
७ आया। और सुनते ही यअ़कूब के बेटे खेत से आ पहुंचे और वे मनुष्य उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उस ने इसराएल में अपमान किया कि यअ़कूब की बेटी के साथ अनुचित रीति से मिल बैठा॥

८ और हमूर ने उन के साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे सिकम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे उस को
९ पत्नी में दीजिये। और हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनी
१० बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां आप लीजिये। और तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी उस में रहो और ब्यापार करो और इस में अधिकार प्राप्त करो।
११ और सिकम ने उस के पिता और उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाऊं और जो कुछ तुम मुझे
१२ कहोगे मैं देऊंगा। जितना दैजा और भेंट चाहो मैं तुम्हारे कहने के समान देऊंगा पर लड़की को मुझे पत्नी में देओ॥

१३ तब यअ़कूब के बेटों ने सिकम और उस के पिता हमूर को छल से उत्तर दिया क्योंकि उस ने उन की बहिन दीन:
१४ को अशुद्ध किया था। और उन से कहा कि हम यह बात नहीं कर

सक्ते कि एक अख़तन: पुरुष को अपनी बहिन देवें क्योंकि इस्से
१५ हमारी निन्दा होगी। केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे यदि
तुम हमारे समान होओ कि तुम्हारे हर एक पुरुष का ख़तन:
१६ किया जाय। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें देंगे और तुम्हारी
बेटियां लेंगे और हम तुम में निवास करेंगे और हम एक
१७ लोग हो जायेंगे। परन्तु जो ख़तन: कराने में तुम हमारी न
सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे॥

१८ और उन की बातें हमूर और हमूर के पुत्र सिकम की दृष्टि
१९ में प्रसन्न हुईं। और उस तरुण ने उस बात में अबेर न किया
क्योंकि वुह यअक़ूब की बेटी से प्रसन्न था और वुह अपने पिता
२० के सारे घराने से अधिक कुलीन था। और हमूर और उस का
बेटा सिकम अपने नगर के फाटक पर आये और उन्हों ने
२१ अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई। कि इन मनुष्यों
से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देओ और इस
में ब्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उन के लिये बड़ा है
सो आओ हम उन की बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और
२२ अपनी बेटियां उन्हें देवें। परन्तु हमारे साथ रहने को और
एक लोग हो जाने को केवल यह लोग इसी बात से मानेंगे
कि ख़तन: जैसा उन का किया गया है हम में हर पुरुष
२३ ख़तन: करावे। क्या उन के ढोर और उन की संपत्ति और उन
का हर एक चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की मान
२४ लेवें और वे हम में निवास करेंगे। और सभों ने जो नगर के
फाटक से आते जाते थे हमूर और उस के बेटे सिकम की
बात को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर
जाते थे उन में से हर पुरुष ने ख़तन: करवाया॥

२५ और तीसरे दिन जब लों वे घाव में पड़े थे यों हुआ कि
यअक़ूब के बेटों में से दीन: के दो भाई समऊन और लावी

हर एक ने अपना अपना खड्ग लिया और साहस से नगर
२६ पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला। और उन्हों ने
हमूर और उस के बेटे सिकम को खड्ग की धार से मार
डाला और सिकम के घर से दीनः को लेके निकल गये।
२७ यअ़क़ूब के बेटे जूझे हुओं पर आये और नगर को लूट लिया
२८ क्योंकि उन्हों ने उन की बहिन को अशुद्ध किया था। उन्हों
ने उन की भेड़ बकरी और उन की गाय बैल और उन के गदहे
२६ और जो कुछ कि नगर में और खेत में था लूट लिया। और
उन के सब धन और उन के सारे बालक और उन की पत्नियां
३० और घर में का सब कुछ वे बंधुआई में लाये और लूट लिया। और
यअ़क़ूब ने समऊ़न और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दुःख
दिया कि इस भूमि के बासियों में कनआ़नियों और फ़रिज्जीयों
के मध्य में मुझे घिनौना कर दिया और मैं गिनती में थोड़ा
हूं और वे मेरे सन्मुख एकट्ठे होंगे और मुझे मार डालेंगे और
३१ मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा। तब वे बोले क्या उचित
था कि वुह हमारी बहिन के साथ बेश्या की नाईं ब्यवहार
करे॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने यअ़क़ूब से कहा कि उठ बैतएल को जा
और वहीं रह और उस सर्बशक्तिमान के लिये जिस ने तुझे
दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसौ के आगे से भागा था
२ वहां एक बेदी बना। तब यअ़क़ूब ने अपने घराने से और अपने
सब संगियों से कहा कि उपरी देवों को जो तुम में हैं दूर करो
३ और अपने तईं शुद्ध करो और अपने कपड़े बदलो। और आओ
हम उठें और बैतएल को जायें और मैं वहां उस सर्बशक्तिमान
के लिये बेदी बनाऊंगा जिस ने मेरी सकेती के दिन मुझे

उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वुह मेरे साथ साथ
४ था । और उन्हों ने सारे ऊपरी देवों को जो उन के हाथों में
थे और कुंडल जो उन के कानों में थे यअ़क़ूब को दिये और
यअ़क़ूब ने उन्हें बलूत पेड़ तले सिकम के लग गाड़ दिया ।
५ और उन्हों ने कूंच किया और उन के आस पास के नगरों पर
ईश्वर की डर पड़ी और उन्हों ने यअ़क़ूब के बेटों का पीछा
न किया ॥

६ सो यअ़क़ूब और जितने लोग उस के साथ थे कनआ़न की
७ भूमि में लौज़ को जो बैतएल है आये । और उस ने वहां
एक बेदी बनाई और इस लिये कि जब वुह अपने भाई के
पास से भागा तो वहां उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस का
नाम बैतएल का सर्बशक्तिमान रक्खा ॥

८ और रिबक़: की दाई दबूर: मर गई और बैतएल के लग
बलूत पेड़ तले गाड़ी गई और उस का नाम रोने का बलूत
रक्खा ॥

९ और जब कि यअ़क़ूब फद्दानअराम से निकला ईश्वर ने उसे
१० फेर दर्शन दिया और उसे आशीष दिया । और ईश्वर ने उसे
कहा कि तेरा नाम यअ़क़ूब है तेरा नाम आगे को यअ़क़ूब न
होगा परन्तु तेरा नाम इसराएल होगा सो उस ने उस का
११ नाम इसराएल रक्खा । फिर ईश्वर ने उसे कहा कि मैं
सर्बशक्तिमान सर्बसामर्थी हूं तू फलमान हो और बढ़ तुझ से
एक जातिगण और जातिगण की मंडली होगी और तेरी कटि
१२ से राजा निकलेंगे । और यह भूमि जो मैं ने अबिरहाम और
इज़हाक़ को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देऊंगा ।
१३ और ईश्वर उस स्थान से जहां उस ने उस्से बातें किईं थीं उस
१४ पास से उठ गया । और यअ़क़ूब ने उस स्थान में जहां उस
ने उस्से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस

१५ पर तपावन तपाया और उस पर तेल डाला। और यअ़क़ूब ने उस स्थान का नाम जहां ईश्वर उस्से बोला था बैतएल रक्खा॥

१६ और उन्हों ने बैतएल से कूंच किया और वहां से इफ़रात: बहुत दूर न था और राख़िल को पीर लगी और उस पर बड़ी
१७ पीड़ा हुई। और उस पीड़ा की दशा में जनाई दाई ने उसे
१८ कहा कि मत डर अब की भी तेरे बेटा होगा। और यों हुआ कि जब उस का प्राण जाने पर था क्योंकि वुह मर ही गई तो उस ने उस का नाम बिनओनी रक्खा पर उस के पिता ने उस
१९ का नाम बिनयमीन रक्खा। सो राख़िल मर गई और इफ़रात:
२० के मार्ग में जो बैतलहम है गाड़ी गई। और यअ़क़ूब ने उस के समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही खंभा राख़िल के समाधि का खंभा आज लों है॥

२१ फिर इसराएल ने कूंच किया और अपना तंबू अद्र के गुम्मट
२२ के उस पार खड़ा किया। और जब इसराएल उस देश में ज रहा तो यों हुआ कि रूबिन गया और अपने पिता की सुरैतिन के संग अकर्म्म किया और इसराएल ने सुना अब यअ़क़ूब के बारह बेटे थे॥

२३ लियाह के बेटे रूबिन यअ़क़ूब का पहिलौंठा और समऊन
२४ और लावी और यहूदाह और इशकार और ज़बूलून। और
२५ राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन। और राख़िल की सहेली
२६ बिलह: के बेटे दान और नफ़ताली। और लियाह की सहेली ज़िलफ़: के बेटे जद और यसर यअ़क़ूब के बेटे जो फ़द्दानअराम में उस के लिये उत्पन्न हुए ये हैं॥

२७ और यअ़क़ूब अरब: के नगर में जो हबरून है ममरी के बीच अपने पिता इज़हाक़ पास जहां अबिरहाम और इज़हाक़ ने
२८ निवास किया था आया। और इज़हाक़ एक सौ अस्सी बरस
२९ का हुआ। और इज़हाक़ ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनी

होके अपने लोगों में जा मिला और उस के बेटे एसौ और यअ़क़ूब ने उसे गाड़ा ॥

छत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ । २ और एसौ की जो अदूम है बंशावली यह है । एसौ ने कनआ़न की लड़कियों में से पत्नियां किईं ऐलून हत्ती की बेटी आ़दः को और अहलिबामः को जो अनाह की बेटी ३ हवी सबऊ़न की बेटी थी । और इसमअ़ऐल की बेटी बशामत ४ को जो नबायोत की बहिनों में से थी । और एसौ के लिये आ़दः इलीफ़ज़ को जनी और बशामत से रऊ़एल उत्पन्न हुआ । ५ और अहलिबामः से यऊस और यअ़लाम और क़ुरह उत्पन्न हुए ये एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआ़न की भूमि में उत्पन्न हुए ॥

६ और एसौ अपनी पत्नियों और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने ढोर को और अपने सारे पशु को और अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनआ़न देश में प्राप्त किई थी लेके अपने भाई यअ़क़ूब पास से परदेश को निकल ७ गया । क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे एकट्ठे न रह सक्ते थे और उन के पशु के कारण से उन के टिकने की भूमि उन का भार न उठा सक्ती थी । और एसौ जो अदूम है शअ़ीर पहाड़ पर जा रहा ॥

सो एसौ की बंशावली जो शअ़ीर पहाड़ के मनुष्यों का पिता है यह है । एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आ़दः का बेटा इलीफ़ज़ एसौ की पत्नी बशामत का बेटा रऊ़एल । और इलीफ़ज़ के बेटे तैमन ओमर सफ़ू और जअ़ताम और क़नज़ थे । और एसौ के बेटे इलीफ़ज़ की सहेली तिमनअ़ थी सो वुह इलीफ़ज़ के लिये अमालीक़ को जनी एसौ की

१३ पत्नी आद: के बेटे ये थे। और रऊएल के बेटे ये हैं नह
और ज़रह सम्माह और मिज़्ज़: ये एसौ की पत्नी बशाम
१४ के बेटे थे। और एसौ की पत्नी सबऊन की बेटी अनाह की बे
अहलिबाम: के बेटे ये थे और वुह एसौ के लिये यऊस औ
यअलाम और क़ूरह जनी॥

१५ एसौ के बेटों में जो अध्यक्ष हुए ये हैं एसौ के पहिलौं
इलीफ़ज़ के बेटे अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष स
१६ अध्यक्ष क़नज़। अध्यक्ष क़ोरह अध्यक्ष जअताम अध्य
१७ अमालीक़ अदूम के देश में ये आद: के बेटे थे। और ए
के बेटे रऊएल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष ज़र
अध्यक्ष सम्माह अध्यक्ष मिज़्ज़: ये अदूम देश में हुए एसौ
१८ पत्नी बशामत के बेटे थे। और एसौ की पत्नी अहलिबाम:
ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यअलाम अध्यक्ष क़ूरह ये
अध्यक्ष हैं जो एसौ की पत्नी अनाह की बेटी अहलिबाम:
१६ थे। सो एसौ के जो अदूम है ये बेटे हैं ये उन के अध्य
हैं॥

२० शईर के बेटे हूरी जो इस भूमि के बासी थे ये हैं लौत
२१ और सोबल और सबऊन और अनाह। और दैसून और अ
और दैसान ये हूरियों के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि
२२ शईर के बेटे हैं। और लौतान के सन्तान हूरी और हैम
२३ और लौतान की बहिन तिमनअ थी। और सोबल के सन्त
ये हैं अलवान और मनहत और ऐबाल सफ़ू और ओनाम
२४ और सबऊन के बेटे ये हैं ऐयाह और अनाह यह वुह अन
है जिस ने बन में जब वुह अपने पिता सबऊन के गदहों
२५ चराता था तात कुंड पाये। और अनाह के सन्तान ये
२६ दैसून और अहलिबाम: अनाह की बेटी। और दैसून
सन्तान हमदान और इशबान और यथरान और करा

२७ असर के सन्तान ये हैं बिलहान और ज़अवान और अक़ान।
२८। २९ दैसून के सन्तान ये हैं ऊज़ और अरान। जो अध्यक्ष
हूरियों में के थे सो ये हैं अध्यक्ष लौतान अध्यक्ष सोबल अध्यक्ष
३० सबऊन अध्यक्ष अनाह। अध्यक्ष दैसून अध्यक्ष असर अध्यक्ष
दैसान ये उन हूरियों के अध्यक्ष हैं जो शईर की भूमि
में थे॥

३१ और जो राजा अदूम देश पर राज्य करता था उस्से पहिले
३२ कि इसराएल के बंश का कोई राजा हुआ सो ये हैं। और बऊर
का बेटा बालिग अदूम में राज्य करता था और उस के नगर
३३ का नाम दिनहबः था। और बालिग मर गया और ज़रह के
बेटे यूबाब ने जो बूसरः का था उस की संती राज्य किया।
३४ और यूबाब मर गया और हूशाम ने जो तमन्नी की भूमि का
३५ था उस की संती राज्य किया। और हूशाम मर गया और
बिदद का बेटा हदद जिस ने मोअब के चौगान में मिदयान
को मारा उस की संती राज्य किया और उस के नगर का
३६ नाम ग़वीत था। और हदद मर गया और मसरीक़ः के समलः
३७ ने उस की संती राज्य किया। और समलः मर गया और नदी
के लग के रहूबात के साऊल ने उस की संती राज्य किया।
३८ और साऊल मर गया और अक़बूर के बेटे बअलहनान ने उस
३९ की संती राज्य किया। और अक़बूर का बेटा बअलहनान मर
गया और हदर ने उस की संती राज्य किया और उस के नगर
का नाम फ़ागू था और उस की पत्नी का नाम मुहैतबिएल था
जो मतरिद की बेटी मेज़हब की बेटी थी॥

४० सो उन के घरानों उन के स्थानों उन के नाम के
समान एसौ के अध्यक्षों के ये नाम हैं अध्यक्ष तिमनः अध्यक्ष
४१ अलियाह अध्यक्ष यतीत। अध्यक्ष अहलिबामः अध्यक्ष इलाह
४२ अध्यक्ष फ़ैनून। अध्यक्ष क़नज़ अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबसार।

४३ अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अपने अपने स्थान में अपं
अपने निवास के समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों व
पिता एसौ है ॥

सैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और यअ़कूब ने कनआन देश में अपने पिता के टिकने व
२ भूमि में बास किया। यअ़कूब की बंशावली यह है
यूसुफ़ सत्रह बरस का होके अपने भाइयों के साथ झुंड चरात
था और वुह तरुण अपने पिता की पत्नी बिलहः और ज़िलफ़: वं
बेटों के संग था और यूसुफ़ ने उन के पिता के पास उन वं
३ बुरे कामों का संदेश पहुंचाया। अब इसराएल यूसुफ़ को अपं
सारे पुत्रों से अधिक प्यार करता था क्योंकि वुह उस के बुढ़ा
का बेटा था और उस ने उस के लिये बहुरंग का पहिराव
४ बनाया। जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हमा
सब भाइयों से उसे अधिक प्यार करता है तो उन्हों ने उसं
बैर किया और उस्से कुशल से न कह सक्ते थे ॥

५ और यूसुफ़ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कह
६ और उन्हों ने उस्से अधिक बैर रक्खा। और उस ने उन्हें रं
७ कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनिये। क्योंकि देखिं
कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और देखो मेरी कट्ठी उठ
और सीधी भी खड़ी हुई और देखो तुम्हारी गट्ठियां आस पा
८ खड़ी हुईं और मेरी गट्ठी को दंडवत किई। तब उस वं
भाइयों ने उसे कहा क्या तू सच मुच हम पर राज्य करेग
अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्हों ने उस के स्वप्न
९ और उस की बातों के कारण उस्से अधिक बैर किया। फि
उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि
देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा और देखो सूर्य्य और चन्द्रम

१० और ग्यारह तारे मुझे दंडवत करते थे। और उस ने अपने पिता और भाइयों से बर्णन किया पर उस के पिता ने उसे डपटा और उस्से कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई सच मुच तेरे
११ आगे भूमि पर झुकके तुझे दंडवत करेंगे। और उस के भाइयों ने उस्से डाह किया परन्तु उस के पिता ने उस बात को सोच रक्खा ॥

१२ फिर उस के भाई अपने पिता की झुंड चराने सिकम को
१३ गये। तब इसराएल ने यूसुफ़ से कहा क्या तेरे भाई सिकम में नहीं चराते आ मैं तुझे उन के पास भेजूं और उस ने उसे
१४ कहा कि मैं यहीं हूं। और उस ने उसे कहा कि जाइये अपने भाइयों की कुशलता और झुंड की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उस ने उसे हबरून की तराई से भेजा और
१५ वुह सिकम की ओर गया। तब किसी जन ने उसे पाया और देखो वुह खेत में भ्रमता था तब उस पुरुष ने उस्से पूछा
१६ कि तू क्या ढूंढ़ता है। तब वुह बोला मैं अपने भाइयों को
१७ ढूंढ़ता हूं मुझे बताइये कि वे कहां चराते हैं। और वुह पुरुष बोला वे यहां से चले गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दूतैन को जावें तब यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दूतैन में पाया ॥

१८ और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा तो अपने पास
१९ आने से पहिले उस के मार डालने को जुगत किई। और वे
२० आपुस में बोले देखो यह स्वप्नदर्शी आता है। सो आओ अब हम उसे मार डालें और किसी कुए में उसे डाल देवें और कहें कि कोई बन पशु ने उसे भक्षण किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों
२१ का क्या होगा। तब रूबिन ने सुनके उसे उन के हाथ से
२२ छुड़ाने चाहा और बोला कि हम उसे मार न डालें। और रूबिन ने

उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ उसे बन के इस कुए में डाल
देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वुह उसे उन के हाथ
से छुड़ाके उसे उस के पिता पास फिर पहुंचावे॥

२३ और यों हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों पास आया तो
उन्हों ने उस का बस्त्र यूसुफ़ से उतार लिया अर्थात् वुह
२४ बहुरंगी बस्त्र जो वुह पहिने था। और उन्हों ने उसे लेके
उसे उस कुए में डाल दिया और वुह कुआ अंधा था उस में
२५ कुछ पानी न था। तब वे रोटी खाने बैठे और अपनी आंखें
उठाई और क्या देखते हैं कि इसमअएलियों का एक जथा जिलिअद
से सुगंध द्रब्य और बलसाम और मुर ऊंटों पर लादे हुए मिस्र
२६ को उतर जाते हैं। और यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा
क्या लाभ कि हम अपने भाई को मार डालें और उस का लोहू
२७ छिपावें। आओ उसे इसमअएलियों के हाथ बेचें और उस पर
अपने हाथ न डालें क्योंकि वुह हमारा भाई और हमारा मांस
२८ है और उस के भाइयों ने मान लिया। और जब मिदयानी ब्यापारी
उधर से जाते थे तो उन्हों ने यूसुफ़ को उस कुए से बाहर
निकालके इसमअएलियों के हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेचा
२९ और वे यूसुफ़ को मिस्र में लाये। तब रूबिन कुए पर फिर
आया और देखो यूसुफ़ कुए में नहीं है तब उस ने अपने
३० कपड़े फाड़े। और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा
कि लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं॥

३१ फिर उन्हों ने यूसुफ़ का पहिरावा लिया और एक बकरी
का मेम्ना मारा और उस पहिरावे को उस के लोहू में चुभोड़ा
३२ और उन्हों ने उस बहुरंगी पहिरावे को भेजा और अपने पिता
के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया आप
पहिचानिये कि यह आप के बेटे का पहिरावा है कि नहीं
३३ और उस ने उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का

पहिरावा है किसी बन पशु ने उसे खा लिया है यूसुफ़
३४ निःसन्देह फाड़ा गया। तब यअ़क़ूब ने अपने कपड़े फाड़े
और टाट बस्त्र अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लों
३५ अपने बेटे के लिये शोक किया। और उस के सारे बेटे उस
की सारी बेटियां उसे शान्ति देने उठीं पर उस ने शान्ति ग्रहण
न किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोता हुआ समाधि
३६ में उतरूंगा सो उस का पिता उस के लिये रोया किया। और
मिदयानियों ने उसे मिस्र में फ़िरऊ़न के एक प्रधान सेनापति
फ़ूतिफ़र के हाथ बेचा॥

अठतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से
२ अलग होकर हीरः नाम एक अदूलामी के पास गया। और
यहूदाह ने वहां एक कनआ़नी की लड़की को देखा जिस का
नाम सूआ था और उस ने उसे लिया और उस के साथ संगम
३ किया। और वुह गर्भिणी हुई और एक बेटा जनी और उस ने
४ उस का नाम ए़र रक्खा। और वुह फिर गर्भिणी हुई और
५ बेटा जनी और उस ने उस का नाम ओनान रक्खा। और वुह
फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम सेलः
रक्खा और जब वुह उसे जनी तो वुह कज़ीब में था॥

६ और यहूदाह अपने पहिलौंठे ए़र के लिये एक स्त्री ब्याह
७ लाया जिस का नाम तमर था। और यहूदाह का पहिलौंठा
ए़र परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मार डाला।
८ तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास
जा और उस्से ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला।
९ और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों
हुआ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास गया तो बीर्य को

भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई उस्से बंश पावे
१० और उस का वुह कार्य्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इस लिये
११ उस ने उसे भी मार डाला। तब यहूदाह ने अपनी पतोह
तमर को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जब
लों कि मेरा बेटा सेलः बढ़ जाय क्योंकि उस ने कहा न होवे
कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने
पिता के घर जा रही॥

१२ और बहुत दिन बीते और सूआ की बेटी यहूदाह की पत्नी
मर गई और यहूदाह उस के शोक को भूला तब वुह और उस
का मित्र अदूलामी हीरः अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास
१३ को गया। और तमर से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर
१४ अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को जाता है। तब उस
ने अपने रंडसाले के कपड़ों को अपने ऊपर से उतार फेंका और
घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और एनाइम के द्वार में जो
तिमनास के मार्ग पर है जा बैठी क्योंकि उस ने देखा था कि
१५ सेलः सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर दिया। जब
यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वुह
१६ अपना मुंह छिपाये हुए थी। और मार्ग से उस की ओर फिरा
और उसे कहा कि मुझे अपने पास आने दे क्योंकि न जाना कि
वुह मेरी पतोह है और वुह बोली कि मेरे पास आने में तू मुझे
१७ क्या देगा। तब वुह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजूंगा और उस
१८ ने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे। और वुह
बोला मैं तुझे क्या बंधक देऊं सो वुह बोली अपनी छाप और
अपने बिजायठ और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है और उस
ने उस को दिया और उस के पास गया और वुह उस्से गर्भिणी
१९ हुई। तब वुह उठी और चली गई और अपना घूंघट अपने
ऊपर से उतार रक्खा और अपने रंडसाले का बस्त्र पहिन

२० लिया । और यहूदाह ने अपने मित्र अदूलामी के हाथ मेम्ना भेजा कि उस स्त्री के हाथ से वुह बंधक फेर लेवे परन्तु उस
२१ ने उसे न पाया । तब उस ने उस स्थान के लोगों से पूछा कि जो बेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है और वे बोले कि यहां
२२ बेश्या न थी । तब वुह यहूदाह के पास फिर आया और कहा कि मैं ने उसे नहीं पाया और उस स्थान के लोगों ने भी कहा
२३ कि बेश्या वहां न थी । और यहूदाह बोला कि उसे लेने दे न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह मेम्ना भेजा और
२४ तू ने उसे न पाया । और तीन मास के पीछे यें हुआ कि यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने बेश्याई किई और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है और यहूदाह बोला
२५ कि उसे बाहर लाओ और वुह जला दिई जाय । जब वुह निकाली गई तो उस ने अपने ससुर के कहला भेजा कि मुझे उस जन का पेट है जिस की ये बस्तें हैं और कहा कि पहिचानिये यह छाप और बिजायठ और लाठी किस की है ।
२६ तब यहूदाह ने पहिचाना और कहा कि वुह मुझ से अधिक धर्म्मी है इस लिये कि मैं ने उसे अपने बेटे सेल: के न दिया पर वुह आगे के उस्से अज्ञान रहा॥

२७ और उस के जन्ने के समय में यें हुआ कि देखो उस की
२८ कोख में जमल थे । और जब वुह पीड़ में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के हाथें में नारा बांध
२९ के कहा कि यह पहिले निकला । और यें हुआ कि उस ने अपना हाथ फिर खींच लिया और देखो उस का भाई निकल पड़ा तब वुह बोली कि तू ने यह दरार क्यें किया इस लिये
३० उस का नाम फारस हुआ । और उस के पीछे उस का भाई जिस के हाथ में नारा बंधा था निकला और उस का नाम ज़रह रक्खा ॥

उन्तालीसवां पर्व्व ।

१ और यूसुफ़ मिस्र में लाया गया और फ़ूतिफ़र मिस्री ने जो फ़िरऊ़न का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उस को इसमअ़एलियों के हाथ से जो उसे वहां लाये थे मोल लिया। २ परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ और ३ वुह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहा किया। और उस के स्वामी ने यह देखा कि परमेश्वर उस के साथ है और कि ४ परमेश्वर ने उस के सारे कार्य्यों में उसे भाग्यमान किया। और यूसुफ़ ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और उस ने उस की सेवा किई और उस ने उसे अपने घर पर करोड़ा किया और ५ सब जो कुछ कि उस का था उस के हाथ में कर दिया। और यों हुआ कि जब से उस ने उसे अपने घर पर और अपनी सब बस्तुन पर करोड़ा किया तब से परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर यूसुफ़ के कारण बढ़ती दिई और उस की सारी बस्तुन में जो ६ घर में और खेत में थीं परमेश्वर की ओर से बढ़ती हुई। और उस ने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में कर दिया और वुह रोटी से अधिक जिसे खा लेता था कुछ न जानता था और यूसुफ़ रूपमान और देखने में सुंदर था॥

७ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि उस के स्वामी की पत्नी ने अपनी आंखें यूसुफ़ पर लगाईं और वुह बोली कि मेरे साथ ८ शयन कर। परन्तु उस ने न माना और अपने स्वामी की पत्नी से कहा कि देख मेरा स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे खा लेता है किसी बस्तु को नहीं जानता और उस ने अपना सब ९ कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया। इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने तुझ को छोड़ कोई बस्तु मुझ से अलग नहीं रक्खी क्योंकि तू उस की पत्नी है तो मैं ऐसी महा दुष्टता क्यों

१० करूं और ईश्वर का अपराधी होऊं। और ऐसा हुआ कि वुह यूसुफ़ को प्रति दिन कहती रही पर वुह उस के साथ शयन करने
११ को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता था। और उस समय के लग भग ऐसा हुआ कि वुह अपने कार्य्य के लिये
१२ घर में गया और घर के लोगों में से वहां कोई न था। तब उस ने उस का पहिरावा पकड़के कहा कि मेरे साथ शयन कर तब वुह अपना पहिरावा उस के हाथ में छोड़कर भागा और बाहर
१३ निकल गया। और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि वुह अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ गया और भाग निकला।
१४ तो उस ने अपने घर के लोगों को बुलाया और उन से कहा कि देखो वुह एक इबरानी को हमारे घर में लाया कि हम से ठठोली करे वुह मेरे साथ शयन करने को मेरे पास आया और
१५ मैं चिल्ला उठी। और यों हुआ कि जब उस ने सुना कि मैं अपना शब्द उठाके चिल्लाई तो अपना पहिरावा मेरे पास छोड़
१६ भागा और बाहर निकल गया। सो जब लों उस का पति घर में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने पास रख छोड़ा।
१७ तब उस ने ऐसी ही बातें उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास ला रक्खा मेरे पास आया कि मुझ से ठट्ठा करे।
१८ और जब मैं चिल्ला उठी तो वुह अपना पहिरावा मेरे पास
१९ छोड़कर बाहर निकल भागा। और यों हुआ कि जब उस के स्वामी ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं जो उस ने उस्से कहीं कि
२० तेरे दास ने मुझ से यों किया तो उस का क्रोध भड़का। और यूसुफ़ के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए
२१ बंद थे बंधन में डाला और वुह वहां बंदीगृह में था। परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और उस पर कृपा किई और बंदीगृह
२२ के प्रधान को उस पर दयाल किया। और उस बंदीगृह के प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ़ के हाथ में सौंपा और

२३ जो कुछ वे करते थे उस का कर्त्ता वही था। उस बंदीगृह का प्रधान कार्य्यों से निश्चिंत था इस लिये कि परमेश्वर उस के साथ था और उस के कार्य्यों में जो उस ने किये ईश्वर ने भाग्यमान किया॥

चालीसवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के पियाऊ ने और रसोइया ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध
२ किया। और फ़िरऊ़न अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान
३ पियाऊ पर और प्रधान रसोइया पर क्रुद्ध हुआ। और उस ने उन्हें पहरू के प्रधान के घर में जहां यूसुफ़ बंद था बंदीगृह
४ में डाला। और पहरू के प्रधान ने उन्हें यूसुफ़ को सौंप दिया और उस ने उन की सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद रहे॥

५ और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिस्र के राजा के पियाऊ और रसोइया ने एक ही रात एक
६ एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा। और बिहान को यूसुफ़ उन पास आया और उन पर दृष्टि किई और देखो वे
७ उदास थे। तब उस ने फ़िरऊ़न के प्रधानों से जो उस के साथ उस के प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों
८ कुरूप हो। और वे उस्से बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिस का अर्थ करवैया नहीं तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का कार्य्य नहीं मुझ से कहो॥

९ तब पियाऊ के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ़ से कहा और उसे बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक लता मेरे
१० आगे है। और उस लता में तीन डालियां थीं और मानों उस में कलियां निकलीं और उस में फूल लगे और उस के गुच्छों में पक्के दाख

११ निकले। और फ़िरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने दाखों को लेके उन्हें फ़िरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस
१२ कटोरे को फ़िरऊन के हाथ में दिया। तब यूसुफ़ ने उसे कहा कि इस का यह अर्थ है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं।
१३ फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा और तुझे अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फ़िरऊन का
१४ पियाऊ था उस के हाथ में फिर कटोरा देगा। परन्तु जब तेरा भला होय तो मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल हूजियो और फ़िरऊन से मेरी चर्चा करियो और मुझे इस घर से
१५ छुड़वाइयो। क्योंकि निश्चय मैं इबरानियों के देश से चुराया गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें॥

१६ जब रसोइयों के प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ तो यूसुफ़ से कहा कि मैं भी स्वप्न में था और क्या देखता हूं
१७ कि मेरे सिर पर श्वेत रोटी की तीन टोकरियां हैं। और ऊपर की टोकरी में फ़िरऊन के लिये समस्त रीति का भोजन था
१८ और पंछी मेरे सिर पर उस टोकरी में से खाते थे। तब यूसुफ़ ने उत्तर दिया और कहा उस का अर्थ यह है कि ये तीन
१९ टोकरियां तीन दिन हैं। फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर तेरी देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा मांस नोच नोच खायेंगे॥

२० और यों हुआ कि तीसरे दिन फ़िरऊन के जन्म गांठ का दिन था और उस ने अपने सारे सेवकों का नेउता किया और उस ने अपने सेवकों में पियाऊ के प्रधान और रसोइयों के
२१ प्रधान को उभाड़ा। और उस ने पियाऊ के प्रधान को पियाऊ का पद फिर दिया और उस ने फ़िरऊन के हाथ में कटोरा
२२ दिया। परन्तु उस ने यूसुफ़ के अर्थ करने के समान रसोइयों

२३ के प्रधान को फांसी दिई। तथापि पियाऊ के प्रधान ने यूसु
को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया॥

एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फ़िरऊ़न ने स्वप्न देख
२ और देखो कि आप नदी के तीर पर खड़ा है। और देखो कि
नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं और चरा
३ पर चरने लगीं। और देखो कि उन के पीछे और सात गा
कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी के तीर पर उ
४ सात गायों के पास खड़ी हुईं। और उन कुरूप और डांग
गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा लिया त
५ फ़िरऊ़न जागा। फिर सो गया और दुहराके स्वप्न देखा कि अन्न
६ भरी हुईं और अच्छी सात बालें एक डांठी में निकलीं। औ
देखो कि और सात बालें छितरी और पुरबी पवन से मुरझाई हु
७ उन के पीछे निकलीं। और वे छितरी सात बालें उन अच्छ
भरी हुई सात बालों को निगल गईं और फ़िरऊ़न जागा औ
देखो कि स्वप्न है॥

८ और बिहान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हु
तब उस ने मिस्र के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुल
भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से को
फ़िरऊ़न के स्वप्न का अर्थ न कर सका॥

९ तब प्रधान पियाऊ ने फ़िरऊ़न से कहा कि मेरे अपरा
१० आज मुझे चेत आते हैं। फ़िरऊ़न अपने दासों पर क्रुद्ध
और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के घ
११ में बंद किया था। और एक ही रात हम ने अर्थात् मैं ने औ
उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्व
१२ के अर्थ समान स्वप्न देखा। और एक इबरानी तरुण पह

के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उस्से कहा और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक
१२ के स्वप्न समान अर्थ किया। और जैसा उस ने हमारे लिये अर्थ किया तैसा हुआ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे फांसी दिई॥

१४ तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे बंदीगृह से दौड़ाया और उस ने बाल बनवाया और अपने कपड़े
१५ बदल फ़िरऊन के आगे आया। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर सक्ता और मैं ने तेरे बिषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझके अर्थ कर सक्ता है॥

१६ और यूसुफ़ ने उत्तर में फ़िरऊन से कहा कि मुझ से नहीं ईश्वर ही फ़िरऊन को कुशल का उत्तर देगा॥

१७ तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं
१८ नदी के तीर पर खड़ा हूं। और क्या देखता हूं कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं और चराई पर चरने
१९ लगीं। और क्या देखता हूं कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं
२० ने मिस्र के सारे देश में कभी न देखा। और वे डांगर और
२१ कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को खा गईं। और जब वे उन के उदर में पड़ीं तब समुझ न पड़ा कि वे उन्हें खा गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा।
२२ और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी
२३ में निकलीं। और क्या देखता हूं कि और सात बालें मुरझाई हुईं और पतली पुरबी पवन से कुम्हलाई हुईं उन के पीछे उगीं।
२४ और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सक्ता॥

२५ तब यूसुफ़ ने फ़िरऊ़न से कहा कि फ़िरऊ़न का स्वप्न एक ही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उस ने फ़िरऊ़न को
२६ दिखाया है। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी
२७ सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है। और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से कुम्हलाई हुई हैं से
२८ अकाल के सात बरस हैं। यही बात है जो मैं ने फ़िरऊ़न से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है फ़िरऊ़न को दिखाया
२९ देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी बढ़ती
३० होगी। और उन के पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी और अकाल देश को
३१ नष्ट करेगा। और उस अकाल के मारे वुह बढ़ती देश में
३२ जानी न जायगी क्योंकि वुह बड़ा भारी अकाल होगा। और फ़िरऊ़न पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वुह ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर थोड़े दिन में उसे करेगा।
३३ सो अब फ़िरऊ़न एक चतुर और बुद्धिमान मनुष्य ढूंढे और
३४ उसे मिस्र देश पर ठहरावे। फ़िरऊ़न यही करे और देश पर करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का
३५ पांचवां भाग लिया करे। और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा भोजन एकट्ठा करें और फ़िरऊ़न के बश में अन्न धर रक्खें
३६ और वे अन्न नगरों में धर रक्खें। और वही भोजन मिस्र देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार के लिये होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो॥
३७ तब यह बात फ़िरऊ़न की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों
३८ की दृष्टि में अच्छी लगी। तब फ़िरऊ़न ने अपने सेवकों से कहा क्या हम इस जन के समान पा सक्ते हैं जिस में ईश्वर
३९ का आत्मा है। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा जैसा

ईश्वर ने ये सारी बातें तुझे दिखाई हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान
४० और चतुर कोई नहीं है। तू मेरे घर का करोड़ा हो और
मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं
४१ तुझ से बड़ा हूंगा। फिर फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि देख
४२ मैं ने तुझे मिस्र के सारे देश पर करोड़ा किया। और फ़िरऊ़न
ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकालके उसे यूसुफ़ के हाथ में
पहिना दिई और उसे झीना बस्त्र से बिभूषित किया और सोने
४३ की सिकरी उस के गले में डाली। और उस ने उसे अपने
दूसरे रथ में चढ़ाया और उस के आगे प्रचारा गया कि सन्मान
करो और उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यक्ष किया।
४४ और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि मैं फ़िरऊ़न हूं और तुझ
बिना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ पांव न
४५ उठावेगा। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ का नाम सफनथफानिअख़
रक्खा और उस ने आान के नगर के याजक फूतीफ़रअ़ की
बेटी आसनाथ को उस्से ब्याह दिया॥

४६ और यूसुफ़ मिस्र देश में सर्बत्र फिरा और जब यूसुफ़
मिस्र के राजा फ़िरऊ़न के आगे खड़ा हुआ तब वुह तीस बरस
का था और यूसुफ़ फ़िरऊ़न के आगे से निकलके मिस्र के सारे देश
४७ में सर्बत्र फिरा। और बढ़ती के सात बरसों में भूमि से मुट्ठी
४८ भर भर उत्पन्न हुआ। तब उस ने उन सात बरसों का सारा
भोजन जो मिस्र देश में हुआ एकट्ठे किया और भोजन को
नगरों में धर रक्खा हर नगर के आस पास के खेतों का अन्न
४९ उसी बस्ती में रक्खा। और यूसुफ़ ने समुद्र के बालू की नाईं
बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि
अगणित था॥

५० और अकाल के बरसों से आगे यूसुफ़ के दो बेटे उत्पन्न
हुए जो आन के याजक फूतीफ़रअ़ की बेटी आसनाथ उस के

५१ लिये जनी। सो यूसुफ़ ने पहिले का नाम मुनस्सी रक्खा इस
लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का
५२ सब परिश्रम भुलाया। और दूसरे का नाम इफ़रायम रक्खा इस
लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुःख के देश में फलमान किया॥
५३ और मिस्र देश के बढ़ती के सात बरस बीत गये
५४ और यूसुफ़ के कहने के समान अकाल के सात बरस आने लगे
और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु मिस्र के सारे देश में अन्न
५५ था। और जब कि मिस्र के सारे देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी
के लिये फ़िरऊन के आगे चिल्लाये तब फ़िरऊन ने सारे मिस्रियों
५६ से कहा कि यूसुफ़ पास जाओ और उस का कहा मानो। और
सारी भूमि पर अकाल था और यूसुफ़ ने खत्ते खोल खोल मिस्रियों
के हाथ बेचा और मिस्र के देश में कठिन अकाल पड़ा था।
५७ और सारे देशगण मिस्र में यूसुफ़ से मोल लेने आये क्योंकि
सारे देशों में बड़ा अकाल था॥

बयालीसवां पर्ब्ब।

१ और जब यअक़ूब ने देखा कि मिस्र में अन्न है तब उस ने
२ अपने बेटों से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो। तब
उस ने कहा देखो मैं सुनता हूं कि मिस्र में अन्न है उधर
जाओ और वहां से हमारे लिये मोल लेओ जिसतें हम जीएं
३ और न मरें। सो यूसुफ़ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिस्र
४ में आये। पर यअक़ूब ने यूसुफ़ के भाई बिनयमीन को उस
के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा कहीं ऐसा न
हो कि उस पर कुछ बिपत्ति पड़े॥

५ और इसराएल के बेटे और आनेवालों के साथ मोल लेने
६ आये क्योंकि कनआन देश में अकाल था। और यूसुफ़ उस
देश का अध्यक्ष था और वुह देश के सारे लोगों के हाथ बेचता

करता था सो यूसुफ़ के भाई आये और उन्हों ने उस के आगे
७ भूमि लों प्रणाम किया। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखके
उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अनपहिचान किया और उन
से कठोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम कहां से
८ आये हो और वे बोले अन्न लेने को कनआन देश से। यूसुफ़
ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न
९ पहिचाना। और यूसुफ़ ने उन के बिषय के स्वप्नों को जो उस
ने देखे थे स्मरण किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा
१० देखने को तुम भेदिये होकर आये हो। तब उन्हों ने उसे
कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु आप के सेवक अन्न लेने आये हैं।
११ हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम सच्चे हैं आप के सेवक
१२ भेदिये नहीं हैं। तब वुह उन से बोला कि नहीं परन्तु देश
१३ की कुदशा देखने आये हो। तब उन्हों ने कहा कि हम आप
के सेवक बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे हैं
और देखिये छुटका आज के दिन हमारे पिता पास है और
१४ एक नहीं है। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें
१५ कहा कि तुम लोग भेदिये हो। इसी से तुम जांचे जाओगे
फ़िरऊन के जीवन की किरिया जब लों तुम्हारा छोटा भाई न
१६ आवे तुम जाने न पाओगे। अपना भाई लाने को अपने में से
एक को भेजो और तुम बंदीगृह में रहोगे जिसतें तुम्हारी
बातें जांची जावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं तो फ़िरऊन
१७ के जीवन की किरिया तुम निश्चय भेदिये हो। फिर उस ने
१८ उन को तीन दिन लों बंधन में रक्खा। और तीसरे दिन
यूसुफ़ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो मैं ईश्वर से डरता
१९ हूं। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में
बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये अपने घर में अन्न
२० ले जाओ। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो

तुम्हारी बातें ठहर जायेंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने
२१ ऐसा ही किया। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय
अपने भाई के बिषय में दोषी हैं क्योंकि जब उस ने हम से
बिनती किई और हम ने नहीं सुना हम ने उस के प्राण के
२२ कष्ट को देखा इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी है। तब
रूबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि
इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये
२३ देखो उस के लोहू का यही पलटा है। और वे न जानते थे
कि यूसुफ़ समुझता है क्योंकि उन के मध्य में एक दोभाषिया
२४ था। तब वुह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन
पास आया और उन से बात चीत किई और उन में से समऊन
को लेके उन की आंखों के आगे बांधा॥

२५ तब यूसुफ़ ने उन के बोरों को अन्न से भरने की और हर
जन का रोकड़ उस के बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये
उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और उस ने उन्हें ऐसा ही
२६ किया। और वे अपने गदहों पर अपना अन्न लादके वहां से चल
२७ निकले। और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे
को दाना घास देने को अपना बोरा खोला तो उस ने अपना
२८ रोकड़ देखा और देखो वुह उस के बोरे के मुंह पर था। तब
उस ने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़ फेरा गया है
और देखो कि वुह मेरे बोरे में है सो उन के जी में जी न
रहा और वे डरके एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम
से यह क्या किया॥

२९ और वे कनआन देश में अपने पिता यअकूब पास पहुंचे
३० और सब जो उन पर बीता था उस के आगे दोहराया। कि जो
जन उस देश का स्वामी है सो हम से कठोरता से बोला और
३१ हमें देश का भेदिया ठहराया। और हम ने उसे कहा कि

२ हम तो सच्चे हैं हम भेदिये नहीं हैं । हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं एक नहीं है और सब से छोटा आज
३ अपने पिता के पास कनआन देश में है । तब उस जन ने अर्थात् उस देश के स्वामी ने हम से कहा इस्से मैं जानूंगा कि सच्चे हो अपना एक भाई मुझ पास छोड़ो और अपने
४ घराने के लिये अकाल का भोजन ले जाओ । और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं परन्तु तुम सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंपूंगा
५ और तुम देश में ब्यापार कीजियो । और यों हुआ कि जब उन्हों ने अपना अपना बोरा छूछा किया तो देखो कि हर जन का रोकड़ उस के बोरे में है और जब उन्हों ने और उन के
६ पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं तो डर गये । और उन के पिता यअ़क़ूब ने उन्हें कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान किया यूसुफ़ तो नहीं है और समऊ़न नहीं और तुम लोग बिनयमीन
७ को ले जाने चाहते हो ये सब बातें मुझ से बिरुद्ध हैं । तब रूबिन अपने पिता से कहके बोला जो मैं उसे आप पास न लाऊं तो मेरे दोनों बेटों को मार डालियो उसे मेरे हाथ में सौंपिये
८ और मैं उसे फिर आप पास पहुंचाऊंगा । और उस ने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग न जायगा क्योंकि उस का भाई मर गया है और यह अकेला रह गया जो जाते जाते मार्ग में उस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक के साथ समाधि में उतारोगे ॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ । २ और देश में बड़ा अकाल था । और यों हुआ कि जब वे मिस्र से लाये हुए अन्न को खा चुके तो उन के पिता ने उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल

३ लेओ। तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस पुरुष ने हमें चित
चिता कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो मेर
४ मुंह न देखोगे। जो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेग
५ तो हम जायेंगे और आप के लिये अन्न मोल लेंगे। परन्तु जे
आप न भेजेंगे तो हम न जायेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम
कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तुम मेर
६ मुंह न देखोगे। तब इसराएल ने कहा कि तुम ने मुझ
क्यों ऐसा बुरा व्यवहार किया कि उस पुरुष से कहा कि हमार
७ और एक भाई है। तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें संकेत
से हमारा और हमारे कुटुम्ब का समाचार पूछा कि क्या तुम्हार
पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारा और कोई भाई है सो हम
ने इन बातों के व्यवहार के समान उसे कहा क्या हम निश्चय
जान सक्ते थे कि वुह कहेगा कि अपने भाई को ले आओ।
८ तब यहूदाह ने अपने पिता इसराएल से कहा कि इस तरुण
को मेरे साथ कर दीजिये और हम उठ चलेंगे जिसतें हम
९ और आप और हमारे बालक जीवें और न मरें। मैं उस क
बिचवई हूंगा आप मेरे हाथ से उसे लीजियो जो मैं उसे आ
पास न लाऊं और आप के आगे न धरूं तो आप यह दो
१० मुझ पर सदा धरिये। क्योंकि जो हम बिलंब न करते तो
११ निश्चय अब लों दोहराके फिर आये होते। तब उन के पित
इसराएल ने उन्हें कहा कि जो अब योंहीं है तो यों करो कि
इस देश के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में रख लेओ और
उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ थोड़ा मिर्यास और थोड़ा मधु
१२ कुछ सुगंध द्रव्य और बोल बतम और बदाम। और दून
रोकड़ अपने हाथ में लेओ और वुह रोकड़ जो तुम्हारे बोरे
में फेर लाया गया है अपने हाथ में फेर ले जाओ क्या जाने
१३ वुह भूल से हुआ हो। अपने भाई को भी लेओ उठो और उस

१४ पुरुष पास जाओ। और सर्बशक्तिमान सर्बसामर्थी उस पुरुष को तुम पर दयाल करे जिसतें वुह तुम्हारे दूसरे भाई और बिनयमीन को छोड़ देवे और जो मैं निर्बंश हुआ तो हुआ॥

१५ तब उन मनुष्यों ने वुह भेंट लिया और दूने रोकड़ को अपने हाथ में बिनयमीन समेत लिया और उठे और मिस्र को
१६ उतर चले और यूसुफ़ के आगे जा खड़े हुए। जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उन के संग देखा तो उस ने अपने घर के प्रधान को कहा कि इन मनुष्यों को घर में ले जा और कुछ मारके सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य दोपहर को मेरे संग खायेंगे।
१७ सो जैसा कि यूसुफ़ ने कहा था उस पुरुष ने वैसा ही किया और
१८ वुह उन मनुष्यों को यूसुफ़ के घर में लाया। तब वे मनुष्य यूसुफ़ के घर में पहुंचाये जाने से डर गये और उन्हों ने कहा कि उस रोकड़ के कारण जो पहिले बार हमारे बोरों में फिर गया हम यहां पहुंचाये गये हैं जिसतें वुह हमारे बिरुद्ध एक कारण ढूंढ़े और हम पर लपके और हमें पकड़के दास बनावे और
१९ हमारे गदहों को छीन लेवे। तब उन्हों ने यूसुफ़ के घर के प्रधान पास आके घर के द्वार पर उस्से बात चीत किई।
२० और कहा कि महाशय हम निश्चय पहिले बेर अन्न मोल लेने
२१ आये थे। तो यों हुआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर उतरके अपने बोरों को खोला तो क्या देखते हैं कि हर जन का रोकड़ उस के बोरे के मुंह पर है हमारा रोकड़ सब पूरा था सो हम
२२ उसे अपने हाथ में फिर लाये हैं। और अन्न लेने को हम और रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं हम नहीं जानते कि हमारा
२३ रोकड़ किस ने हमारे बोरों में रख दिया। तब उस ने कहा कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारा रोकड़

मुझे मिल चुका फिर वुह समऊन को उन पास निकाल लाया ॥
२४ और उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ़ के घर में लाके पानी दिया और उन्हों ने अपने चरण धोये और उस ने उन
२५ के गदहों को दाना घास दिया। फिर उन्हों ने दोपहर को यूसुफ़ के आने पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि
२६ हमें भोजन यहीं खाना है। और जब यूसुफ़ घर आया तो वे अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये और उस के आगे
२७ भूमि लों दंडवत किई। और उस ने उन से कुशल क्षेम पूछा और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल से है वुह बृद्ध जिस की
२८ चर्चा तुम ने किई थी अब लों जीता है। और उन्हों ने उत्तर दिया कि आप का सेवक हमारा पिता कुशल से है वुह अब
२९ लों जीता है फिर उन्हों ने सिर झुकाके दंडवत किई। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और अपनी माता के बेटे अपने भाई बिनयमीन को देखा और कहा कि तुम्हारा छुटका भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर कहा कि हे
३० मेरे बेटे ईश्वर तुझ पर दयाल रहे। तब यूसुफ़ ने उतावली किई क्योंकि उस का जी अपने भाई के लिये भर आया और
३१ रोने चाहा और वुह कोठरी में गया और वहां रोया। फिर उस ने अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को
३२ रोका और आज्ञा किई कि भोजन परोसो। तब उन्हों ने उस के लिये अलग और उन के लिये अलग और मिस्रियों के लिये जो उस के संग खाते थे अलग परोसा इस लिये कि मिस्री इबरानियों के संग भोजन नहीं खा सक्ते क्योंकि वुह मिस्रियों
३३ के लिये घिन है। और पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और छुटका अपनी छुटाई के समान वे उस के आगे बैठ गये तब
३४ वे मनुष्य आश्चर्य्य से एक दूसरे को देखने लगे। और उस ने

अपने आगे से भोजन उन पास भेजा परन्तु बिनयमीन का भोजन हर एक के भोजन से पंचगुन था और उन्हों ने उस के साथ जी भरके पीया॥

चौंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई कि उन मनुष्यों के बोरों को जितना वे ले जा सकें अन्न से भर दे और हर एक जन का रोकड़ उस के बोरे के मुंह में डाल दे।
२ और मेरा रूपे का कटोरा छुटके के बोरे के मुंह में उस के अन्न के दाम समेत रख दे सो उस ने यूसुफ़ की आज्ञा के समान किया॥

३ ज्योंहीं दिन निकला वे मनुष्य अपने गदहे समेत बिदा किये
४ गये। जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये तब यूसुफ़ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ उन मनुष्यों का पीछा कर और जब तू उन्हें जा लेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने
५ भलाई की संती बुराई किई है। क्या यह वुह नहीं जिस में मेरा प्रभु पीता है और जिस्से वुह आगम का सत्य संदेश
६ देता है तुम ने इस में बुरा किया है। और उस ने उन्हें जा
७ लिया और ये बातें उन्हें कहीं। तब उन्हों ने उसे कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि आप के
८ सेवक ऐसा काम करें। देखिये यह रोकड़ जो हम ने अपने थैलों में ऊपर पाया सो हम कनआन देश से आप पास फिर लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर
९ से रूपा अथवा सोना चुराया हो। आप के सेवकों में से जिस के पास निकले वुह मार डाला जाय और हम भी अपने
१० प्रभु के दास होंगे। तब उस ने कहा कि तुम्हारी बातों के समान हो जाय जिस के पास वुह निकले सो मेरा दास होगा और तुम

११ निर्दोष ठहरोगे। तब हर एक पुरुष ने तुरंत अपना अपना बोरा भूमि पर उतारा और हर एक ने अपना बोरा खोला।
१२ और वुह बड़के से आरंभ करके छुटके लों ढूंढ़ने लगा और कटोरा बिनयमीन के थैले में पाया गया॥

१३ तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना
१४ गदहा लादा और नगर को फिरा। और यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर आये क्योंकि वुह अब लों वहीं था और वे
१५ उस के आगे भूमि पर गिरे। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा
१६ जन आगम का संदेश दे सक्ता है। तब यहूदाह बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें क्या बोलें अथवा क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई प्रगट किई देखिये कि हम और वुह भी जिस पास कटोरा निकला
१७ अपने प्रभु के दास हैं। तब वुह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करूं जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने पिता पास कुशल से जाओ॥

१८ तब यहूदाह उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप का कोप भड़कने न पावे क्योंकि
१९ आप फ़िरऊन के समान हैं। मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यह
२० कहके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता अथवा भाई है। और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक बृद्ध पिता है और उस का बुढ़ापे का एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और वुह अपनी माता का एक ही रह गया और वुह अपने पिता का
२१ अति प्रिय है। तब आप ने अपने सेवकों से कहा कि उसे मेरे पास
२२ लाओ जिसतें मेरी दृष्टि उस पर पड़े। तब हम ने अपने प्रभु से कहा कि वुह तरुण अपने पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि

जो वुह अपने पिता को छोड़ेगा तो उस का पिता मर जायगा ।
२३ फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि जब लों तुम्हारा छुटका भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे ।
२४ और यों हुआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता पास
२५ गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें उस्से कहीं । तब हमारा पिता
२६ बोला फिर जाओ हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ । तब हम बोले कि हम नहीं जा सक्ते जो हमारा छुटका भाई हमारे साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब लों हमारा छुटका भाई हमारे साथ न हो हम उस जन का मुंह न देखने
२७ पावेंगे । और आप के सेवक मेरे पिता ने हमें कहा कि तुम
२८ जानते हो कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी । और एक मुझ से अलग हुआ और मैं ने कहा निश्चय वुह फाड़ा गया और
२९ मैं ने उसे अब लों न देखा । अब जो तुम इसे भी मुझ से अलग करते हो और इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के
३० बालों को शोक से समाधि में उतारोगे । अब इस लिये जब मैं आप का सेवक अपने पिता पास पहुंचूं और वुह तरुण हमारे साथ न हो और इस कारण से कि उस का जीव इस के
३१ जीव से बंधा है । तो यही होगा कि वुह यह देखकर कि तरुण नहीं है मरही जायगा और आप के सेवक अपने
३२ पिता के पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारेंगे । क्योंकि आप के सेवक ने अपने पिता पास इस तरुण का बिचवई होके कहा कि यदि मैं इसे आप पास न पहुंचाऊं तो मैं सर्बदा लों
३३ अपने पिता का अपराधी हूंगा । अब मेरी बिनती सुनिये कि आप का सेवक तरुण की संती अपने प्रभु का दास होके रहे
३४ और तरुण को उस के भाइयों के संग जाने दीजिये । क्योंकि जो तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊं ऐसा न होवे कि जो बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखूं ॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ़ उन सब के आगे जो उस पास खड़े थे अपने को रोक न सका और चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास से बाहर करो सो जब यूसुफ़ ने अपने को अपने भाइयों पर प्रगट
२ किया तब कोई उस के संग न था। और वुह चिल्लाके रोया
३ और मिस्रियों और फ़िरऊन के घराने ने सुना। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों को कहा कि मैं यूसुफ़ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है तब उस के भाई उसे उत्तर न दे सके क्योंकि वे
४ उस के आगे घबरा गये। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मेरे पास आइये तब वे पास आये और वुह बोला मैं तुम्हारा
५ भाई यूसुफ़ हूं जिसे तुम ने मिस्र में बेचा। सो इस लिये कि तुम ने मुझे यहां बेचा उदास न होओ और ब्याकुल मत होओ क्योंकि ईश्वर ने तुम से आगे मुझे प्राण बचाने को भेजा
६ क्योंकि दो बरस से भूमि पर अकाल है और अभी और पांच
७ बरस लों बोना लवना न होगा। और तुम्हारे बंश की पृथिवी पर रक्षा करने को और बड़े उद्धार से तुम्हारे प्राण बचाने को
८ ईश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा। सो अब तुम ने नहीं परन्तु ईश्वर ने मुझे यहां भेजा और उस ने मुझे फ़िरऊन के पिता के तुल्य बनाया और उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस्र
९ देश का अध्यक्ष बनाया। फुरती करो और मेरे पिता पास जाओ और उसे कहियो कि आप का बेटा यूसुफ़ यों कहता है कि ईश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी किया मुझ पास चले
१० आइये ठहरिये मत। और आप जश्न की भूमि में रहियेगा और आप और आप के लड़के और आप के लड़कों के लड़के और आप के झुंड और आप के ढोर और जो कुछ आप का है
११ मेरे पास रहेंगे। और वहां मैं आप का प्रतिपाल करूंगा क्योंकि

अब भी अकाल के पांच बरस हैं न हो कि आप और आप का
२ घराना और सब जो आप के हैं कंगाल हो जायें। और देखो
तुम्हारी आंखें और मेरे भाई बिनयमीन की आंखें देखती हैं
३ कि मेरा मुंह आप लोगों से बोलता है। और तुम मेरे पिता
से मेरे बिभव की जो मिस्र में है और सब कुछ कि जो तुम
ने देखा है चर्चा कीजियो और फुरती करो और मेरे पिता को यहां
४ ले आओ। और वुह अपने भाई बिनयमीन के गले लगके रोया
५ और बिनयमीन उस के गले लगके रोया। और उस ने अपने
सब भाइयों को चूमा और उन से मिलके रोया और उस
के पीछे उस के भाइयों ने उस्से बातें किईं॥

६ और इस बात की कीर्त्ति फ़िरऊ़न के घर में सुनी गई कि
यूसुफ़ के भाई आये हैं और उस्से फ़िरऊ़न और उस के सेवक
७ बहुत आनन्दित हुए। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि
अपने भाइयों से कह कि यह करो अपने पशुन को लादो और
८ कनआ़न देश में जा पहुंचो। और अपने पिता और अपने
घरानों को ले आओ और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिस्र देश
की अच्छी बस्तें दूंगा और तुम इस देश का पदारथ खाओगे।
९ सो अब तुझे यह आज्ञा है यह करो कि मिस्र देश से अपने
लड़के वालों और अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और
१० अपने पिता को ले आओ। और अपनी सामग्री की कुछ चिंता
न करो क्योंकि मिस्र देश के सारे पदारथ तुम्हारे हैं॥

११ और इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और यूसुफ़ ने
फ़िरऊ़न के कहे के समान उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के
१२ लिये उन्हें भोजन दिया। और उस ने उन सब में से हर एक को
बस्त्र दिये परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सौ टुकड़े चांदी
१३ और पांच जोड़े बस्त्र दिये। और अपने पिता के लिये इस
रीति से भेजा दस गदहे मिस्र की अच्छी बस्तुन से लदे हुए

और दस गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदी हु
२४ अपने पिता की याचा के लिये। सो उस ने अपने भाइयों क
बिदा किया और वे चल निकले तब उस ने उन्हें कहा कि
देखो मार्ग में कहीं आपुस में बिगड़ो मत॥
२५ और वे मिस्र से सिधारे और अपने पिता यअ़्क़ूब पा
२६ कनआ़न देश में पहुंचे। और यह कहके उसे बोले कि यूसु
तो अब लों जीता है और वुह सारे मिस्र देश का अध्यक्ष
और उस का मन सनसना गया क्योंकि उस ने उन की प्रतीति
२७ किई। और उन्हों ने यूसुफ़ की कही हुई सारी बातें उस
दुहराईं और जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ़ ने उसे ले जा
के लिये भेजी थीं देखीं तो उन के पिता यअ़्क़ूब का न
२८ जीवन हुआ। और इसराएल बोला यह बस है कि मेरा बे
यूसुफ़ अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपने मरने से अ
उसे देखूंगा॥

छियालीसवां पर्ब्ब।

१ और इसराएल ने अपना सब कुछ लेके याचा किई औ
बीअरसबअ़ में आके अपने पिता इज़हाक़ के ईश्वर के लि
२ बलिदान चढ़ाया। और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल
बातें करके कहा कि हे यअ़्क़ूब यअ़्क़ूब और वुह बोला
३ यहां हूं। तब उस ने कहा कि मैं सर्बशक्तिमान तेरे पिता
ईश्वर हूं मिस्र में जाते हुए मत डर क्योंकि मैं तुझे वहां ब
४ जाति बनाऊंगा। मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा और मैं तु
भी अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ़ तेरी आंखें मूंदेग
५ तब यअ़्क़ूब बीअरसबअ़ से उठा और इसराएल के बेटे अ
पिता यअ़्क़ूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों
गाड़ियों पर जो फ़िरऊ़न ने उस के पहुंचाने को भेजी थीं

चले । और उन्हों ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्हों ने कनआन देश में पाई थी ले लिई और यअक़ूब अपने सारे बंश समेत मिस्र में आया । वुह अपने बेटों और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे बंश को मिस्र में लाया ॥

और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात् यअक़ूब के बेटे ये हैं यअक़ूब का पहिलौठा रूबिन । और रूबिन के बेटे हनूक और फ़लू और हसरून और करमी । और समऊन के बेटे यमूएल और यमीन और ओहद और यकीन और सुहर और कनआनी स्त्री का बेटा साऊल । और लावी के बेटे जैरसुन क़िहात और मिरारी । और यहूदाह के बेटे एर और ओनान और सेल: और फारस और ज़रह परन्तु एर और ओनान कनआन देश में मर गये और फारस के बेटे हसरून और हमूल हुए । और इशकार के बेटे तोलअ और फूव: और यूब और समरून । और ज़बूलून के बेटे सरद और ऐलून और यहहिएल । ये लियाह के बेटे हैं जिन्हें वुह फद्दानअराम में यअक़ूब के लिये जनी उस के सारे बेटे बेटियां तेंतीस प्राणी उस की बेटी दीन: के संग थे । और जद के बेटे सिफयून और हज्जी शूनी और इसबून एरी और अरूदी और अरेली । और यसर के बेटे यिमन: और इसवाह और इसवी और बरीअ: और उन की बहिन सिरह और बरीअ: के बेटे हिब्र और मलक़िएल । ये उस ज़िलफ़: के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था और इन्हें वुह यअक़ूब के लिये जनी अर्थात् सोलह प्राणी । और यअक़ूब की पत्नी राख़िल से यूसुफ़ और बिनयमीन । और मिस्र देश में यूसुफ़ के लिये मुनस्सी और इफरायम उत्पन्न हुए जिन्हें ऊन के अध्यक्ष फूतीफ़र की बेटी आसनाथ जनी । और बिनयमीन के बेटे

बालिग और बकर और असबील जैरा और नअमान अखी और
२२ रूस मुप्पिम और हुफ़ीम और अरद। इन्हें राख़िल यअक़ूब
२३ के लिये जनी सब चौदह प्राणी। और दान का बेटा होशीम
२४ और नफताली के बेटे यहलिएल और जूनी और यिस्र और
२५ सलीम। ये बिलहः के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी
राख़िल को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वुह यअक़ूब
के लिये जनी॥

२६ सारे प्राणी जो यअक़ूब के साथ मिस्र में आये और उस की
कटि से उत्पन्न हुए उन से अधिक जो यअक़ूब के बेटों की
२७ स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे। और यूसुफ़ के बेटे जो मिस्र
में उत्पन्न हुए दो थे सो सारे प्राणी जो यअक़ूब के घराने के
थे और मिस्र में आये सत्तर थे॥

२८ और उस ने यहूदाह को अपने आगे आगे जश्न लों अपनी
अगुआई करने को यूसुफ़ कने भेजा और वे जश्न की भूमि में
२६ आये। और यूसुफ़ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता
इसराएल से भेंट करने के लिये जश्न को गया और उस पास
३० पहुंचा और उस के गले पर गिरके अबेर लों रोया किया। और
इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध हूं कि
३१ मैं ने तेरा मुंह देखा क्योंकि तू अब भी जीता है। और यूसुफ़
ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं
संदेश देने को फ़िरऊ़न पास जाता हूं और उसे कहता हूं कि
मेरे भाई और मेरे पिता का घराना जो कनआन देश में थे
३२ मेरे पास आये हैं। और वे मनुष्य गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना
उन का उद्यम है और वे अपनी झुंड और ढोर और सब कुछ जो
३३ उन का है ले आये हैं। और यों होगा कि जब फ़िरऊ़न तुम्हें
३४ बुलाके तुम्हारा उद्यम पूछे। तो कहियो कि आप के दास
लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या

हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग जश्न की भूमि में रहो क्योंकि मिस्रियों को हर एक गड़रिये से घिन है॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ तब यूसुफ़ आया और फ़िरऊ़न से कहके बोला कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की झुंड और उन के ढोर और सब जो उन के हैं कनआ़न देश से निकल आये और देखिये
२ कि जश्न की भूमि में हैं। और उस ने अपने भाइयों में से
३ पांच जन लेके उन्हें फ़िरऊ़न के आगे किया। और फ़िरऊ़न ने उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारा उद्यम क्या तब उन्हों ने फ़िरऊ़न को कहा कि आप के सेवक क्या हम और क्या हमारे
४ बाप दादे गड़रिये हैं। और उन्हों ने फ़िरऊ़न से कहा कि हम इस देश में रहने को आये हैं क्योंकि कनआ़न देश में अकाल के मारे आप के सेवकों की झुंड के लिये चराई नहीं है तो अब अपने सेवकों को जश्न की भूमि में रहने दीजिये।
५ तब फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई
६ तुझ पास आये हैं। मिस्र देश तेरे आगे है अपने पिता और अपने भाइयों को सब से अच्छी भूमि में बसा जश्न की भूमि में रहें और जो तू उन में चालाक मनुष्य जानता है तो उन्हें मेरे ढोरों पर प्रधान कर॥

७ तब यूसुफ़ अपने पिता यअ़क़ूब को भीतर लाया और उसे फ़िरऊ़न के आगे खड़ा किया और यअ़क़ूब ने फ़िरऊ़न को
८ आशीस दिया। और फ़िरऊ़न ने यअ़क़ूब से पूछा कि तेरे
९ जीवन के बय के बरसों के दिन कितने हैं। तब यअ़क़ूब ने फ़िरऊ़न से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस एक सौ तीस हैं मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे हुए हैं और मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को जब वे यात्रा करते

१० थे नहीं पहुंचे। और यअ़क़ूब ने फ़िरऊ़न को आशीष दिया और फ़िरऊ़न के आगे से बाहर गया॥

११ और यूसुफ़ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र देश में सब से अच्छी भूमि में रामसीस की भूमि में जैसा फ़िरऊ़न ने
१२ कहा था रक्खा और अधिकारी किया। और यूसुफ़ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे घराने को उन के लड़के बालों के समान प्रतिपाल किया॥

१३ और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा बड़ा कठिन अकाल था कि मिस्र देश और कनआ़न देश अकाल के मारे
१४ झोंस गया था। और यूसुफ़ ने सारे रोकड़ को जो मिस्र देश और कनआ़न देश में था उस अन्न की संती जो लोगों ने मोल लिया बटोरा और यूसुफ़ उस रोकड़ को फ़िरऊ़न के घर में
१५ लाया। और जब मिस्र देश और कनआ़न देश में रोकड़ हो चुका तो सारे मिस्रियों ने आके यूसुफ़ से कहा कि हमें रोटी दीजिये कि आप के होते हुए हम क्यों मरें क्योंकि रोकड़ हो
१६ चुका है। तब यूसुफ़ ने कहा कि जो रोकड़ न होय तो अपने
१७ ढोर देओ और मैं तुम्हारे ढोर की संती दूंगा। तब वे अपने ढोर यूसुफ़ के पास लाये और यूसुफ़ ने उन्हें घोड़ों और झुंडों और ढोरों के चौपाये और गदहों की संती रोटी दिई और उस ने उन के ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला॥

१८ और जब वुह बरस बीत गया तब वे दूसरे बरस उस पास आये और उसे कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपावेंगे कि हमारा रोकड़ उठ गया हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों की झुंड भी लिई सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारी देह और भूमि से अधिक
१९ कुछ न बचा। हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों के आगे क्यों नष्ट होवें हमें और हमारी भूमि को रोटी पर मोल लीजिये और हम अपनी भूमि समेत फ़िरऊ़न के दास होंगे

और अन्न दीजिये जिसतें हम जीवें और न मरें और देश
२० उजड़ न जाय । और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरऊन
के लिये मोल लिई क्योंकि मिस्रियों में से हर एक ने अपना
अपना खेत बेचा क्योंकि अकाल ने उन्हें निपट सकेत किया
२१ था सो वुह भूमि फ़िरऊन की हो गई । और रहे लोग सो उस
ने उन्हें नगरों में मिस्र के एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों भेजा।
२२ उस ने केवल याजकों की भूमि मोल न लिई क्योंकि याजकों
ने फ़िरऊन से एक भाग पाया था और फ़िरऊन के दिये हुए
भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने अपनी भूमि को न बेचा।
२३ तब यूसुफ़ ने लोगों से कहा कि देखो मैं ने आज के दिन
तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फ़िरऊन के लिये मोल लिया है
२४ यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में बोओ। और उस की
बढ़ती में ऐसा होगा कि तुम पांचवां भाग फ़िरऊन को देना
और चार भाग खेत के बीज के लिये और तुम्हारे और तुम्हारे
२५ घराने के और तुम्हारे बालकों के भोजन के लिये होंगे। तब
वे बोले कि आप ने हमारे प्राण बचाये हैं हम अपने प्रभु की
२६ दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम फ़िरऊन के दास होंगे। और
यूसुफ़ ने मिस्र देश के लिये आज लों यह व्यवस्था बांधी कि
फ़िरऊन पांचवां भाग पावे परन्तु केवल याजकों की भूमि
फ़िरऊन की न हुई ॥

२७ और इसराएल ने मिस्र की भूमि में जश्न के देश में निवास
किया और वे वहां अधिकारी थे और वे बढ़े और बहुत अधिक
२८ हुए। और यअकूब मिस्र देश में सत्रह बरस जीया सो यअकूब
२९ के जीवन के बरसों के दिन एक सै। सैंतालीस हुए। और
इसराएल के मरने का समय आ पहुंचा तब उस ने अपने बेटे
यूसुफ़ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पाया है अपना हाथ मेरी जांघ तले रखिये और दया और सच्चाई

३० से मेरे संग व्यवहार कर मुझे मिस्र में मत गाड़ियो। परन्तु में अपने पितरों में पड़ रहूंगा और तू मुझे मिस्र से बाहर ले जाइयो और उन के समाधि स्थान में गाड़ियो तब वुह बोल
३१ कि आप के कहने के समान मैं करूंगा। और उस ने कहा कि मेरे आगे किरिया खा और उस ने उस के आगे किरिया खाई और इसराएल खाट के सिरहाने पर झुक गया॥

अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि किसी ने यूसुफ़ से कहा कि देखिये आप का पिता रोगी है तब उस ने अपने दो
२ बेटे मुनस्सी और इफ़रायम को अपने साथ लिया। और यअ़क़ूब को संदेश दिया गया कि देख तेरा बेटा यूसुफ़ तुझ पास आता
३ है और इसराएल खाट पर संभल बैठा। और यअ़क़ूब ने यूसुफ़ से कहा कि सर्बशक्तिमान सर्बसामर्थी ने कनआ़न देश
४ के लौज़ में मुझे दर्शन दिया और मुझे आशीष दिया। और मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलमान करूंगा और बढ़ाऊंगा और तुझ से बहुत सी जाति उत्पन्न करूंगा और तेरे पीछे इस देश
५ को तेरे बंश के लिये सर्बदा का अधिकार करूंगा। और अब तेरे दो बेटे इफ़रायम और मुनस्सी जो मिस्र में मेरे आने से आगे तुझ से मिस्र देश में उत्पन्न हुए हैं मेरे हैं रूबिन और
६ समऊ़न की नाईं वे मेरे होंगे। और तेरा बंश जो उन के पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा और अपने अधिकार में वे अपने
७ भाइयों के नाम पावेंगे। और मैं जो हूं सो जब फद्दान से आया और इफ़रात: थोड़ी दूर रह गया था तब कनआ़न देश के मार्ग में राख़िल मेरे पास मर गई और मैं ने इफ़रात: के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतलहम है॥

८ तब इसराएल ने यूसुफ़ के बेटों को देखके कहा ये कौन

९ हैं। और यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है और वुह बोला उन्हें मुझ
१० पास लाइये और मैं उन्हें आशीष दूंगा। अब इसराएल की आंखें बुढ़ापे के मारे धुंधली हुई थीं कि वुह न देख सका और वुह उन्हें उस के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और उन्हें गले
११ लगाया। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि मुझे तो तेरे मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा बंश भी
१२ मुझे दिखाया। और यूसुफ़ ने उन्हें अपने घुठनों में से निकाला
१३ और अपने को भूमि पर झुकाया। और यूसुफ़ ने उन दोनों को लिया इफ़रायम को अपने दहिने हाथ में इसराएल के बाएं हाथ की ओर और मुनस्सी को अपने बाएं हाथ में इसराएल
१४ के दहिने हाथ की ओर और उस के पास लाया। तब इसराएल ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और इफ़रायम के सिर पर जो छुटका था रक्खा और अपना बायां हाथ मुनस्सी के सिर पर जान बूझके अपने हाथ को यों रक्खा क्योंकि मुनस्सी पहिलौंठा था॥

१५ और उस ने यूसुफ़ को बर दिया और कहा कि वुह ईश्वर जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ चलते थे वुह
१६ ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों मेरी रखवाली किई। वुह दूत जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन लड़कों को आशीष देवे और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ का नाम उन पर होवे और उन्हें पृथिवी पर मछलियों की नाईं बढ़ावे।
१७ और जब यूसुफ़ ने अपने पिता को अपना दहिना हाथ इफ़रायम के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने पिता का हाथ उठा लिया जिसतें उसे इफ़रायम के सिर पर से
१८ मुनस्सी के सिर पर रखे। और यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना

१६ दहिना हाथ उस के सिर पर रखिये। पर उस के पिता ने न माना और कहा कि मैं जानता हूं हे मेरे बेटे मैं जानता हूं वुह भी एक जातिगण बन जायगा और वुह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उस का छुटका भाई उस्से भी बड़ा होगा और
२० उस के बंश भरपूर जातिगण बन जायेंगे। और उस ने उन्हें उस दिन यह कहके आशीष दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके यह आशीष देंगे कि ईश्वर तुझे इफ़रायम और मुनस्सी की नाईं बनावे सो उस ने इफ़रायम को मुनस्सी से आगे किया॥

२१ और इसराएल ने यूसुफ को कहा कि देख मैं मरता हूं परन्तु ईश्वर तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के
२२ देश में फिर ले जायगा। और मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपनी तलवार और अपनी धनुष से निकाला दिया है॥

उंचासवां पर्व्व।

१ और यअक़ूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे होओ जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से कहूं॥

२ हे यअक़ूब के बेटो बटुर जाओ और सुनो और अपने पिता इसराएल की ओर कान धरो॥

३ हे रूबिन तू मेरा पहिलौंठा मेरा बूता और मेरे सामर्थ्य का आरंभ महिमा की उत्तमता और पराक्रम की उत्तमता।
४ जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिछौने पर चढ़के उसे अशुद्ध किया॥

५ समऊन और लावी भाई हैं अंधेर के हथियार उन की
६ तलवारें हैं। हे मेरे प्राण तू उन के भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा

तू उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध से एक मनुष्य को घात किया और अपनी ही इच्छा से बैल की
७ खूंच मारी । धिक्कार उन की रिस पर क्योंकि वुह प्रचंड था और उन के कोप पर क्योंकि वुह क्रूर था मैं उन्हें यअ़कूब में अलग करूंगा और इसराएल में उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा ॥

८ यहूदाह तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ तेरे बैरियों की गरदन पर होगा तेरे पिता के बंश तेरे आगे दंडवत करेंगे ।
९ यहूदाह सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठ चला वुह सिंह की हां बड़े सिंह की नाईं झुका और बैठा उसे कौन
१० छेड़ेगा । यहूदाह से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक उस के चर्णों के मध्य में से जब लों सैला न आवे और जातिगण
११ उस के आधीन होंगे । उस ने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा चुने हुए दाख से बांधके अपने कपड़े दाखरस
१२ में और अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया । उस की आंखें दाखरस से लाल और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे ॥

१३ ज़बूलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाज़ों के लिये घाट होगा और उस का सिवाना सैदा लों ॥

१४ इशकार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है ।
१५ और उस ने बिश्राम को देखा कि अच्छा है और भूमि को कि सुदृश्य है और उस ने अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया और कर देने का दास हुआ ॥

१६ दान इसराएल की गोष्ठियों में के एक की नाईं अपने लोगों
१७ का न्याय करेगा । दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े की नलियों को ऐसा डसेगा कि उस का चढ़वैया पिछाड़ी गिर पड़ेगा ॥

१८ हे परमेश्वर मैं ने तेरी मुक्ति की बाट जोही है ॥

१९ एक सेना जद को जीतेगी परन्तु वुह अंत को आप जीतेगा ॥

२० यसर की रोटी चिकनी होती और वुह राज्य पदारथ देगा ॥

२१ नफताली एक छोड़ा हुआ हरिन है जो सुबचन कहता है॥

२२ यूसुफ् एक फलमय डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते
२३ के लग है जिस की डालियां भीत पर फैलती हैं। और धनुषधारियों ने उसे निपट सताया और मारा और उस्से डाह
२४ रक्खा। और उस का धनुष बल में दृढ़ रहा और उस के हाथों की भुजाओं ने यअ़कूब के सर्बशक्तिमान के हाथों से बल
२५ पाया वहां से गड़रिया इसराएल की चटान है। तेरे पिता का सर्बशक्तिमान तेरी सहाय करेगा और सर्बसामर्थी जो तुझे ऊपर से स्वर्गीय आशीष और नीचे गहिराव के आशीष और स्तनों
२६ का और कोख का आशीष देगा। तेरे पिता के आशीष मेरे माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि सनातन पर्बतों के अंत लों बढ़ गये ये यूसुफ् के सिर पर और उस के सिर के मुकुट पर होंगे जो अपने भाइयों से अलग था॥

२७ बिनयमीन फड़वैया हुंडार होगा बिहान को अहेर भक्षेगा और सांझ को लूट बांटेगा॥

२८ ये सब इसराएल की बारह गोष्ठी हैं और उन के पिता ने उन्हें यह कहके आशीष दिया और अपने आशीष के समान
२९ हर एक को बर दिया। फिर उस ने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हूं मुझे अपने पितरों में उस कंदला में जो हित्ती इफरून के खेत में है गाड़ियो।
३० उस कंदला में जो मकफील: के खेत में ममरी के आगे कनआन देश में है जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार को
३१ लिये खेत समेत इफ़रून हित्ती से मोल लिया था। वहां उन्हों ने अबिरहाम को और उस की पत्नी सर: को गाड़ा वहां उन्हों ने इज़हाक को और उस की पत्नी रिबक़: को गाड़ा और वहां

३२ मैं ने लियाह को गाड़ा । उन्हों ने वुह खेत उस कंदला समेत जो उस में था हित्त के बेटों से मोल लिया ॥

३३ और जब यअ़कूब अपने बेटों को आज्ञा कर चुका तो उस ने बिछौने पर अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने लोगों में जा मिला ॥

पचासवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ़ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर २ रोया और उसे चूमा । तब यूसुफ़ ने अपने पिता में सुगंध भरने के लिये अपने बैद्य सेवकों को आज्ञा किई और बैद्यों ने ३ इसराएल में सुगंध भरा । और उस के लिये चालीस दिन बीत गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीत्ते हैं और मिस्रियों ने उस के लिये सत्तर दिन लों बिलाप किया । ४ और जब रोने के दिन उस के लिये बीत गये तो यूसुफ़ ने फ़िरऊ़न के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह ५ पाया है तो फ़िरऊ़न के कानों में कह दीजिये । कि मेरे पिता ने मुझ से क़िरिया लिई कि देख मैं मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि में जो मैं ने कनआ़न देश में अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो मेरे पिता के गाड़ने को मुझे छुट्टी दीजिये और मैं फिर आऊंगा । ६ और फ़िरऊ़न ने कहा कि जा और तुझ से क़िरिया लेने के समान अपने पिता को गाड़ ॥

७ सो यूसुफ़ अपने पिता को गाड़ने गया और फ़िरऊ़न के सारे सेवक और उस के घर के प्राचीन और मिस्र देश के सारे प्राचीन ८ उस के संग गये । और यूसुफ़ का सारा घराना और उस के भाई और उस के पिता का घराना सब उस के संग गये उन्हों ने केवल अपने बालक और झुंड और ढोर जश्न की भूमि में ९ छोड़ दिये । और रथ और घोड़चढ़े उस के साथ गये और

१० वुह एक अति बड़ी सेना थी। और वे अतद के खलिहान पर जो यरदन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े बिलाप से बिलाप किया और उस ने अपने पिता के लिये सात ११ दिन लों शोक किया। जब उस देश के बासी कनआनियों ने अतद के खलिहान का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिस्रियों के लिये बड़ा बिलाप है इस लिये उस का नाम मिस्रियों का बिलाप १२ कहलाया और वुह यरदन के पार है। और उस की आज्ञा के १३ समान उस के बेटों ने उस्से किया। क्योंकि उस के बेटे उसे कनआन देश में ले गये और उसे उस मकफील: के खेत की कंदला में जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के लिये इफरून हित्ती से ममरी के साम्ने मोल लिया था गाड़ा। १४ और यूसुफ़ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ उस के पिता को गाड़ने गये थे उस के पिता को गाड़के मिस्र को फिरे॥

१५ और जब यूसुफ़ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तो उन्हों ने कहा क्या जाने यूसुफ़ हम से बैर करेगा और उस सारी बुराई का जो हम ने उस्से किई है निश्चय पलटा लेगा। १६ तब उन्हों ने यूसुफ़ को यों कहला भेजा आप के पिता ने मरने १७ से पहिले आज्ञा किई। कि यूसुफ़ से कहियो कि अपने भाइयों के पाप और उन के अपराध क्षमा कीजिये क्योंकि उन्हों ने तुझ से बुराई किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा १८ कीजिये और जब उन्हों ने यह कहा तो यूसुफ़ रोया। और उस के भाई भी गये और उस के आगे गिर पड़े और उन्हों ने कहा १९ कि देखिये हम आप के सेवक हैं। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा २० कि मत डरो कि क्या मैं ईश्वर की संती हूं। पर तुम जो हो तुम ने मुझ से बुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे जैसा कि

२१ आज है। तो अब मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालकों का प्रतिपाल करूंगा और उस ने उन्हें धीरज दिया और उन से शान्ति की बातें कहीं ॥

२२ और यूसुफ़ और उस के पिता के घराने ने मिस्र में निवास
२३ किया और यूसुफ़ एक सौ दस बरस जीया। और यूसुफ़ ने इफरायम की तीसरी पीढ़ी देखी और मुनस्सी के बेटे मकीर के भी लड़के यूसुफ़ के घुठनों पर जनाये गये ॥

२४ और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मैं मरता हूं और ईश्वर तुम से निश्चय भेंट करेगा और तुम्हें इस देश से बाहर उस देश में जिस के बिषय में उस ने अबिरहाम इज़्हाक
२५ और यअ़क़ूब से किरिया खाई थी ले जायगा। और यूसुफ़ ने इसराएल के संतानों से यह किरिया लेके कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से भेंट करेगा और तुम मेरी हड्डियों को यहां से ले जाइयो।
२६ सो यूसुफ़ एक सौ दस बरस का होके मर गया और उन्हों ने उस में सुगंध भरा और उसे मिस्र में मंजूषा में रक्खा ॥

यात्रा की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने
२ घराने को लेके यअकूब के साथ मिस्र में आया। रूबिन समऊन
३।४ लावी और यहूदाह। इशकार ज़बूलून और बिनयमीन। दान
५ और नफताली जद और यसर। और समस्त प्राणी जो यअकूब की
जांघ से उत्पन्न हुए सत्तर प्राणी थे और यूसुफ़ तो मिस्र में
६ था। और यूसुफ़ और उस के सारे भाई और वुह समस्त पीढ़ी
७ मर गई। परन्तु इसराएल के संतान फलमान हुए और बहुताई
से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत सामर्थी हुए और
देश उन से भर गया॥

८ तब मिस्र में एक नया राजा उठा जो यूसुफ़ को न जानता
९ था। और उस ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल के
१० संतानों के लोग हम से अधिक और बलवंत हैं। आओ हम
उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़ जायें और
ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे हमारे बैरियों से मिल जावें
११ और हम से लड़ें और देश से निकल जायें। इस लिये
उन्हों ने उन पर करोड़ों को बैठाया कि उन्हें अपने बोझों से
सतावें और उन्हों ने फ़िरऊन के लिये भंडार नगरों को अर्थात्
१२ पितोम और रामसीस को बनाया। परन्तु ज्यों ज्यों वे उन्हें

दुख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और वे
१३ इसराएल के संतान के कारण से दुखी थे। और इसराएल के
१४ संतानों से मिस्रियों ने क्लेश से सेवा कराई। और उन्हों ने
कठिन सेवा से गारा और ईंट का कार्य्य और खेत की भांति
भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कड़ुआ कर डाला उन
की सारी सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी॥

१५ तब मिस्र के राजा ने इबरानी जनाई दाइयों को जिन में
एक का नाम सिफ़र: और दूसरी का नाम फूआ: था यों कहा।
१६ कि जब इबरानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य्य करावें
और तुम उन्हें पत्थरों पर देखो यद्यपि पुच होय तो उसे मार
१७ डालो और यदि पुची होय तो जीने दो। परन्तु जनाई दाई
ईश्वर से डरती थीं और जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें आज्ञा
१८ किई थी वैसा न किया परन्तु पुचों को जीता छोड़ा। फिर
मिस्र के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया और उन्हें कहा
कि तुम ने ऐसा क्यों किया और पुचों को क्यों जीता छोड़ा।
१९ तब जनाई दाइयों ने फ़िरऊन से कहा इस कारण कि इबरानी
स्त्री मिस्र की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं
और उस्से पहिले कि जनाई दाई उन पास पहुंचे वे जन
२० बैठती हैं। इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुब्यवहार
२१ किया और लोग बढ़ गये और अत्यंत बलवंत हुए। और इस
कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं यों हुआ कि उस ने
२२ उन को बसाया। और फ़िरऊन ने अपने समस्त लोगों को
आज्ञा किई कि हर एक पुच जो उत्पन्न होय तुम उसे नील
नदी में डाल देओ और हर एक पुची को जीती छोड़ो॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और लावी के घराने के एक मनुष्य ने जाकर लावी की एक

२ पुत्री ग्रहण किई। और वुह स्त्री गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उसे सुन्दर देखके तीन मास लों छिपा रक्खा।
३ और जब आगे को उसे छिपा न सकी तो उस ने सरकंडों का एक टोकरा बनाया और उस पर लासा और राल लगाया और उस बालक को उस में रक्खा और उस ने उसे नील नदी के
४ तीर पर झाऊ में रख दिया। और उस की बहिन दूर से खड़ी देखती थी कि उस का क्या होगा॥
५ तब फ़िरऊ़न की पुत्री स्नान करने को नदी पर उतरी और उस की सहेलियां नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने झाऊ के मध्य में टोकरा देखकर अपनी सहेली को भेजा और उसे ले
६ लिया। जब उस ने उसे खोला तो बालक को देखा और देखो कि बालक रोता है और वुह उस पर दाया करके बोली कि यह
७ किसी इबरानियों के बालकों में से है। तब उस की बहिन ने फ़िरऊ़न की पुत्री को कहा क्या मैं जाके इबरानी स्त्रियों में से एक दाई तुझ पास ले आऊं जिसतें वुह तेरे लिये इस बालक
८ को दूध पिलावे। और फ़िरऊ़न की पुत्री ने उसे कहा कि जा
९ तब वुह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया। और फ़िरऊ़न की पुत्री ने उसे कहा कि इस बालक को ले जा और मेरे लिये उसे दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी दूंगी और उस स्त्री
१० ने उस लड़के को लिया और उसे दूध पिलाया। और जब बालक बढ़ा तब वुह उसे फ़िरऊ़न की पुत्री पास लाई और वुह उस का पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम मूसा रक्खा और कहा कि मैं ने उसे पानी से निकाला॥
११ और उन दिनों में यों हुआ कि जब मूसा सयाना हुआ तब वुह अपने भाइयों पास बाहर गया और उन के बोझों को देखा और अपने भाइयों में से एक इबरानी को देखा कि मिस्री
१२ उसे मार रहा है। तब उस ने इधर उधर दृष्टि किई और

देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस मिस्री को मार डाला और
३ बालू में उसे छिपा दिया। जब वुह दूसरे दिन बाहर गया तो
देखा कि दो इबरानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उस ने उस
४ अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को क्यों मारता है। तब
उस ने कहा कि किस ने तुझे हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी
ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति से तू ने मिस्री को
मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और कहा कि
५ निश्चय यह बात खुल गई। जब फ़िरऊ़न ने यह बात सुनी
तो चाहा कि मूसा को मार डाले।

परन्तु मूसा फ़िरऊ़न के आगे से भाग निकला और मदियान
६ के देश में जा रहा और एक कुए के निकट बैठ गया। और
मदियान के याजक की सात पुत्री थीं और वे आईं और खींचने
लगीं और कठरों को भरा कि अपने बाप के झुंड को पानी
७ पिलावें। तब गड़रियों ने आके उन्हें हांक दिया परन्तु मूसा
ने खड़े होके उन की सहाय किई और उन की झुंड को पिलाया।
८ और जब वे अपने पिता रऊ़एल पास आईं तब उस ने कहा
९ कि आज तुम क्योंकर सबेरे फिरीं। और वे बोलीं कि एक
मिस्री ने हमें गड़रियों के हाथ से बचाया और हमारे लिये जितना
१० प्रयोजन था पानी भरा और झुंड को पिलाया। तब उस ने
अपनी पुत्रियों से कहा कि वुह कहां है उस मनुष्य को क्यों
११ छोड़ा उसे बुलाओ कि रोटी खावे। तब मूसा उस जन के
घर में रहने पर प्रसन्न हुआ और उस ने अपनी बेटी सफ़ूरः
१२ मूसा को दिई। और वुह पुत्र जनी और उस ने उस का नाम
गैरसुम रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी
हूं॥

१३ और कितने दिन के पीछे मिस्र का राजा मर गया और इसराएल
के वंश सेवा के कारण आह भरने लगे और रोये और उन का

रोना जो उस सेवा के कारण से था ईश्वर लों पहुंचा
२४ और ईश्वर ने उन का कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी बाचा
को जो अबिरहाम इज़हाक़ और यअ़क़ूब के साथ किई थी
२५ स्मरण किया। और ईश्वर ने इसराएल के संतान पर दृष्टि किई
और ईश्वर ने बूझा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और मूसा अपने ससुर यितरू की जो मदियान का याजक था
झुंड को चराता था तब वुह झुंड को बन की पछी ओर ले
२ गया और ईश्वर के पहाड़ होरेब के पास आया। तब परमेश्वर
का दूत झाड़ी के मध्य में से आग की लौर में उस पर प्रगट
हुआ और उस ने दृष्टि किई और देखा कि झाड़ी आग से जलती
३ है और झाड़ी भस्म नहीं होती। तब मूसा ने कहा कि मैं
अब एक अलंग फिरूंगा और यह महा दर्शन देखूंगा कि वुह
४ झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। जब परमेश्वर ने देखा कि वुह
देखने को एक अलंग फिरा तो ईश्वर ने उसे झाड़ी के मध्य में से
उसे पुकारके कहा कि हे मूसा हे मूसा तब वुह बोला मैं यहां हूं
५ तब उस ने कहा कि इधर पास मत आ अपने पाओं से जूती
उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है।
६ और उस ने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का
ईश्वर इज़हाक़ का ईश्वर और यअ़क़ूब का ईश्वर हूं तब मूसा ने
अपना मुंह छिपाया क्योंकि वुह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा।
७ और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो
मिस्र में हैं निश्चय देखा और उन का चिल्लाना जो उन के करोड़ों
के कारण से है सुना क्योंकि मैं उन के दुखों को जानता हूं
८ और मैं उतरा हूं कि उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और
उस भूमि से निकालके अच्छी बड़ी भूमि में जहां दूध और

मधु बहता है कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और
९ फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों के स्थान में लाऊं। और
अब देख इसराएल के संतान का चिल्लाना मुझ लों आया और
मैं ने उस अन्धेर को भी जो मिस्री उन पर करते हैं देखा है।
१० सो अब तू आ और मैं तुझे फिरऊ़न पास भेजूंगा और तू मेरे
लोग इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल ला॥

११ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि मैं कौन हूं कि फिरऊ़न पास
१२ जाऊं और इसराएल के संतानों को मिस्र से निकालूं। और
वुह बोला कि मैं तेरे संग हूंगा और यह तेरे लिये चिन्ह होगा
कि मैं ने तुझे भेजा है जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाले
तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे॥

१३ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब मैं इसराएल के
संतान पास पहुंचूं और उन्हें कहूं कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझे कहें कि उस का
क्या नाम है तो मैं उन्हें क्या बताऊं॥

१४ तब ईश्वर ने मूसा को कहा कि मैं हूं जो हूं और उस ने
कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि वुह जो है
१५ उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और ईश्वर ने मूसा से फिर
कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर
तुम्हारे पितरों के ईश्वर अबिरहाम के ईश्वर इज़हाक़ के ईश्वर
और यअ़क़ूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है सनातन लों
मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में यही मेरा स्मरण
१६ है। जा और इसराएलियों के प्राचीनों को एकट्ठा कर और उन्हें
कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर अबिरहाम इज़हाक़
और यअ़क़ूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे दिखाई दिया कि
मैं ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई और जो कुछ तुम पर मिस्र
१७ में हुआ सो देखा। और मैं ने कहा है कि मैं तुम्हें मिस्रियों

के दुखों से निकालके कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फरज़ियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और
१८ मधु बहता है लाऊंगा। और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू और इसराएलियों के प्राचीन मिस्र के राजा पास आओगे और उसे कहोगे कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई और अब हम तेरी बिनती करते हैं कि हमें बन में तीन दिन के मार्ग जाने दे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये
१९ बलिदान करें। और मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम्हें
२० जाने न देगा हां बड़े बल से नहीं। और मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और अपने समस्त आश्चर्य्यों से जो मैं उन के बीच दिखाऊंगा मिस्रियों को मारूंगा तब उस के पीछे वुह तुम्हें जाने
२१ देगा। और मैं इन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में अनुग्रह दूंगा और यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न जाओगे
२२ परन्तु हर एक स्त्री अपनी परोसिन से और उस्से जो उस के घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और बस्त्र मांग लेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों के पहिनाओगे और मिस्रियों को लूटोगे॥

चौथा पर्ब्ब।

१ तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति न करेंगे और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि परमेश्वर तुझ पर प्रगट न हुआ॥

२ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे हाथ में यह क्या है और
३ वुह बोला कि छड़ी। तब उस ने कहा कि उसे भूमि पर डाल दे और उस ने उसे भूमि पर डाल दिया और वुह सर्प्प बन
४ गई और मूसा उस के आगे से भागा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उस की पूंछ पकड़ ले तो

उस ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया और वुह उस
५ के हाथ में छड़ी हो गई। जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर
उन के पितरों का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इज़हाक़ का ईश्वर
और यअ़क़ूब का ईश्वर तुझ पर प्रगट हुआ॥

६ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि फिर तू अपना हाथ अपनी गोद
में कर और उस ने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब
उस ने उसे निकाला तो देखो कि उस का हाथ हिम के समान
७ कोढ़ी था। और उस ने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी
गोद में कर उस ने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया
और अपनी गोद से उसे निकाला तो देखा कि जैसी उस की
८ सारी देह थी वुह वैसा फिर हो गया। और ऐसा होगा कि
यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य्य को न मानें
९ तो वे दूसरे आश्चर्य्य के बिश्वासी होंगे। और ऐसा होगा कि
यदि वे इन दोनों आश्चर्य्यों पर भी बिश्वास न लावें और तेरे
शब्द के श्रोता न हों तो तू नील नदी का जल लेके सूखी पर
ढालियो और वुह जल जो तू नदी से निकालेगा सो सूखी पर
लोहू हो जायगा॥

१० तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुवक्ता
मनुष्य नहीं न तो आगे से और न जब से कि तू ने अपने दास
से बात चीत किई परन्तु मैं भारी मुंह और भारी जीभ का हूं॥

११ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि मनुष्य के मुंह को किस ने
बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा अथवा दर्शी अथवा
१२ अंधा बनाता है क्या मैं परमेश्वर नहीं। अब तू जा और मैं
तेरे मुंह के साथ हूंगा और जो कुछ तुझे कहना है तुझे
सिखाऊंगा॥

१३ तब उस ने कहा कि हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं
कि जिसे चाहे तू उस के हाथ से भेज॥

१४ तब परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उस ने कहा कि क्या तेरा भाई हारून लावी नहीं है मैं जानता हूं कि वुह सुबक्ता है और देख कि वुह भी तेरी भेंट को आता है
१५ और तुझे देखके अपने मन में हर्षित होगा। और तू उसे कहेगा और उस के मुंह में बातें डालेगा और मैं तेरे और उस के मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है सो
१६ तुम्हें सिखाऊंगा। और लोगों पर वुह तेरा बक्ता होगा और वुह तेरे मुंह की संती होगा और तू उस के लिये ईश्वर के
१७ स्थान होगा। और यह छड़ी जिस्से तू लक्षण दिखावेगा अपने हाथ में रखियो॥

१८ तब मूसा अपने ससुर यितरू के पास फिर आया और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे छुट्टी दे कि मिस्र में अपने भाइयों पास फिर जाऊं और देखूं कि वे अब लों जीते हैं कि नहीं तब यितरू ने मूसा को कहा कि कुशल से
१९ जा। तब परमेश्वर ने मदियान में मूसा को कहा कि मिस्र में फिर जा क्योंकि वे सब मनुष्य जो तेरे प्राण के गाहक थे सो
२० मर गये। तब मूसा ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गदहे पर बैठाया और मिस्र देश में फिर
२१ आया और मूसा ने ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लिई। और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि जब तू मिस्र में फिर जाय तो देख कि सब आश्चर्य्य जो मैं ने तेरे हाथ में रक्खे हैं तू उन्हें फ़िरऊन के आगे दिखा परन्तु मैं उस के मन को कठोर करूंगा कि
२२ वुह उन लोगों को जाने न देगा। तब फ़िरऊन को कहियो कि परमेश्वर ने यों कहा है कि इसराएल मेरा पुत्र मेरा पहिलौठा
२३ है। सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वुह मेरी सेवा करे और यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे पहिलौठे पुत्र को मार डालूंगा॥

२४ और मार्ग के एक टिकाव में यों हुआ कि परमेश्वर उसे
२५ मिला और चाहा कि उसे मार डाले। तब सफूर: ने एक चोखा
पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे
उस के पाओं पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे लिये
२६ रक्तपति है। तब उस ने उसे छोड़ दिया और तब वुह
बोली कि ख़तने के कारण तू रक्तपति है॥

२७ और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा
से मिल तब वुह गया और उसे ईश्वर के पहाड़ पर मिला
२८ और उसे चूमा। और ईश्वर ने जो उसे भेजा था मूसा ने उस
की सारी बातें और लक्षण जो उस ने उसे आज्ञा किई थी
हारून से कह सुनाये॥

२९ तब मूसा और हारून गये और इसराएल के संतानों के
३० प्राचीनों को एकट्ठा किया। और जो सारी बातें परमेश्वर ने
मूसा को कही थीं हारून से कहीं और लोगों के आगे प्रत्यक्ष
३१ लक्षण दिखाये। तब लोग बिश्वास लाये और सुनके कि परमेश्वर
ने इसराएल के संतान की सुधि लिई और उन के दुःख पर
दृष्टि किई झुके और दंडवत किई॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और उस के पीछे मूसा और हारून ने जाके फ़िरऊन से
कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मेरे
२ लोगों को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे लिये पर्ब्ब करें। तब
फ़िरऊन ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस के शब्द को
मानके इसराएल को जाने दूं मैं परमेश्वर को नहीं जानता
३ और मैं इसराएल को भी जाने न दूंगा। तब उन्हों ने कहा कि
इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये
कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने

ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वुह हमें मरी
४ अथवा खड्ग से मारे। तब मिस्र के राजा ने उन्हें कहा कि हे
मूसा और हारून तुम लोगों को उन के कार्य्य से क्यों रोकते
५ हो तुम अपने बोझों को जाओ। और फ़िरऊन ने कहा कि
देखो देश के लोग अब बहुत हैं और तुम उन्हें उन के बोझों
से रोकते हो॥

६ और उसी दिन फ़िरऊन ने लोगों के करोड़ों को और अपने
७ अध्यक्षों को आज्ञा किई। कि अब आगे की नाईं उन लोगों
को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये
८ पुआल बटोरें। और आगे की नाईं ईंटें उन से लिया करो उस
में से कुछ मत घटाओ क्योंकि वे आलसी हैं इसी लिये वे चिल्ला
चिल्लाके कहते हैं हमें जाने देओ कि हम अपने ईश्वर के लिये
९ बलिदान चढ़ावें। उन मनुष्यों का काम बढ़ाया जाय कि वे
उस में परिश्रम करें और बृथा बातों की ओर मन न लगावें॥

१० तब लोगों के करोड़े और उन के अध्यक्ष निकले और
लोगों से कहा कि फ़िरऊन यों कहता है कि मैं तुम्हें पुआल
११ न दूंगा। तुम जाओ जहां से मिले तहां से पुआल लाओ
१२ क्योंकि तुम्हारा कार्य्य कुछ न घटेगा। सो लोग मिस्र के सारे
देश में छिन्न भिन्न हुए कि पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें।
१३ और करोड़ों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते हुए
करते थे वैसा अपने प्रति दिन के कार्य्य उसी दिन देओ।
१४ और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें फ़िरऊन के करोड़ों
ने उन पर करोड़े किये थे मारे गये और पूछे गये कि अपनी
ठहराई हुई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज
आगे की नाईं क्यों नहीं पूरा किया॥

१५ तब इसराएल के संतानों के प्रधान फ़िरऊन के आगे आके
चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से ऐसा ब्यवहार क्यों करता

१६ है। तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है
१७ परन्तु अपराध तेरे लोगों का है। तब उस ने कहा कि तुम आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने
१८ दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान करें। सो अब तुम जाओ काम करो और पुआल तुम को न दिया जायगा तथापि तुम
१९ गिनती की ईंटें दोगे। और इस कहने से कि तुम अपनी प्रति दिन की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने देखा कि उन की दुर्दशा है॥

२० और वे फ़िरऊ़न पास से निकलके मूसा और हारून को जो
२१ मार्ग में खड़े थे मिले। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम ने हमें फ़िरऊ़न की और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनोना किया है कि हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड्ग दिया है॥

२२ तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू ने इन लोगों को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा।
२३ इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फ़िरऊ़न को कहने आया उस ने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने अपने लोगों को न बचाया॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फ़िरऊ़न से क्या करूंगा क्योंकि वुह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा और बलवंत भुजा से उन्हें अपने देश से निकालेगा॥

२ और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि मैं परमेश्वर हूं।
३ और मैं अबिरहाम इज़हाक़ और यअक़ूब को सर्बशक्तिमान सर्बसामर्थी के नाम से प्रगट हुआ परन्तु अपने नाम यहोवा से

४ उन पर प्रगट न हुआ। और मैं ने उन के साथ अपना नियम भी बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का
५ देश है जिस में वे परदेशी थे दूंगा। और मैं ने इसराएल के संतानों का कुढ़ना भी सुना है जिन्हें मिस्री बंधुआई में रखते
६ हैं और अपने नियम को स्मरण किया है। इस लिये तू इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूं और मैं तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की दासता से छुड़ाऊंगा और मैं अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय
७ से तुम्हें मोक्ष दूंगा। और तुम्हें अपने लोग बनाऊंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर हो जाऊंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से
८ निकालता हूं। और मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के विषय में मैं ने अपना हाथ उठाया है कि उसे अबिरहाम इज़हाक और यअकूब को दूं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार
९ करूंगा परमेश्वर मैं हूं। तब मूसा ने इसराएल के संतानों को योंहीं कहा परन्तु उन्हों ने मन के क्लेश के मारे और परिश्रम के कष्ट से मूसा की न सुनी॥

१० । ११ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा। जा और मिस्र के राजा फ़िरऊन से कह कि इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने
१२ दे। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराएल के संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो होंठ का
१३ अख़तनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और मिस्र के राजा फ़िरऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराएल के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जावें॥

१४ उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के पहिलौठे रूबिन के पुत्र हनूख़ और पल्लू हज़रून और करमी

१५ ये रूबिन के घराने थे। और शमऊन के पुत्र जमुएल और यामीन और ओहाद और याकीन और ज़ोहर और शाऊल
१६ कनआनी स्त्री का पुत्र ये शमऊन के घराने थे। और लावी के पुत्रों के नाम उन की पीढ़ियों के समान ये थे जीरशून और कहाथ और मरारी और लावी के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस
१७ थे। जीरशून के पुत्र उन के घराने के समान लबनी और
१८ शमई थे। और कहाथ के पुत्र अमराम और इज़हार और हिबरून और उज्ज़ीएल और कहाथ के जीवन के बरस एक सौ
१९ सैंतीस थे। और मरारी के पुत्र महली और मुशी उन की
२० पीढ़ियों के समान लावी के घराने ये थे। और अमराम ने अपने पिता की बहिन युकबिद से ब्याह किया और वुह उस के लिये हारून और मूसा को जनी और अमराम के जीवन के
२१ बरस एक सौ सैंतीस थे। और इज़हार के पुत्र क़ूरह और
२२ नफ़ग़ और ज़करी थे। और उज्ज़ीएल के पुत्र मीसाएल और
२३ इलज़ाफ़ान और सिथरी थे। और हारून ने नख़शन की बहिन अमीनादाब की पुत्री अलीशबा को पत्नी किया और उस्से नादाब और अबीहू इलिअज़र और ऐतामार उस के लिये उत्पन्न हुए।
२४ और क़ूरह के पुत्र असीर और इलक़ाना और अबियासाफ़ ये
२५ क़ूरह के घराने थे। और हारून के पुत्र इलिअज़र ने पुतिएल की पुत्रियों में से पत्नी किई और उस्से उस के लिये फ़ीनीहास उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के घरानों में ये प्रधान
२६ थे। ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं की रीति मिस्र के
२७ देश से निकाल लाओ। ये वे हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा फ़िरऊन से इसराएल के संतानों को मिस्र से निकाल ले जाने को कहा ये वे ही मूसा और हारून हैं॥

२८ और यों हुआ कि जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र देश में मूसा

२९ को कहा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा और बोला कि मैं परमेश्वर हूं सब जो मैं तुझे कहता हूं मिस्र के राजा फ़िरऊ़न
३० से कह। और मूसा ने परमेश्वर के साम्ने कहा कि देख मैं होंठ का अख़तनः हूं और फ़िरऊ़न मेरी क्योंकर सुनेगा॥

सातवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फ़िरऊ़न के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा भविष्यद्वक्ता
२ होगा। सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करूंगा तू कहेगा और तेरा भाई हारून फ़िरऊ़न से कहेगा कि इसराएल के संतानों
३ को अपने देश से जाने दे। और मैं फ़िरऊ़न के मन को कठोर करूंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य्य को मिस्र के
४ देश में अधिक करूंगा। परन्तु फ़िरऊ़न तुम्हारी न सुनेगा और मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूंगा और अपनी सेनाओं को अर्थात् अपने लोग इसराएल के संतान को बड़े न्याय दिखाके
५ मिस्र देश से निकाल लाऊंगा। और जब मैं मिस्र पर हाथ चलाऊंगा और इसराएल के संतानों को उन में से निकालूंगा
६ तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और जैसा परमेश्वर ने
७ उन्हें आज्ञा किई मूसा और हारून ने वैसा ही किया। और जिस समय में उन्हों ने फ़िरऊ़न से बात चीत किई मूसा अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था॥

८। ९ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा। कि जब फ़िरऊ़न तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य्य दिखाओ तो हारून को कहियो कि अपनी छड़ी ले और फ़िरऊ़न के आगे डाल दे
१० वुह एक सर्प्प बन जायगी। तब मूसा और हारून फ़िरऊ़न कने गये और जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया और हारून ने अपनी छड़ी फ़िरऊ़न के और उस के

११ सेवकों के आगे डाल दिई और वुह सर्प्प हो गई। तब फ़िरऊन ने भी पण्डितों और टोन्हों को बुलवाया सो मिस्र के टोन्हों
१२ ने भी अपने टोनों से ऐसा ही किया। क्योंकि उन में से हर एक ने अपनी अपनी छड़ी डाल दिई और वे सर्प्प हो गईं
१३ परन्तु हारून की छड़ी उन की छड़ियों को निंगल गई। और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी॥

१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन का अंतःकरण कठोर
१५ है वुह उन लोगों को जाने नहीं देता। तू बिहान फ़िरऊन के पास जा देख कि वुह जल की ओर जाता है और तू नील नदी के तट पर जिधर से वुह आवे उस के सन्मुख खड़ा हूजियो और वुह छड़ी जो सर्प्प हुई थी अपने हाथ में लीजियो।
१६ और उसे कहियो कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है और कहा है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे अरण्य में मेरी सेवा करें और देख कि तू ने अब लों न
१७ सुना। परमेश्वर ने यों कहा है कि इस्से तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं देख कि मैं यह छड़ी जो मेरे हाथ में है नदी के
१८ पानियों पर मारूंगा और वे लोहू हो जायेंगे। और मछलियां जो नदी में हैं मर जायेंगी और नदी बसाने लगेगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पीने को घिन करेंगे॥

१९ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी ले और अपना हाथ मिस्र के पानियों पर उन की धारों उन की नदियों और उन के कुण्डों और उन के पानियों के हर एक पोखरों पर चला कि वे लोहू बन जायें और मिस्र के सारे देश में
२० हर एक काठ और पत्थर के पात्र में लोहू हो जाय। और जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा और हारून ने वैसा ही किया और उस ने छड़ी उठाई और नदी के पानी पर फ़िरऊन

के और उस के सेवकों के साम्ने मारी और नदी के सब पानी
२१ लोहू हो गये। और नदी की मछलियां मर गईं और नदी
बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और
२२ मिस्र के सारे देश में लोहू हुआ। तब मिस्र के टोन्हों ने भी
अपने टोना से ऐसा ही किया और फ़िरऊन का मन कठोर रहा
और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन की न
२३ सुनी। तब फ़िरऊन फिरा और अपने घर को गया और उस ने
२४ अपना मन इस बात पर भी न लगाया। और सारे मिस्रियों ने
नदी के आस पास खोदा कि पानी पीवें क्योंकि वे नदी का
२५ पानी पी न सके। और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात
दिन बीत गये॥

आठवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा और उसे
यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे
२ जिसतें वे मेरी सेवा करें। और यदि तू उन्हें जाने न देगा
३ तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंडुकों से मारूंगा। और
नदी बहुताई से मेंडुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके
तेरे घर में और तेरे शयनस्थान में और तेरे बिछौनों
पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी
४ भट्ठियों में और तेरे आटे गूंधने के कठरों में जायेंगे। और
मेंडुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर
चढ़ेंगे॥

५ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी
छड़ी से अपना हाथ धारों पर नदियों पर और कुण्डों पर बढ़ा
६ और मेंडुकों को मिस्र के देश पर चढ़ा। तब हारून ने मिस्र
के पानियों पर अपना हाथ बढ़ाया और मेंडुकों ने निकलके

७ मिस्र के देश को ढांप लिया। और टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसा ही किया और मिस्र के देश पर मेंडुक चढ़ाये॥

८ तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंडुकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जाने देऊंगा कि वे ९ परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें। और मूसा ने फ़िरऊन को कहा कि मुझे बतलाइये कि कब मैं तेरे और तेरे सेवकों के और तेरी प्रजा के लिये बिनती करूं कि मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से १० दूर किये जावें और नदी ही में रहें। और वुह बोला कि कल तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार जिसतें तू जाने ११ कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं। और मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे दासों और तेरी प्रजा से जाते रहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे॥

१२ फिर मूसा और हारून फ़िरऊन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के आगे मेंडुकों के लिये जो उस ने फ़िरऊन १३ के कारण भेजे थे प्रार्थना किई। और परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया और मेंडुक घरों और गांओं और १४ खेतों में से मर गये। और उन्हों ने उन्हें जहां तहां एकट्ठे १५ कर कर ढेर कर दिये और देश बसाने लगा। जब फ़िरऊन ने देखा कि सावकाश मिला तो उस ने अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी॥

१६ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर मार जिसतें वुह मिस्र के १७ समस्त देश में मच्छड़ बन जायें। और उन्हों ने वैसा ही किया और हारून ने अपना हाथ अपनी छड़ी के साथ बढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़ बन गये समस्त धूल मिस्र के सारे देश में मच्छड़

१८ बन गये। और टोन्हों ने भी चाहा कि अपने टोनों से मच्छड़
निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़
१९ थे। तब टोन्हों ने फ़िरऊ़न से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली
है और फ़िरऊ़न का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा
था उस ने उन की न सुनी॥

२० तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और
फ़िरऊ़न के आगे खड़ा हो देख वुह जल पर आता है और तू
उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने
२१ दे कि वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों को जाने
न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी
प्रजा पर और तेरे घरों में बड़ी बड़ी माखी भेजूंगा और
मिस्रियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं
२२ उन माखियों से भर जायेंगे। और मैं उस दिन जश्न की
भूमि को जिस में मेरे लोग बास करते हैं अलग करूंगा कि
माखी वहां न हों जिसतें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में
२३ परमेश्वर मैं हूं। और मैं अपने लोगों में और तेरे लोगों में
२४ बिभाग करूंगा और यह आश्चर्य्य कल होगा। तब परमेश्वर
ने योंहीं किया और फ़िरऊ़न के घर में और उस के सेवकों के
घरों में और मिस्र के समस्त देश में माखी आई और माखियों
के मारे देश नाश हुआ॥

२५ तब फ़िरऊ़न ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा
२६ कि जाओ अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ। और
मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर
अपने ईश्वर के लिये वुह बलि चढ़ावेंगे जिस्से मिस्री घिन रखते
हैं क्या हम मिस्रियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे
२७ चढ़ावें और वे हमें पत्थरवाह न करेंगे। हम बन में तीन
दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा

२८ वुह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे। और फ़िरऊ़न बोला कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे
२९ लिये बिनती करो। तब मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करूंगा कि माखी फ़िरऊ़न से उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाती रहें परन्तु ऐसा न हो कि फ़िरऊ़न फिर छल करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे॥

३० तब मूसा फ़िरऊ़न पास से बाहर गया और परमेश्वर से
३१ बिनती किई। और परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान किया और माखियों को फ़िरऊ़न से उस के सेवकों से और उस
३२ की प्रजा पर से दूर किया एक भी न रही। तब फ़िरऊ़न ने उस बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया॥

नवां पर्ब्ब ।

१ तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फ़िरऊ़न पास जा और उसे कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि
२ मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि
३ तू जाने न देगा और अब की भी उन्हें रोकेगा। तो देख परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के पशुन पर घोड़ों पर गदहों पर ऊंटों पर गाय बैलों पर और भेड़ बकरियों पर अत्यंत भारी
४ मरी पड़ेगी। और परमेश्वर इसराएल के और मिस्रियों के पशुन में बिभाग करेगा और उन में से जो इसराएल के संतानों के
५ हैं कोई न मरेगा। और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और
६ कहा कि परमेश्वर यह कार्य्य देश में कल करेगा। और दूसरे दिन परमेश्वर ने वैसा ही किया और मिस्र के समस्त पशु मर गये

परन्तु इसराएल के संतानों के पशुन में से एक भी न मरा।
७ तब फ़िरऊन ने भेजा और देखो कि इसराएलियों के पशुन में से एक न मरा और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और उस ने लोगों को जाने न दिया॥

८ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से अपनी मुट्ठी भरके राख लो और मूसा उसे फ़िरऊन के साम्ने
९ आकाश की ओर उड़ा दे। और वुह मिस्र की समस्त भूमि में सूक्ष्म धूल हो जायगी और मिस्र के समस्त देश में मनुष्यों
१० पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे। और उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फ़िरऊन के आगे खड़े हुए और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और मनुष्यों पर और
११ पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले। और फोड़ों के मारे टोन्हे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोन्हों पर और
१२ सारे मिस्रियों पर फोड़े थे। और परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था वैसा उस ने उन की बात न मानी॥

१३ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कल तड़के उठ और फिरऊन के आगे खड़ा हो और उसे कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी
१४ सेवा करें। क्योंकि मैं अब की अपनी सारी बिपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालूंगा जिसतें तू
१५ जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं। क्योंकि अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी प्रजा
१६ को मरी से मारूं और तू पृथिवी पर से नष्ट हो जायगा। और निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम तुझ पर दिखाऊं और अपना नाम सारे संसार में प्रगट करूं।
१७ अब लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करता जाता है जिसतें

८ उन्हें जाने न दे । देख मैं कल इसी समय में अत्यंत बड़े बड़े ओले बरसाऊंगा जो मिस्र में उस के आरंभ से अब लों न पड़े
९ थे । सो अभी भेज अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा है सभों को एकट्ठे कर क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में लाया न जायगा ओले पड़ेंगे और वे मर जायेंगे ॥

२० जो परमेश्वर के बचन से डरता था फ़िरऊन के सेवकों में से हर एक ने अपने सेवकों को और अपने पशुन को घर में
२१ भगाया । और जिस ने परमेश्वर के बचन को न माना उस ने अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने दिया ॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और खेत के हर एक साग पात पर मिस्र देश में ओले पड़ें ।
२३ और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और
२४ ईश्वर ने मिस्र की भूमि पर ओले बरसाये । सो ओले बरसे और ओले अत्यंत भारी आग के मध्य में अपने से लिपटी हुई चलती थी यहां लों कि मिस्र के समस्त देश में जब से कि
२५ वुह देश हुआ था ऐसा न पड़ा था । और ओलों ने मिस्र के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत में थे मारा और ओलों ने खेत के सब साग पात को मारा और
२६ खेत के सारे वृक्ष को तोड़ डाला । केवल जश्न की भूमि में जहां इसराएल के संतान थे ओले न पड़े ॥

२७ तब फ़िरऊन ने भेजा और मूसा और हारून को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार अपराध किया परमेश्वर
२८ न्याई है और मैं और मेरे लोग दुष्ट हैं । परमेश्वर से बिनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला न हो

२९ और मैं तुम्हें जाने दूंगा और आगे न रहोगे। तब मूसा ने उसे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते हुए परमेश्वर के आगे अपने हाथ फैलाऊंगा गर्ज्ज थम जायेंगे और ओले न बरसेंगे
३० जिसतें तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है। परन्तु मैं जानता हूं कि तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे॥

३१ और सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की बालें आ चुकी
३२ थीं और सन बढ़ चुका था। पर गोहूं और मुंडला गोहूं मारे न पड़े क्योंकि वे बढ़े न थे॥

३३ और मूसा ने फ़िरऊन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थम गये और भूमि
३४ पर बृष्टि थम गई। जब फ़िरऊन ने देखा कि मेंह और ओले और गर्ज्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और उस ने और
३५ उस के सेवकों ने अपना मन कठोर किया। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था वैसा फ़िरऊन का अंत:करण कठोर रहा और उस ने इसराएल के संतानों को जाने न दिया॥

दसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा क्योंकि मैं ने उस के अंत:करण को और उस के सेवकों के अंत:करण को कठोर कर दिया है जिसतें मैं अपने ये लक्षण उन के मध्य
२ में प्रगट करूं। और जिसतें तू अपने पुत्र और अपने पौत्र के सुन्ने में बर्णन करे जो जो मैं ने मिस्र में किया और मेरे लक्षण जो मैं ने उन में दिखलाये और तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं॥

३ सो मूसा और हारून ने फ़िरऊन पास आके उसे कहा कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू

मेरे आगे आप को नम्र करने से अलग रहेगा मेरे लोगों को
४ जाने दे कि वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के
जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों में टिड्डी
५ भेजूंगा। और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को
देख न सकेगा और वे उस बचे हुए को जो ओलों से तेरे
लिये बच रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे
६ लिये खेत में उगता है चट करेंगी। और वे तेरे घर में और
तेरे सेवकों के घर में और समस्त मिस्र के घरों में भर जायेंगी
जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन
से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वुह फिरा
और फ़िरऊन पास से निकल गया॥

७ तब फ़िरऊन के सेवकों ने उसे कहा कि यह पुरुष कब लों
हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे
परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अब ताईं तू नहीं जानता कि
८ मिस्र नष्ट हुआ। तब मूसा और हारून फ़िरऊन पास फिर
पहुंचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने
९ ईश्वर की सेवा करो परन्तु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे। तब
मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने बृद्ध अपने
पुत्रों और अपनी पुत्रियों अपनी भेड़ बकरियों और अपने
गाय बैल समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने
१० ईश्वर का पर्ब्ब मानें। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों
हीं तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को
११ जाने दूं देखो कि बुराई तुम्हारे आगे है। ऐसा नहीं तुम पुरुषगण
जाइयो और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा
सो वे फ़िरऊन के आगे से निकाले गये॥

१२ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के
लिये मिस्र की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिस्र के देश पर आवें

और देश के हर एक साग पात जो ओलों से बच रहा है खा
१३ लेवें। सो मूसा ने मिस्र के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और
परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरबी पवन चलाई
१४ जब बिहान हुआ तो वुह पुरबी पवन टिड्डी लाई। और
टिड्डी मिस्र के सारे देश पर आईं और मिस्र के समस्त सिवाने
पर उतरीं वे अति बहुत थीं उन के आगे ऐसी टिड्डी न
१५ आई थीं और न उन के पीछे फिर आवेंगी। क्योंकि उन्हों ने
समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो
गया और उन्हों ने देश की हर एक हरियाली को और बृक्षों
के फलों को जो ओलों से बच गये थे चाट लिया और मिस्र
के समस्त देश में किसी बृक्ष पर अथवा खेत के साग पात में
हरियाली न बची॥

१६ तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को बेग बुलाया और कहा कि
१७ मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा अपराधी हूं। सो अब
मैं बिनती करता हूं केवल इस बार मेरा अपराध क्षमा कर
और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो कि केवल इसी मरी
१८ को मेरे ऊपर से दूर करे। सो वुह फ़िरऊन के पास से निकल
१९ गया और परमेश्वर से बिनती किई। और परमेश्वर ने बड़ी
पच्छवां भेजी और वुह टिड्डी को ले गई और उन्हें लाल समुद्र
में डाल दिया और मिस्र के समस्त सिवानों में एक टिड्डी न
२० रही। परन्तु परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया
और उस ने इसराएल के संतान को जाने न दिया॥

२१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की
ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के देश पर अंधकार छा जाय ऐसा
२२ अंधकार जो टटोला जावे। तब मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग
की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस्र के देश में गाढ़ा
२३ अंधियारा रहा। उन्हों ने एक दूसरे को न देखा और कोई

तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परन्तु इसराएल के समस्त संतान के लिये उन के निवासों में उंजियाला था ॥

२४ तब फ़िरऊन ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और तुम्हारे ढोर
२५ यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जायें। तब मूसा ने कहा कि तुझे आवश्यक है कि हमें बलिदान और चढ़ावे की भेंट देवे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें।
२६ और हमारे पशु भी हमारे संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हम उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये लेंगे और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौन सी बस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें ॥

२७ परन्तु परमेश्वर ने फ़िरऊन के अंतःकरण को कठोर कर
२८ दिया और उस ने उन्हें जाने न दिया। और फ़िरऊन ने उसे कहा कि मेरे आगे से जा आप को चौकस रख फिर मेरा मुंह मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर जायगा।
२९ तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फ़िरऊन पर और मिस्रियों पर एक मरी और लाऊंगा उस के पीछे वुह तुम्हें यहां से जाने देगा जब वुह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें सर्ब्बथा
२ यहां से धकिआवेगा। सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर एक पुरुष अपने परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से
३ रूपे के और सोने के गहने मांग लेवे। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई वुह जन मूसा भी मिस्र की भूमि में फ़िरऊन के सेवकों की और लोगों की दृष्टि में महान था ॥

४ और मूसा ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी
५ रात को निकलके मिस्र के बीचोंबीच जाऊंगा। और मिस्र के
देश में सारे पहिलौंठे फ़िरऊन के पहिलौंठे से लेके जो अपने
सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौंठे लों जो चक्की के
६ पीछे है और सारे पशु के पहिलौंठे मर जायेंगे। और मिस्र के
समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि कभी न
७ हुआ था न कभी फिर होगा। परन्तु सारे इसराएल के संतान
पर एक कूकुर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर
और न पशु पर जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकर मिस्रियों
८ में और इसराएलियों में बिभाग करता है। और यह तेरे
समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे
कि तू निकल जा अपने समस्त पश्चाद्गामी समेत और उस के
पीछे मैं निकल जाऊंगा और वुह फ़िरऊन के पास से निपट
रिसियाके निकल गया॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन तुम्हारी न
१० सुनेगा जिसतें मेरे आश्चर्य्य मिस्र देश में बढ़ जायें। और मूसा
और हारून ने ये सब आश्चर्य्य फ़िरऊन के आगे दिखाये और
परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने
अपने देश से इसराएल के संतान को जाने न दिया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मिस्र के देश में मूसा और हारून को
२ कहा। कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा यह
तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा॥

३ इसराएलियों की सारी मंडली से कहो कि इस मास के
दसवें में हर एक पुरुष से अपने पितरों के घर के समान एक
४ मेम्ना घर पीछे मेम्ना अपने लिये लेवें। और यदि वुह घर

मेम्ना के लिये छोटा हो तो वुह और उस का परोसी जो उस के घर से लगा हुआ हो प्राणियों की गिनती के समान लेवे तुम एक एक अपने खाने के समान मेम्ने के लिये लेखा ठहराओ ॥

५ तुम्हारा मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरुख भेड़ों ६ से अथवा बकरियों से लीजियो । और तुम उसे मास के चौदहवें दिन लों रख छोड़ियो और इसराएलियों की समस्त मंडली सांझ को उसे मारें ॥

७ और वे लोहू में से लेवें और उन घरों के जहां वे खायेंगे द्वार की दोनों ओर और ऊपर की चौखट पर छापा देवें ॥

८ और वे उसी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस ९ और अख़मीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें । उसे कच्चा और पानी में उसन के न खावें परन्तु उस के सिर पांव और १० उद्र समेत आग पर भूनके खावें । और उस में से विहान लों कुछ न रहने दीजियो और जो कुछ उस में से बिहान लों ११ रह जायेगा तुम आग से जला दीजियो । और उसे यों खाइयो अपनी कटि बांधे हुए अपनी जूतियां अपने पाओं में पहिने हुए और अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे बेग खा लीजियो वुह परमेश्वर का फसह है ॥

१२ इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के देश में होके निकलूंगा और सब पहिलौंठे मनुष्य के और पशुन के जो उस में हैं मारूंगा और मिस्र के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं १३ परमेश्वर हूं । और वुह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा और मैं वुह लोहू देखके तुम पर से बीत जाऊंगा और जब मिस्र के देश को मारूंगा तब मरी तुम पर नाश करने को न आवेगी ॥

१४ और यह दिन तुम्हारे लिये एक स्मरण के लिये होगा

और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्व्व रखियो तुम नित्य उस बिधि से पर्व्व रखियो॥

१५ सात दिन लों अख़मीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन ख़मीर अपने घरों से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन से लेके सातवें दिन लों ख़मीरी रोटी खायगा सो प्राणी इसराएल से

१६ काटा जायगा। और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और सातवें दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा उन में कोई कार्य्य न किया जायगा केवल भोजन ही का कार्य्य हर एक मनुष्य से किया जाय।

१७ और इस अख़मीरी रोटी के पर्व्व को मानोगे क्योंकि उसी दिन मैं तुम्हारी सेनाओं को मिस्र देश से निकाल लाया हूं इस लिये

१८ इस दिन को अपनी पीढ़ियों में बिधि से नित्य मानो। पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को इक्कीसवीं तिथि लों अख़मीरी

१९ रोटी खाइयो। सात दिन लों तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जावे क्योंकि जो कोई ख़मीरी बस्तु खायेगा वही प्राणी इसराएल की

२० मंडली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी। तुम कोई बस्तु ख़मीरी मत खाइयो तुम अपने समस्त बस्तियों में अख़मीरी रोटी खाइयो॥

२१ तब मूसा ने इसराएल के समस्त प्राचीनों को बुलाया और उन्हें कहा कि अपने अपने घर के समान एक एक मेम्ना लेओ

२२ और फसह का मेम्ना मारो। और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोरके ऊपर की चौखट को और द्वार की दोनों ओर उस्से छापो और तुम में से कोई बिहान

२३ लों अपने घर के द्वार से बाहर न जावे। क्योंकि परमेश्वर मिस्र को मारने के लिये आरपार जायगा और जब वुह ऊपर की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में

२४ जाने न देगा कि मारे। और अपने और अपने संतानों के

२५ लिये बिधि करके इस बचन को नित्य मानियो। और ऐसा होगा कि जब तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचा
२६ के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन करियो। और ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा से
२७ तुम्हारा क्या अर्थ है। तब कहियो कि यह परमेश्वर के फसह का बलिदान है जो मिस्र में इसराएल के संतानों के घरों पर से बीत गया जब उस ने मिस्र को मारा और हमारे घरों को
२८ बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये। और इसराएल के संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया॥

२९ और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिस्र के देश में सारे पहिलौठे को फ़िरऊन के पहिलौठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ के पहिलौठे लों जो
३० बंदीगृह में था पशुन के पहिलौठों समेत नाश किये। और रात को फ़िरऊन उठा वुह और उस के सब सेवक और सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिस में एक न मरा॥

३१ तब उस ने मूसा और हारून को रात ही को बुलाया और कहा कि उठो मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और इसराएल के संतान जाओ और अपने कहे के समान परमेश्वर
३२ की सेवा करो। जैसा तुम ने कहा है अपना झुंड और बैल भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीष चाहो॥

३३ और मिस्री उन लोगों पर शीघ्रता करते थे कि वे मिस्र के देश से बेग निकाले जायें क्योंकि उन्हों ने कहा कि हम सब
३४ मरे। और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उस्से आगे कि वुह ख़मीर हो गूंधने के कठरे समेत अपने कपड़ों में बांधके अपने
३५ कांधों पर उठा लिया। और इसराएल के संतानों ने मूसा के

कहने के समान किया और उन्हों ने मिस्रियों से रूपे के और
३६ सोने के गहने और वस्त्र मांग लिये। और परमेश्वर ने उन
लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने
उन्हें दिया और उन्हों ने मिस्रियों को लूट लिया॥

३७ और इसराएल के संतान ने रामसीस से सुक्कात लों कूच किया
३८ जो बालकों को छोड़ छः लाख पुरुष थे। और एक मिली जुली
बड़ी मंडली भी और झुंड और बैल और बहुत पशु उन के
३९ साथ गये। और उन्हों ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस्र
से ले निकले थे अख़मीरी फुलके पकाये क्योंकि वुह ख़मीर न
हुआ था इस कारण कि वे मिस्र से खदेड़े गये थे और ठहर न
सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया॥

४० अब इसराएल के संतानों का निवास जो मिस्र में रहते थे
४१ चार सौ तीस बरस था। और चार सौ तीस बरस के अंत में
यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त सेना मिस्र के
देश से निकल गई॥

४२ उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाने के कारण वुह रात
परमेश्वर के लिये पालन करने के योग्य है यह परमेश्वर की वुह
रात है जिसे चाहिये कि इसराएल के संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी
पालन करें॥

४३ और परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि फसह की
४४ बिधि यह है कि उस्से कोई परदेशी न खावे। परन्तु हर एक
का मोल लिया हुआ दास जब तू ने उस का ख़तनः किया
४५ तब वुह उस्से खावे। बिदेशी और बनिहार सेवक उस्से न
४६ खावें। यह एक ही घर में खाया जावे उस का मांस कुछ
घर से बाहर न निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ी
४७ जावे। इसराएल के संतान की समस्त मंडली उसे पालन करें।
४८ और जब कोई परदेशी तुम्में बास करे और परमेश्वर के लिये

फसह किया चाहे तो उस के सब पुरुष ख़तनः करावें तब वुह उसे पालन करने के लिये समीप आवे और वुह ऐसा होगा जैसा कि देश में जन्म पाया हो और कोई अख़तनः जन उस्से
४९ न खावे। देश के उत्पन्न हुओं के और देशी और बिदेशी के
५० लिये तुम्हारे मध्य में एक ही ब्यवस्था होगी। और सारे इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई वैसा ही किया॥
५१ और यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं के समान मिस्र देश से बाहर निकाला॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि सब पहिलौठे मेरे लिये पवित्र कर जो कुछ कि इसराएल के संतानों में गर्भ को खोले क्या मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है॥
३ और मूसा ने लोगों से कहा कि इस दिन को जिस में तुम मिस्र से बाहर आये और बंधुआई के घर से निकले स्मरण करियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाहु बल से निकाल लाया और
४ ख़मीरी रोटी खाई न जावे। तुम अबिब के मास में आज के
५ दिन बाहर निकले। और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और हवियों और यबूसियों के देश में लावे जिसे उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई कि तुझे देगा जहां दूध और मधु बहता है तब तू इस
६ मास में इस सेवा को पालन करियो। सात दिन लों तू अख़मीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन परमेश्वर के लिये पर्ब्ब
७ होगा। अख़मीरी रोटी सात दिन खाई जावे और कोई ख़मीरी रोटी तुझ पास दिखाई न देवे और न ख़मीर तेरे समस्त
८ सिवाने में तेरे आगे दिखाई देवे। और तू उसी दिन अपने

पुत्र को समुझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मिस्र
९ से बाहर निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया। और
यह एक लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों
के बीच स्मरण के लिये होगा जिसतें परमेश्वर की व्यवस्था
तेरे मुंह में हो क्योंकि परमेश्वर तुझे भुजा के बल से मिस्र से
१० निकाल लाया। इस लिये तू यह बिधि इस ऋतु में बरस
बरस पालन करियो॥

११ और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों के देश
में लावे जैसा उस ने तुझ से और तेरे पितरों से किरिया खाई
१२ है और उसे तुझे देवे। तब तू परमेश्वर के लिये सभों को
जो कि गर्भ को खोलते हैं और पशु के सब पहिलौठों को जो
१३ तेरे होंगे अलग कीजियो नर परमेश्वर के होंगे। और गधे के
हर एक पहिलौठे को एक मेम्ना से छुड़ाइयो और यदि तू उसे
न छुड़ावे तो उस की गरदन तोड़ दीजियो और अपने संतानों
में से मनुष्य के सारे पहिलौठों को छुड़ा लीजियो॥

१४ और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को तुझ से पूछे कि यह
क्या है तब उसे कहियो कि परमेश्वर हमें अपनी भुजा के बल
१५ से मिस्र से और बंधुआई के घर से निकाल लाया। और यों
हुआ कि जब फ़िरऊन ने हमें कठिनता से छोड़ा तब परमेश्वर
ने मिस्र देश में सब पहिलौठे मनुष्य के पहिलौठों से लेके पशुन
के पहिलौठों लों मार डाला इस कारण मैं उन सब नरों को जो
गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के लिये बलि करता हूं परन्तु अपने संतानों
१६ के सब पहिलौठों को छुड़ाता हूं। और यह तेरे हाथ में और तेरी
आंखों के बीच में एक चिन्हानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने
बाहु बल से हमें मिस्र से निकाल लाया॥

१७ और यों हुआ कि जब फ़िरऊन ने उन लोगों को जाने दिया
तब ईश्वर उन्हें फ़िलिस्तियों के देश के मार्ग से ले न गया

यद्यपि वुह समीप था क्योंकि ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग
१८ लड़ाई देखके पछतावें और मिस्र को फिर जावें। परन्तु ईश्वर
उन लोगों को लाल समुद्र के बन की ओर ले गया और इसरएल
१९ के संतान पांती पांती मिस्र के देश से निकले चले गये। और
मूसा ने यूसुफ़ की हड्डियां अपने साथ ले लिईं क्योंकि उस ने
इसराएल के संतान को किरिया देके कहा था कि निश्चय ईश्वर
तुम से भेंट करेगा और तुम यहां से मेरी हड्डियां अपने साथ
ले जाइयो॥

२० फिर वे सुक्कात से चल निकले और बन के छोर पर छावनी
२१ किई। और परमेश्वर उन के आगे आगे दिन को मेघ के खंभे
में उन्हें मार्ग दिखाने के लिये जाता था और रात को आग के
खंभे में होके कि उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चले जावें।
२२ वुह दिन में मेघ के खंभे को और रात में आग के खंभे को
उन लोगों के आगे से न उठाता था॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि इसराएल के संतान
से कह कि फिरें और फ़ीउलहीरात के आगे मिजदाल और
समुद्र के मध्य में छावनी करें तुम बअलसफून के आगे उस के
३ सन्मुख समुद्र के तीर पर डेरा खड़ा करो। क्योंकि फ़िरऊन
इसराएल के संतानों के बिषय में कहेगा कि वे इस देश में
४ बझे हैं बन ने उन्हें छेंक लिया है। और मैं फ़िरऊन के मन
को कठोर करूंगा कि वुह उन का पीछा करेगा और मैं फ़िरऊन
और उस की समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें मिस्री
जानें कि परमेश्वर मैं हूं और उन्हों ने ऐसा ही किया॥

५ और मिस्र के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब
फ़िरऊन का और उस के सेवकों का मन लोगों के बिरोध में

फिर गया और वे बोले कि हम ने यह क्या किया कि इसराएल
६ को अपनी सेवा से जाने दिया। तब उस ने अपना रथ जोता
७ और अपने लोग साथ लिये। और उस ने छ: सौ चुने हुए
रथ और मिस्र के समस्त रथ साथ लिये और उन सभों पर
८ प्रधान बैठाये। और परमेश्वर ने मिस्र के राजा फ़िरऊ़न के
मन को कठोर कर दिया और उस ने इसराएल के संतानों का
पीछा किया पर इसराएल के संतान हाथ बढ़ाये हुए निकले।
९ परन्तु मिस्री उन का पीछा किये चले गये और फ़िरऊ़न के सारे
घोड़ों और रथों और उस के घोड़चढ़ों और उस की सेना ने
समुद्र के तीर फ़ीउलहीरात के समीप बअ़लसफ़ून के सन्मुख
उन्हें छावनी खड़ी करते जा लिया॥

१० जब फ़िरऊ़न पास आया तब इसराएल के संतानों ने आंखें
ऊपर किईं और मिस्रियों को अपने पीछे आते हुए देखा और
अत्यंत डर गये तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की
११ दोहाई दिई। और मूसा से कहा कि क्या मिस्र में समाधें न
थीं कि तू हमें मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हम
से यह क्या व्यवहार किया कि हमें मिस्र से निकाल लाया।
१२ क्या यह वही बात नहीं जो हम ने मिस्र में तुझ से कही थी
कि हम से हाथ उठा जिसतें हम मिस्रियों की सेवा करें कि
हमारे लिये मिस्रियों की सेवा करनी बन में मरने से अच्छी
थी॥

१३ तब मूसा ने लोगों को कहा कि मत डरो खड़े रहो और
परमेश्वर की मोक्ष देखो जो आज के दिन वुह तुम्हें दिखावेगा
क्योंकि उन मिस्रियों को जिन्हें तुम आज देखते हो उन्हें फिर
१४ कधी न देखोगे। परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा और तुम
चुप चाप रहोगे॥

१५ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू क्यों मेरी ओर बिलाप

१६ करता है इसराएल के संतान से कह कि वे आगे बढ़ें। परन्तु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसे दो भाग कर और इसराएल के संतान समुद्र के बीचोंबीच में १७ से सूखी भूमि पर होके चले जायेंगे। और देख कि मैं मिस्त्रियों के अंत:करण को कठोर कर दूंगा और वे उन का पीछा करेंगे और मैं फ़िरऊ़न और उस की समस्त सेना उस के रथ और उस के १८ घोड़ चढ़ों पर अपनी महिमा प्रगट करूंगा। और जब मैं फ़िरऊ़न उस के रथों और उस के घोड़ चढ़ों पर अपनी महिमा प्रगट करूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

१९ और ईश्वर का दूत जो इसराएल की छावनी के आगे चला जाता था सो फिरा और उन के पीछे चला और मेघ का खंभा उन के सन्मुख से गया और उन के पीछे जा ठहरा। २० और मिस्त्रियों की छावनी और इसराएल की छावनी के मध्य में आया और वुह एक अंधियारा मेघ मिस्त्रियों के लिये हो गया परन्तु रात को इसराएल को उंजियाला देता था सो रात भर एक दूसरे के पास न आया॥

२१ फिर मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने बड़ी प्रचंड पुरबी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और २२ समुद्र को सुखा दिया और पानी दो भाग हो गये। और इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चले गये और पानी की भीत उन के दहिने और बायें ओर थी॥

२३ और मिस्त्रियों ने पीछा किया और फ़िरऊ़न के सब घोड़े उस के रथ और उस के घोड़ चढ़े उन का पीछा किये हुए समुद्र २४ के मध्य लों आये। और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग और मेघ के खंभे में से मिस्त्रियों की सेना पर दृष्टि २५ किई और मिस्त्रियों की सेना को घबराया। और उन के रथों के पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांके जाते थे सो

मिस्रियों ने कहा कि आओ इसराएलियों के सन्मुख से भागें
२६ क्योंकि परमेश्वर उन के लिये मिस्रियों से लड़ता है। और
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसतें
पानी मिस्रियों पर उन के रथों और उन के घोड़ चढ़ों पर फिर
२७ आवे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र
बिहान होते अपनी सामर्थ्य पर फिरा और मिस्री उस के आगे
२८ भागे और परमेश्वर ने मिस्रियों को समुद्र में नाश किया। और
पानी फिरा और रथों और घोड़ चढ़ों फ़िरऊ़न की सब सेना
को जो उन के पीछे समुद्र के बीच में आई थी छिपा लिया
२९ एक भी उन में से न बचा। परन्तु इसराएल के संतान सूखी
से समुद्र के बीच में से चले गये और पानी की भीत उन के
बायें और दहिने थी॥

३० सो परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को मिस्रियों के हाथ
से बचाया और इसराएलियों ने मिस्रियों की लोथें समुद्र के
३१ तीर पर देखीं। और जो बड़ा भुजा परमेश्वर ने मिस्रियों पर
प्रगट किया इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब
परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यवाद
और स्तुति इस रीति से गाया॥

और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि
वुह बड़े बिभव से बिभूशित हुआ उस ने घोड़े को उस के
२ चढ़वैये समेत समुद्र में फेंक दिया है। परमेश्वर मेरी सामर्थ्य
और गान है और वुह मेरी मुक्ति हुआ यह मेरा सर्बशक्तिमान
है और मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर
३ है और मैं उस की महिमा करूंगा। परमेश्वर योद्धा है परमेश्वर

४ उस का नाम है। उस ने फ़िरऊ़न के रथों और उस की सेना को समुद्र में डाल दिया है और उस के चुने हुए प्रधान लाल
५ समुद्र में डूबे हैं। गहिराओं ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के
६ समान गहिरापों में डूब गये। हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ सामर्थ्य में महान हुआ हे परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरी
७ को टुकड़ा टुकड़ा किया। और तू ने अपनी महिमा के महत्व से अपने विरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके
८ उन्हें खूंटी की नाईं भस्म किया। और तेरे नथुनों के स्वास से जल एकट्ठे हुए बाढ़ ढेर होके खड़े हो गये समुद्र के
९ अंत:करण में गहिरापे जम गये। बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा जा ही लूंगा लूट को बांट लूंगा उन से मेरी लालसा सन्तुष्ट होगी मैं अपना खड्ग खींचूंगा मेरा हाथ उन्हें बस में कर लेगा।
१० तू ने अपनी पवन से फूंक मारी समुद्र ने उन्हें छिपा लिया वे
११ सीसे की नाईं महा जलों में डूब गये। हे परमेश्वर सक्तिमानों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है
१२ स्तुति में भयंकर आश्चर्य्यकरता। तू ने अपना दहिना हाथ
१३ बढ़ाया पृथिवी उन्हें निगल गई। तू ने अपनी दया से अपने छुड़ाये हुए लोगों की अगुआई किई तू ने अपनी सामर्थ्य से
१४ उन्हें अपने पवित्र निवास लों पहुंचाया। लोग सुनके डरेंगे
१५ फ़िलिस्तिया के निवासियों को भय ने पकड़ लिया है। तब अदूम के प्रधान बिस्मित हुए मोअब के बलवंतों को थर्थराहट
१६ पकड़ेगी कनआन के समस्त बासी गल गये हैं। उन पर भय और डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्व से वे पत्थर की नाईं चुप रह जायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जावें हे परमेश्वर जब लों
१७ तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल लिया पार न जावें। तू उन्हें भीतर लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़ पर उस स्थान पर जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है उस

पवित्र स्थान पर हे प्रभु जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है तू उन्हें
१८ लगायेगा। परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा॥
१९ क्योंकि फ़िरऊन का घोड़ा उस के रथों और उस के घोड़ चढ़े समेत समुद्र में पैठा और परमेश्वर ने समुद्र का पानी उन पर पलटाया परन्तु इसराएल के संतान समुद्र के मध्य से सूखे सूखे चले गये॥
२० तब हारून की बहिन मिरयम आगमज्ञानिनी ने ढोल अपने हाथ में लिया और सब स्त्री ढोलों के साथ नाचती हुईं उस
२१ के पीछे चलीं। और मिरयम ने उन्हें उत्तर दिया॥

कि परमेश्वर का गान करो क्योंकि वुह अति महान है उस ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में नष्ट किया॥

२२ और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले गया और वे सूर के बन में गये और वे तीन दिन लों बन में चले गये और
२३ पानी न पाया। और जब वे मारः में आये तब मारः का पानी पी न सके क्योंकि वुह कड़ुआ था इस कारण वुह मारः
२४ कहाया। तब लोग यह कहिके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने
२५ लगे कि हम क्या पीयें। तब उस ने परमेश्वर की दोहाई दिई और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया जब उस ने उसे पानियों में डाला तब पानी मीठे हो गये वहां उस ने उन के लिये एक बिधि और व्यवस्था बनाई और वहां उस ने उन्हें परखा।
२६ और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उस की दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उस की आज्ञाओं पर कान धरे और उस की बिधिन को चेत में रक्खे तो मैं उन रोगों को जो मिस्रियों पर लाया तुझ पर न देऊंगा क्योंकि मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुझे चंगा करता है॥
२७ तब वे एलीम को जहां जल के बारह कुए और खजूर के सत्तर बृक्ष थे आये और उन्हों ने जल के तीर डेरा किया॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ फिर उन्हों ने एलीम से यात्रा किई और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंदरहवीं तिथि को सीन के बन में जो एलीम और सीना के
२ मध्य में है पहुंची। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली
३ मूसा और हारून पर बन में कुड़कुड़ाई। और इसराएल के संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस की हांड़ियों के लग बैठते थे और रोटी मन मनती खाते थे क्योंकि तुम हमें इस बन में निकाल लाये हो जिसतें इस सारी मंडली को भूख से मार डालो॥

४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रति दिन बंधेज से जाके बटोरेंगे जिसतें मैं उन्हें जांचूं कि वे मेरी ब्यवस्था पर चलेंगे
५ अथवा नहीं। और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन से दूना बटोरेंगे और भीतर लाके पकावेंगे॥

६ सो मूसा और हारून ने इसराएल के समस्त संतानों से कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश से
७ बाहर लाया। और बिहान को परमेश्वर का बिभव देखोगे क्योंकि परमेश्वर के बिरोध में वुह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता
८ है और हम कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो। और मूसा ने कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और बिहान को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझलाते हो परमेश्वर सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारी झुंझलाहट हम पर नहीं परन्तु
९ परमेश्वर पर है। तब मूसा ने हारून से कहा कि इसराएल के

संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है॥

१० और यों हुआ कि जब हारून इसराएल के संतान की सारी मंडली को कह रहा था तब उन्हों ने वन की ओर दृष्टि किई
११ और देखो परमेश्वर का बिभव मेघ में प्रगट हुआ। और परमेश्वर
१२ ने मूसा से कहा। कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना है उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

१३ और यों हुआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और छावनी को ढांप लिया और बिहान को सेना के आस पास ओस पड़ी।
१४ और जब ओस पड़के ऊपर गई तो देखो वन पर छोटी छोटी
१५ गोल वस्तु पाला के टुकड़े की नाईं भूमि पर पड़ी है। और इसराएल के संतानों ने देखके आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्हों ने न जाना कि वुह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह वुह रोटी जिसे परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दिया
१६ है। यह वुह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि हर एक उस में से अपने खाने के समान मनुष्य पीछे एक ऊमर एकट्ठे करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के
१७ लिये जो उस के तंबू में हैं लेओ। तब इसराएल के संतानों ने यों हीं किया और किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा
१८ किया। और जब हर एक ने अपने को दूसरे से तौला तो जिस ने बहुत एकट्ठा किया था कुछ अधिक न पाया और उस का जिस ने थोड़ा एकट्ठा किया था कुछ न घटा हर एक ने उन
१९ में से अपने खाने भर बटोरा। और मूसा ने उन से कहा कि
२० कोई उस में से बिहान लों रख न छोड़े। तथापि उन्हों ने मूसा की बात को न माना परन्तु कितनों ने बिहान लों उस

में से कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और बसाने
२१ लगा और मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ। और उन में से हर एक
ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य्य
की घाम पड़ी तब वुह पिघल गया॥

२२ और यों हुआ कि छठवें दिन उन्हों ने दूना भोजन बटोरा
जन पीछे दो ऊमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके
२३ मूसा को जनाया। तब उस ने उन्हें कहा कि यह वही है
जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र
बिश्राम है तुम्हें जो भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना
हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों
२४ यत्न से रक्खो। सो जैसा मूसा ने आज्ञा किई थी वैसा उन्हों
ने बिहान लों उसे रहने दिया और वुह न सड़ा और न उस
२५ में कीड़े पड़े। और मूसा ने कहा कि उसे आज खाओ क्योंकि
आज परमेश्वर का बिश्राम है आज तुम उसे खेत में न पाओगे।
२६ छः दिन लों उसे बटोरो परन्तु सातवां दिन बिश्राम है उस में
२७ कुछ न होगा। और ऐसा हुआ कि कोई कोई उन लोगों में से
२८ सातवें दिन बटोरने को गये और कुछ न पाया। तब परमेश्वर
ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी
२९ व्यवस्था को पालन न करोगे। देखो कि परमेश्वर ने तुम्हें
बिश्राम दिया इस लिये वुह तुम्हें छठवें दिन में दो दिन का
भोजन देता है हर एक तुम्में से अपने स्थान से बाहर न
३० । ३१ जावे। तब लोगों ने सातवें दिन बिश्राम किया। और
इसराएल के घराने ने उस का नाम मन्न रक्खा और वुह
धनिआं की नाईं स्वेत और उस का स्वाद मधु सहित टिकिया
की नाईं था॥

३२ और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा
किई है कि उस में से एक ऊमर भर अपनी पीढ़ियों के लिये

धर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें जो मैं ने तुम्हें बन
३३ में खिलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बाहर लाया। और
मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और एक ऊमर मन्न
उस में भर और उसे परमेश्वर के आगे रख छोड़ जिसतें वुह
३४ तुम्हारी पीढ़ियों के लिये धरा जाय। सो जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई थी वैसा हारून ने साची के आगे उसे
३५ धर रक्खा। और इसराएल के संतान चालीस बरस जब लों
कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों कि वे कनआन
३६ की भूमि के सिवाने में न आये मन्न खाते रहे। अब एक
ऊमर ईफा का दसवां भाग है॥

सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपने यात्रों
के लिये परमेश्वर की आज्ञा के समान सीन के बन से यात्रा
किई और रफ़ीदीम में डेरा किया और लोगों के पीने को पानी
२ न था। सो लोग मूसा से झगड़ने लगे और कहा कि हमें
पानी दे कि पीयें तब मूसा ने उन्हें कहा कि मुझ से क्यों
३ झगड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो। और लोग
पानी के पियासे थे तब वुह लोग मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा
कि तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे
लड़कों को और हमारे पशुन को पियास से मारे॥

४ और मूसा ने पुकारके परमेश्वर से कहा कि मैं इन लोगों से
५ क्या करूं वे मुझ पर पत्थरवाह करने को सिद्ध हैं। और
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे जा और इसराएल
के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी छड़ी
जिस्से तू ने नील नदी को मारा था अपने हाथ में ले और
६ जा। देख मैं वहां होरेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूंगा

और तू उस पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि लोग पीयें और मूसा ने इसराएल के प्राचीनों की दृष्टि में
७ ऐसा ही किया । और इसराएल के संतानों के बिबाद के कारण और इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की परीक्षा करके कहा था कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उस ने उस स्थान का नाम मस्स: और मरीब: रक्खा ॥

८ तब अ़मालीक़ चढ़ आये और रफ़ीदीम में इसराएल से
९ लड़े । तब मूसा ने यहूसूअ़ से कहा कि हमारे लिये मनुष्य चुन और निकलकर अ़मालीक़ से लड़ कल मैं ईश्वर की छड़ी
१० अपने हाथ में लेके पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूंगा । सो जैसा मूसा ने उसे कहा था यहूसूअ़ ने वैसा किया और अ़मालीक़ से लड़ा मूसा हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर
११ चढ़े । और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाता था तब इसराएल जय पाता था और जब अपना हाथ लटका
१२ देता था तब अ़मालीक़ जय पाता था । और मूसा के हाथ भारी हो रहे थे तब उन्हों ने एक पत्थर लेके उस के नीचे रक्खा और वुह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक ओर और दूसरा दूसरी ओर उस के हाथों को संभाले रहे
१३ और उस के हाथ सूर्य्य के अस्त लों स्थिर रहे । और यहूसूअ़ ने अ़मालीक़ और उस के लोगों को खड्ग की धार से जीत लिया ।
१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यहूसूअ़ के कान में कह दे कि मैं अ़मालीक़ के स्मरण को स्वर्ग के नीचे से सर्बथा मिटा
१५ देऊंगा । और मूसा ने यज्ञबेदी बनाई और उस का नाम यह
१६ रक्खा कि परमेश्वर मेरी ध्वजा । और कहा कि परमेश्वर ने किरिया खाके कहा है कि मैं अ़मालीक़ के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लों लड़ता रहूंगा ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ जब मिदयान के याजक मूसा के ससुर यितरू ने यह सब सुना कि ईश्वर ने मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या
२ किया कि परमेश्वर इसराएल को मिस्र से बाहर लाया। तो यितरू मूसा के ससुरे ने सफूरः मूसा की पत्नी को उस के पीछे
३ कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया। और उस के दो बेटों को जिन में से एक का नाम गैरसुम इस लिये कि उस ने कहा
४ कि मैं परदेश में परदेशी हूं। और दूसरे का नाम इलिअज़र क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उस ने मुझे
५ फ़िरऊ़न के खड्ग से बचाया है। और मूसा का ससुर यितरू उस के पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया
६ जहां उस ने ईश्वर के पहाड़ पर डेरा किया था। और मूसा से कहा कि मैं तेरा ससुर यितरू तेरी पत्नी और उस के दो
७ पुत्र उस के संग तुझ पास आये हैं। तब मूसा अपने ससुर की भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और आपुस में एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में
८ आये। और सब जो परमेश्वर ने इसराएल के लिये फ़िरऊ़न और मिस्रियों से किया था उस समस्त कष्ट को जो मार्ग में उन पर पड़े थे और कि परमेश्वर ने उन्हें बचाया मूसा ने अपने ससुर
९ यितरू से बर्णन किया। और यितरू उस सब भलाई पर जिसे परमेश्वर ने इसराएल के लिये किया था कि उस ने उसे मिस्र के
१० हाथ से बचाया आनन्दित हुआ। और यितरू बोला कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ और फ़िरऊ़न के हाथ से बचाया जिस ने लोगों को मिस्रियों के बश से छुड़ाया।
११ अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि जिस बात में वुह अहंकार करते थे उस में वुह उन पर प्रबल

१२ हुआ। और मूसा का ससुर यितरू चढ़ावा और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और हारून और इसराएल के समस्त प्राचीन मूसा के ससुर के साथ रोटी खाने के लिये ईश्वर के आगे आये॥

१३ और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों खड़े
१४ रहे। जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वुह लोगों के लिये करता था देखा तब उस ने कहा कि यह तू लोगों से क्या करता है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब लोग बिहान से सांझ
१५ लों तेरे आगे खड़े हैं। तब मूसा ने अपने ससुर से कहा कि यह इस लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये मुझ पास
१६ आते हैं। जब उन में कुछ बिबाद होता है तब वे मेरे पास आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में न्याय करता हूं और मैं उन्हें ईश्वर की बिधि और उस की
१७ व्यवस्था से चिता देता हूं। तब मूसा के ससुर ने उस्से कहा
१८ कि तू अच्छा काम नहीं करता। तू निश्चय क्षीण हो जायगा तू और यह मंडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ
१९ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा। अब मेरा कहा मान मैं तुझे मंच दूंगा और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगों के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास उन
२० के बचन लाया कर। और तू ब्यवहार और ब्यवस्था की बातें उन्हें सिखा और वुह मार्ग जिस पर चलना और वुह काम
२१ जिसे करना उन्हें उचित है उन्हें बता। सो तू समस्त लोगों में से योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और सत्यबादी हों और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों
२२ और पचास पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर। कि हर समय में उन लोगों का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हर

एक बड़ा कार्य्य तुझ पास लावेंगे पर हर एक छोटे कार्य्य का बिचार वुह आप करेंगे यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे
२३ बोझ उठाने में तेरे साथी रहेंगे। यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे॥

२४ सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उस ने कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया सहस्रों का प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस
२५ दस का प्रधान। और वे हर समय में लोगों का न्याय करते
२६ थे कठिन कार्य्य मूसा पास लाते थे। परन्तु हर एक छोटी
२७ बात आप ही चुका लेते थे। फिर मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और वुह अपने देश को चला गया॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होके तीसरे
२ मास के उसी दिन सीना के बन में आये। और रफ़ीदीम से चलके सीना के बन में आये और बन में डेरा किया और
३ वहां इसराएल ने पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया। तब मूसा ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से बुलाया और कहा कि तू यअकूब के घराने को यों कहियो
४ और इसराएल के संतानों से यों बोलियो। कि तुम ने देखा कि मैं ने मिस्रियों से क्या किया और तुम्हें गिद्ध के डैनों पर
५ बैठाके तुम्हें अपने पास ले आया। और अब यदि मेरे शब्द को निश्चय मानोगे और मेरी बाचा को पालन करोगे तो तुम समस्त लोगों से बिशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी पृथिवी
६ मेरी है। और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक

पवित्र जाति होओगे ये वुह बातें हैं जो तू इसराएल के संतान से कहेगा ॥

७ तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उन के सन्मुख ये सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई
८ थीं कह सुनाईं । और सब लोगों ने एक साथ उत्तर देके कहा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो हम करेंगे और मूसा ने लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया ॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं अंधियारे मेघ में तुझ पास आता हूं कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनें और सदा लों तेरी प्रतीति करें और मूसा ने लोगों की बातें परमेश्वर
१० से कहीं । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र कर और उन के कपड़े धुलवा ।
११ और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों
१२ की दृष्टि में सीना के पहाड़ पर उतरेगा । और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो और कहियो कि आप से चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंट को न छूओ जो कोई
१३ पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय प्राण से मारा जायगा । कोई हाथ उसे न छूये नहीं तो वुह निश्चय पत्थरवाह किया जायगा अथवा बाण से मारा जायगा चाहे पशु चाहे मनुष्य हो जीता न बचेगा जब तुरही अबेर लों बजा करे तो ये पहाड़ पर चढ़ें ॥

१४ तब मूसा पहाड़ पर से लोगों के पास उतरा और लोगों
१५ को पवित्र किया और उन्हों ने अपने कपड़े धोये । और उस ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो स्त्रियों से अलग रहियो ॥

१६ और यों हुआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्ज्जने लगे और बिजलियां चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का अति बड़ा शब्द हुआ यहां लों कि सब लोग छावनी

१७ में थर्थरा उठे। और मूसा लोगों को तंबू के भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में
१८ जा खड़े हुए। और समस्त सीना पहाड़ धूआं से भर गया क्योंकि परमेश्वर लवर में होके उस पर उतरा और भट्ठी का सा
१९ धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़ अति कांप गया। और जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा और
२० ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया। और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी
२१ पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा लोगों को चिता ऐसा न हो कि वे मेड़ तोड़के परमेश्वर को देखने आवें और बहुतेरे उन में नाश
२२ हो जावें। और याजक भी जो परमेश्वर के पास आये हैं अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट
२३ करे। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोग सीना पहाड़ पर आ नहीं सक्के क्योंकि तू ने तो हमें चिता दिया है कि पहाड़
२४ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर ऊपर आ परन्तु याजक और लोग मेड़ तोड़के परमेश्वर पास
२५ ऊपर न आवें न होवे कि वुह उन पर चपेट करे। सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा॥

बीसवां पर्व्व।

१ और ईश्वर ने ये सब बातें यह कहते हुए कहीं॥

२ कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र की भूमि से बंधुआई
३ के घर से निकाल लाया मैं हूं। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा॥

४ तू अपने लिये खोदके किसी की मूर्त्ति और किसी बस्तु की

प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग पर और जो नीचे पृथिवी पर और जो
५ जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बना। तू उन को प्रणाम मत
कर और न उन की सेवा कर क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर
ज्वलित सर्व्वशक्तिमान हूं पितरों के अपराध का दण्ड उन के पुत्रों
को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लों
६ देवैया हूं। और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्यार करते हैं
और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं॥
७ परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत ले क्योंकि परमेश्वर
उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निष्पाप न ठहरावेगा॥
८ बिश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने के लिये स्मरण कर।
९ छः दिन लों तू परिश्रम कर और अपना समस्त कार्य्य कर।
१० परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है उस में
तू कुछ कार्य्य न करेगा न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा
दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों
११ के भीतर है। क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और
पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया और
सातवें दिन बिश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने बिश्राम दिन
को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया॥
१२ अपने पिता और अपनी माता का आदर कर जिसतें तेरी
वय उस भूमि पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिक
होवे॥
१३ हत्या मत कर॥
१४ परस्त्री गमन मत कर॥
१५ चोरी मत कर॥
१६ अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥
१७ अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की
स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल

और उस के गदहे और किसी वस्तु का जो तेरे परोसी की है लालच मत कर ॥

१८ और सब लोग गर्ज्जना और बिजली का चमकना और तुरही का शब्द और पर्बत से धूआं उठना देखते थे और जब लोगों १९ ने देखा तो हटे और दूर जा खड़े रहे। तब उन्हों ने मूसा से कहा कि तू ही हम से बोल और हम सुनें परन्तु ईश्वर २० हम से न बोले न हो कि हम मर जायें। तब मूसा ने लोगों से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर आया है कि तुम्हें परखे और जिसतें उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसतें तुम पाप न करो ॥

२१ तब लोग दूर खड़े रहे और मूसा उस गाढ़े अंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था ॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा कि मैं ने स्वर्ग से तुम्हारे संग २३ बातें किईं। तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर और सोने का २४ ईश्वर मत बनाओ अपने लिये उन्हें मत बनाओ। तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना और उस पर अपने चढ़ावे और अपनी कुशल की भेंटें अर्थात् अपनी भेड़ बकरी और अपनी गाय बैल चढ़ा हर स्थान में जहां अपना नाम प्रगट करूंगा २५ वहां मैं तुझ पास आऊंगा और तुझे आशीष दूंगा। और यदि तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञबेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर अपना हथियार उठावे तो २६ उसे अपवित्र करेगा। और तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे ॥